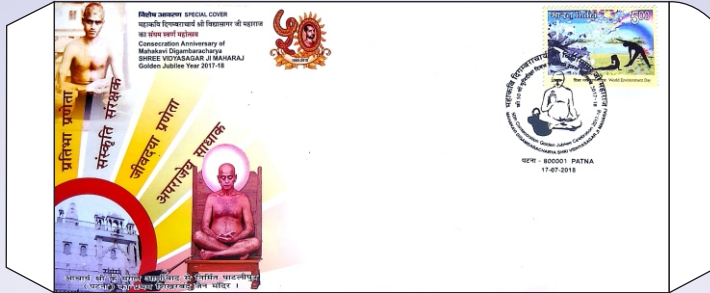


इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वरूप महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री दिगम्बर जैन समाज पटना के माध्यम से दिनांक 17-07-2018 को भारतीय डाक विभाग के उत्तर प्रदेश डाक परिमण्डल शाखा द्वारा 20/- रुपये में जारी किया गया।



संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि (जनवरी 2019 पौष शुक्ल)	नक्षत्र
16	बुधवार	दशमी	भरणी
17	गुरुवार	एकादशी	कृतिका
18	शुक्रवार	द्वादशी	रोहिणी
19	शनिवार	त्रयोदशी	मृगशिरा
20	रविवार	चतुर्दशी	आर्द्रा / पुनर्वसु
21	सोमवार	पूर्णिमा	पूष
22	मंगलवार	द्वितीया	आश्लेषा
(माघ कृष्ण)			
23	बुधवार	तृतीया	मघा
24	गुरुवार	चतुर्थी	पूर्वाफाल्गुनी
25	शुक्रवार	पंचमी	उत्तराफाल्गुनी
26	शनिवार	षष्ठी	हस्त
27	रविवार	सप्तमी	चित्रा
28	सोमवार	अष्टमी	स्वाति
29	मंगलवार	नवमी	विशाखा
30	बुधवार	दशमी	अनुराधा
31	गुरुवार	एकादशी	ज्येष्ठा
(फरवरी 2019)			
1	शुक्रवार	द्वादशी	मूल
2	शनिवार	त्रयोदशी	पूर्वाषाढ
3	रविवार	चतुर्दशी	उत्तराषाढ
4	सोमवार	अमावस	श्रवण
(माघ शुक्ल)			
5	मंगलवार	प्रतिपदा	धनिष्ठा दि/रा
6	बुधवार	द्वितीया	धनिष्ठा
7	गुरुवार	तृतीया	शतभिषा
8	शुक्रवार	तृतीया	पूर्वाभाद्रपद
9	शनिवार	चतुर्थी	उत्तराभाद्रपद
10	रविवार	पंचमी	रेवती
11	सोमवार	षष्ठी	अश्विनी
12	मंगलवार	सप्तमी	भरणी
13	बुधवार	अष्टमी	कृतिका
14	गुरुवार	नवमी	रोहिणी
15	शुक्रवार	दशमी	मृगशिरा
शुभ मुहूर्त			
दुखन प्रारंभ : जनवरी-19,25,27,30 फरवरी-10,11			
वाहन क्रय : जनवरी-17,18,20,21,25, फरवरी 7, 10,14,15			
मशीनरी प्रारंभ : जनवरी-27,30,31 फरवरी-6,10,11			
विद्यारंभ मुहूर्त : जनवरी-25 फरवरी-1,7,10,15			

तीर्थकर कल्याणक

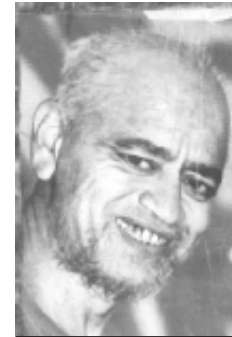
16 जनवरी :	भगवान शांतिनाथ - ज्ञान कल्याणक
17 जनवरी :	भगवान अजितनाथ - ज्ञान कल्याणक
20 जनवरी :	भगवान अभिनंदनाथ - ज्ञान कल्याणक
21 जनवरी :	भगवान धर्मनाथ - ज्ञान कल्याणक
26 जनवरी :	भगवान पद्मप्रभ - गर्भ कल्याणक
01 फरवरी :	भगवान शीतलनाथ - जन्म-तप कल्याणक
03 फरवरी :	भगवान आदिनाथ - मोक्ष कल्याणक
04 फरवरी :	भगवान श्रेयासनाथ - ज्ञान कल्याणक
06 फरवरी :	भगवान वासुपुत्र - ज्ञान कल्याणक
09 फरवरी :	भगवान विमलनाथ - जन्म-तप कल्याणक
10 फरवरी :	भगवान विमलनाथ - ज्ञान कल्याणक
14 फरवरी :	भगवान अजितनाथ - तप कल्याणक
15 फरवरी :	भगवान अजितनाथ - जन्म कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

18 जनवरी :	रोहिणी
20 जनवरी :	षोडशकारण व्रत प्रारंभ
21 जनवरी :	सोलह दिवसीय शुक्ल पक्ष पूर्ण
05 फरवरी :	लब्धि विधान व्रत प्रारंभ
09 फरवरी :	लब्धि विधान व्रत पूर्ण
09 फरवरी :	दशलक्षण व्रत प्रारंभ
10 फरवरी :	पुष्पांजलि व्रत प्रारंभ
14 फरवरी :	पुष्पांजलि व्रत पूर्ण
14 फरवरी :	रोहिणी व्रत

सर्वार्थ सिद्धि

16 जनवरी :	14/13 बजे से 31/13 बजे तक ।
21 जनवरी :	07/13 बजे से 26/28 बजे तक ।
22 जनवरी :	07/13 बजे से 23/32 बजे तक ।
30 जनवरी :	07/11 बजे से 16/41 बजे तक ।
03 फरवरी :	07/09 बजे से 26/56 बजे तक ।
04 फरवरी :	07/09 बजे से 30/02 बजे तक ।
04 फरवरी :	07/09 बजे से 30/02 बजे तक ।
10 फरवरी :	19/38 बजे से 31/05 बजे तक ।
12 फरवरी :	22/11 बजे से 31/04 बजे तक ।
13 फरवरी :	07/04 बजे से 31/03 बजे तक ।



संस्कार सागर

• वर्ष : 20 • अंक : 237 • जनवरी 2019

• वीर नि.संवत् 2545 • विक्रम सं. 2074 • शक सं. 1939

लेख

- आचार्य विद्यासागर जी के चिन्तन में सम्यक्त्वाचरणचारित्र और स्वरूपाचरणचारित्र 08
- सीमेन्ट से मूर्ति बनाना क्या आगमोक्त है 10
- सहनशीतला की प्रतिमूर्ति-मुनि धीर सागर जी 13
- विटामिन चिकित्सा व विटामिन डी का शरीर में महत्व 15
- दिगम्बर जैन साधु का साधना पक्ष 17
- नववर्ष में नया संदेश 35
- आचार्य विद्यासागर जी के चिन्तन में नारी का गौरव 41
- भूल सुधार 46
- नवागढ़ (नंदपुर) की पुरा सम्पदा और मांगलिक प्रतीक 48
- भव्य मुनि दीक्षा महोत्सव दयोदय गौशाला ललितपुर 51
- अध्यात्म शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज द्वारा अब तक दी हुई 426 दीक्षाएं 52
- दीक्षा और महादान 54
- जैन व्यक्तित्व दानवीर जैन राजा भामा शाह 56

बाल कहानी

- भगवान ने बचाया 60

कविता

- एकता के गीत 09
- श्मशान 28
- नववर्ष 40
- दर्शन को तरसते हैं 45
- संस्कार 60

कहानी

- कसक 38

नियमित स्तंभ

- पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 12
- चलो देखें यात्रा : 16 • आगम दर्शन : 25 • पुराण प्रेरणा : 27 • माथा पच्ची : 27
- कैरियर गाइड : 28 • दुनिया भर की बातें : 29 • इसे भी जानिये : 33 • दिशा बोध : 34
- आओसीखें : जैन न्याय : 36 • डाकटिकटों पर जैन इतिहास : 56 • हमारे गौरव : 58 • हास्य तरंग : 59
- बाल संस्कार डेस्क : 60 • संस्कार गीत व बाल कविता : 61 • समाचार : 62

प्रतियोगिताएं

: अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा : 65 : वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री
विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर-89895 05108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़-94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर-9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर-95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस-9575634441
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली-9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली-94128 89449
ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर-8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर-97938 21108
अभिनदन सांधेलीय, पाटन-9425863244
डॉ. पंकज जैन, भोपाल-9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, सादूमल-9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर - 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर-9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

* आंतरिक सज्जा *
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

- लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
- कथा-साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होते हैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
- पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

• श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर-10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी-1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते
की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर
सहयोग करें। बकाया राशि में त्रुटि हो
तो सुधार हेतु हमें सूचित करें।

सदस्यता शुल्क
-आजीवन : **2100/-** (15 साल)
परम संरक्षक : **15000/-**

अपनेशहर के
• स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (संस्कार सागर)
खाता क्र. 63000704338 (IFSC: SBIN0030463)
• भारतीय स्टेट बैंक (ब्र. जिनेश मलैया)
खाता क्र. 30682289751 (IFSC: SBIN0011763)
• ओरिएन्टल बैंक ऑफ कामर्स
खाता क्र. 07882151004198 (IFSC: ORBC0100788)
• आईडीबीआई बैंक (श्री दिगंबर जैन युवक संघ)
खाता क्र. 155104000037022
• आईसीआईसीआई बैंक (श्री दिगंबर जैन युवक संघ)
खाता क्र. 004105013575 (IFSC: ICIC0000041)
में भी अपनेपूर्ण पतेसहित राशि जमा कर
हमारे कार्यालय को सूचित कर सकते हैं।

**कार्यालय
संस्कार सागर**
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर-10
फोन नं. : 0731-2571851, 4003506
मो. : 89895-05108, 8717924109
website : www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

• सम्पादक महोदय,
संस्कार सागर का दिसम्बर
अंक 2018 का देखा
कहानी ऐसा क्या होता है

**पाती
पाठकों
की....**



देखा एलक सिद्धांत सागर जी की कहानी
सचमुच में पाठक को जिज्ञासु बना देती
है। समाज और परिवार की समस्याओं
उठाकर उनके समाधान तर्क संगत प्रस्तुत
किया जाता है यथार्थतः यह समाज
सुधार का एक प्रभावी प्रस्तुती करण है
कहानियाँ सोद्देश्य लिखी जाती हैं जिसमें
सृजनशीलता सार्थक होती है।
सकारात्मक सोच को विकसित करने का
एक आकर्षक प्रयास कहानी में निहित
होता है। एलक जी की मैंने ढेर सारी
कहानियाँ पढ़ी मुझे जिनमें अनेक तरह के
मोटिवेशन माने हैं।

ओमप्रकाश जैन (अहमदाबाद)

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर
का प्रत्येक अंक आकर्षक पठनीय
मननीय और संग्रहणीय है ये सभी अंक
हर आयु वर्ग के लिए रुचिकर
ज्ञानवर्धक है संस्कार सागर अनेक
विधाओं को एक साथ संजोए गागर में
सागर भरने जैसी है। इसका प्रत्येक
अंक हमारे पढ़ने की जिज्ञासा को शांत

करता है। और नये नये
विषयों पर लिखने के लिए
प्रेरणा प्रदान करता है।
अनेक युवा और नवोदित
लेखकों की लेखन प्रतिभा

को मुखरता पूर्वक अभिव्यक्त करता है।
सुरेश जैन (आई.ए.एस) भोपाल

• सम्पादक महोदय, विगत वर्ष 5
राज्यों की विधान सभाओं के चुनाव हुए।
इस चुनाव में जिस तरह की व्यक्ति
छींटाकशी फूहड़ भाषा और बेलाग
आरोप उछाले जा रहे थे। इससे
लोकतंत्र शर्मिदा हुआ है। दरअसल
स्वतंत्रता के उपरान्त 1951 से अब
तक चुनाव होते रहे हैं किन्तु चुनावों के
नेताओं की भाषा का स्तर नीचे की
ओर जाता नजर आता है। इसका
कारण है कि हमारी शिक्षा में नैतिक
शिक्षा और संस्कारों का अभाव भी
इसका प्रमुख कारण है। स्वयं पार्टियों
को यह स्थिति बदलना होगी किन्तु
धार्मिक साम्प्रदायिक उन्माद फैलाने
वालों पर चुनाव आयोग को ही सिंकजा
कसना होगा। बड़बोले नेताओं पर भी
असभ्य भाषा प्रयोग को रोकना होगा।

अंशुल पारासर (लटेरी)

भक्ति तरंग (सयानी बुद्धि) कौन सयानी



चेतन यह बुद्धि कौन सयानी, कही सुगुरु हित सीखन मानी
कठिन काकताली ज्यों पायौ, नरभव सुकुल श्रवणु जिनवानी
भूमि न होत चाँदनी की ज्यों, त्यों नहिं धनी ज्ञेय को ज्ञानी
वस्तुरूप यों तू यों ही शठ, हटकर परकत सौंज विरानी
ज्ञानी होय अज्ञान राग-रूपकर, निज सहज स्वच्छता हानी
इन्द्रिय जड़ तन विषय अचेतन, तहां अनिष्ट इष्टता ठानी
चाहै सुख दुख ही अवगाहै, अब सुनि विधि जो है सुखदानी

अरे चेतन तेरी बुद्धि का यह कैसा सयानापन है ? कैसी चतुराई है कि तू सत्गुरु द्वारा दी गई तेरे हित की सीख-उपदेश को भी नहीं मानता ? उसके अनुसार आचरण नहीं करता। काकतालीय न्याय अर्थात् ऐसे कठिन संयोग से तू यह नर-भव और उसमें भी ऐसा अच्छा कुल पाया है। जिसमें जिनवाणी को सुनने का अवसर मिला है।

चन्द्रमा की ज्योति-चाँदनी जिस भूमि पर पड़ रही है वह भूमि चाँदनी की नहीं हो जाती है उसी प्रकार तू ज्ञानी यह विचारकर कि तेरे ज्ञान में झलक रहे ज्ञेयों का तू स्वामी नहीं है। वस्तु स्वरूप जैसा है आपको वैसा न मानकर तू पर के परिणाम को अपना मानने व उसको पकड़ने की क्रिया कर रहा है।

तू ज्ञानी होकर भी अज्ञान के कारण राग-द्वेष रूपी मैल के द्वारा अपनी आत्मा की निर्मलता की हानि कर रहा है और पौद्गलिक जड़-इन्द्रिय-विषय जो कि तेरे समान चेतन नहीं है, मैं इष्ट-अनिष्ट अभिप्राय जोड़ रहा है, स्थापित कर रहा है।

तू चाहता तो सुख है, परन्तु दुखों में डुबकी लगा रहा है, अब सुन कि सुख प्राप्त करने की विधि का तरीका क्या है ? दौलतराम कहते हैं कि तू अपने आप में अपने स्वरूप का चिन्तन कर, जिसके ध्यान करने से समता आती है, इससे तू समता के रस में सन जावेगा, ओत-प्रोत हो जावेगा, लीन हो जावेगा।



सत्ता के पार

किसी भी लोकतंत्र की जनता आत्म होती है और सत्ता या सरकार परिवर्तनीय शरीर के समान होती है सत्ता के दो रूप पाये जाते हैं एक तो बाह्य रूप होता है जो सदैव बदलते रहने से अनित्य क्षणभंगुर सत्ता होती है। इस पर अधिकार पाने की होड़ हर व्यक्ति में देखी जाती है। बाह्य सत्ता के मोह में व्यक्ति अपनी अंतरंग सत्ता पर दृष्टि पात नहीं कर पाता है भीतर की सत्ता पाने की चाहत रखने वाला कभी भी किसी कुर्सी या सिंहासन पर विराज मान होने की लालसा नहीं रखता है क्योंकि वह जानता है कि बाह्य सत्ता अनित्य अशरण और माया रूप है यह किसी की स्थायी कभी नहीं हुई है इस सत्ता के स्वामी सदैव बदलते रहे हैं राज्य सम्पदा सत्ता को पाने के लिये हिंसा युद्ध छल कपट होते ही रहे हैं। सत्ता पलटने के लिये भाई भाई के लहु का प्यासा हो जाता है पुत्र पिता और पिता पुत्र का हंता बन जाता है।

पिछले वर्ष नवम्बर और दिसम्बर माह में दो घटनायें हुई एक तो म.प्र. में 28 नवम्बर को म.प्र. में विधानसभा चुनाव के लिये मतदान हुआ तथा इसी म.प्र. चुनाव के तारतम्य में 11 दिसम्बर 2018 को मतगणना हुई। जिसमें कांग्रेस को 114 सीटों पर विजय प्राप्त हुई तथा 109 सीटों पर भारतीय जनता पार्टी की विजय प्राप्त हुई। 7 सीटों पर अन्य विजयी रहें 1 मुख्यमंत्री पद लोकप्रिय दावेदार श्रीमान माननीय शिवराज सिंह किस्ती किनारे से पहले डूब गई। इसे भाग्य की विडम्बना ही कहा जायेगा कि अपने ने ही बागीबन कर शिवराज सिंह की नाव डुबोने में कोई कसर नहीं छोड़ी सत्ता का लोलुपी लोग ही बागी बन जाते हैं प्राप्त मतों का प्रतिशत भाजपा का अधिक होने पर भी वे सत्ता से वंचित रह गये और वे शायद फिर से बाह्य सत्ता को प्राप्त करने में प्रयास रत हो गये हैं यही सत्ता परिग्रह का व्यामोह ही कहा जायेगा कि सौ सौ बार अपमान सहने के बाद भी व्यक्ति तमाशा घुसकर देखने वाले अपने आप को कर्मठ योगी कहते हैं। अब योगी कौन है इसे पहचानने की आवश्यकता है।

उ.प्र. के ललितपुर के समीप 10 किमी. दूर गौशाला प्रांगण में 28 नवम्बर को लगभग 4 बजे शाश्वत सत्ता की खोज में 10 युवाओं ने मुनि दीक्षा ग्रहण का संकल्प लेकर आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के चरण कमलों में अपना सर्मपण कर दिया और देखते ही देखते प्रशांत रूप दिग्गम्बर रूप धारण कर बैठे। अपरिग्रह बाद के पथ पर चलने का अनुभव बटोरने के लिये एक कदम आगे बढ़ाया। तब चिंतनशील लोग कह बैठे किये सभी साधक सत्ता पाने के लिये लालायित हैं परन्तु वे वह सत्ता नहीं जो चुनाव के बाद मिलती है। अपितु ये सभी शाश्वत निज की सत्ता पाने के लिये संघर्ष पथ को अपनाने के लिये कटिबद्ध हुये।

भगवान बाहुबली ने चक्रवर्ती भरत को चार युद्धों में हराकर विजयी मुद्रा में आने के बाद भी उन्होंने राज्य सत्ता को छोड़कर वैराग्य पथ अपनाया और उन्होंने घोषणा कर दी कि इस धरा का इस धरा पर सब धरा रह जायेगा मुट्ठी बाँधे आया है तू हाथ पसारे जायेगा। भगवान राम ने भी अपने पिता की आज्ञा मानकर सम्पूर्ण सत्ता को त्याग कर दिया सच यह है परम स्वकीय सत्ता बाह्य सत्ता के पार है।

आचार्य विद्यासागर जी के चिन्तन में सम्यक्त्वाचरणचारित्र और स्वरूपाचरणचारित्र

✽ एक सिद्धांतसागर जी महाराज ✽

स्वरूपाचरणचारित्र जैन सिद्धान्त एवं आगम में बहुत कम उल्लेखित है एकमात्र पंचाध्यायी ऐसा ग्रन्थ है जिसके 764 वे. श्लोक में स्वरूपाचरण शब्द का प्रयोग किया है तथा स्वरूपाचरण शब्द का मूलगम (वि. 1650 ई. 1593) संस्कृत श्लोकों में रचित यह ग्रन्थ अधूरा ही है इसके दो ही अध्याय उपलब्ध होते हैं वे अपने ग्रन्थ को पूर्ण नहीं कर पाये और स्वर्ग सिधार गये। पहिले अध्याय में 768 तथा दूसरे में 1145 श्लोक हैं इस ग्रंथ के आधार पर स्वरूपाचरण चारित्र को मान्य करने पर आगम की कई व्याख्यायें बाधित हो जाती हैं। आचार्य कुन्द कुन्द देव ने अपने चारित्र पाहुड़ ग्रन्थ में सम्यक्त्वाचरण चारित्र और संयमाचरण चारित्र दो ही चारित्रों का भेद किया है उन्होंने कहीं स्वरूपाचरण चारित्र का उल्लेख नहीं किया है। किन्तु पं. जयचन्द्र छावड़ा जी ने चारित्र पाहुड़ की 8वीं गाथा पर वचनिका करते हुए सम्यक्त्वाचरण चारित्र के स्थान पर स्वरूपाचरण चारित्र शब्द का प्रयोग किया है। यह यहाँ द्रष्टव्य है।

तं चेव गुणविसुद्धं जिण सम्मत्तं मुमुक्खठाणाय।

जं चरइ णाणजुत्तं पढमं सम्मत्तचरण चारित्र ॥४॥

निः शंकित आदि गुणों से विशुद्ध अरहन्त जिनदेव की श्रद्धा होकर यथार्थ ज्ञान सहित आचरण करे सो प्रथम स्वरूपाचरण चारित्र है। सो यह मोक्षमार्ग में कारण है।

तथा इसी तरह पं. फूलचन्द्र जी सिद्धान्त शास्त्री ने धवला की 1/1.1.10/165/1 अनन्तानुबन्धी के कार्य, सम्यक्त्व और चारित्र को घातना वीरसेनाचार्य ने लिखा है किन्तु पं. जी ने अपनी ओर से स्वरूपाचरण शब्द का प्रयोग करते हुए यह लिखा है कि अनन्तानुबन्धी स्वरूपाचरण चारित्र का घात करती है किन्तु दूसरे संस्करणों में स्वरूपाचरण शब्द को पुनः संशोधित कर दिया है। 20वीं शताब्दी की पण्डित परम्परा ने पंचाध्यायी का अन्धानुकरण करते हुए अनन्तानुबन्धी को स्वरूपाचरण चारित्र का घात करना माना है। इसी आधार पर चतुर्थ गुणस्थान में स्वरूपाचरण चारित्र का अस्तित्व सिद्ध किया है। जबकि पण्डित दौलतराम जी ने अपने छहढाला ग्रन्थ में 6वीं ढाल में संयमाचरण चारित्र का वर्णन करने के उपरान्त स्वरूपाचरण चारित्र का सूत्रपात किया है। और कहा है- **यो है सकल संयमचरित सुनिये स्वरूपाचरण अब** इससे यह स्पष्ट होता है पण्डित दौलतराम आदि विद्वानों के समक्ष आचार्य कुन्दकुन्द देव का भाव स्पष्ट नहीं हो पाया। यदि उनका भाव स्पष्ट होता तो वे भी स्वरूपाचरण चारित्र और सम्यक्त्वाचरण चारित्र को एक ही मानते। जैसे कि आचार्य श्रुतसागर जी ने सम्यक्त्वाचरण चारित्र को दर्शनाचार और संयमाचरण चारित्र को चारित्राचार घोषित किया है। पूज्य आचार्य विद्यासागर जी महाराज जी स्वरूपाचरण चारित्र की व्युत्पत्ति करते हुए कहते हैं कि

स्वरूपाचरणं स्वरूपाचरण अर्थात् स्वरूप के लिए आचरण करने का नाम स्वरूपाचरण है। स्वरूपे चरणं स्वरूपाचरणं इस व्याख्या को आचार्य जी ने अलग ही सन्दर्भ में देखा है। स्वरूपाचरणचारित्र तो वीतराग चारित्र अविनाभूत होता है।

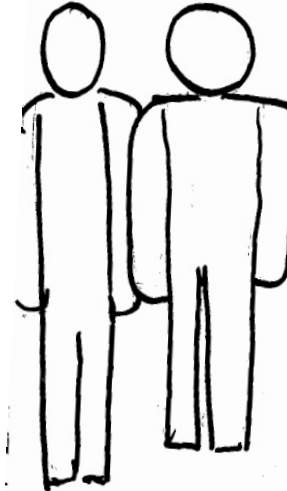
स्वरूपाचरण चारित्र और सम्यक्त्वाचरण चारित्र को एक स्वीकार करने वाले विद्वान् आचार्य कुन्दकुन्द देव को अवश्य स्वीकार करते हैं किन्तु स्वरूपाचरण चारित्र को आत्मानुभूति से जोड़कर चतुर्थ गुणस्थान में स्वरूपाचरण चारित्र को सिद्ध करना या स्वीकार करना आचार्य कुन्दकुन्द देव के भाव से विपरीत जाना है। क्योंकि आचार्य कुन्दकुन्द देव ने कहीं भी स्वरूपाचरण चारित्र को अपनी गाथाओं में उल्लेखित नहीं किया है। यदि सम्यक्त्वाचरण चारित्र को स्वरूपाचरण चारित्र मान्य किया जाता है और यदि स्वरूपाचरण चारित्र वीतराग चारित्र से अविनाभूत है तो यह चारित्र संयमाचरण चारित्र के बाद ही जो वीतराग चारित्र से अविनाभूत सम्बन्ध रखता है वह चारित्र निर्विकल्प समाधि अवस्था में शुद्धोपयोग चारित्र की व्याप्ति मानी जायेगी तो यह चारित्र संयम अवस्था में ही होगा, असंयम अवस्था में किसी भी प्रकार से नहीं हो सकता है।

फिर भी यदि कोई स्वरूपाचरण चारित्र का अस्तित्व चतुर्थ गुणस्थान में मानता है तो वह आगम का अपलाप ही करता है।

कविता

एकता के गीत

अलगाव के नहीं गीत एकता के गाना चाहिए



अलगाव के नहीं गीत एकता के गाना चाहिए।
फिरका परस्ती दोस्तों जड़ से मिटाना चाहिए।
क्रूरता की तीरगी में ढक चुकी है मनुजता।
अब तो दुनिया में इनायत का सूरज उगाना चाहिए।
फासले सब छोड़कर इक पुल बनायें नया।
आदमी को आदमी से अब मिलाना चाहिए।
दो जरबों के रास्ते अब न चुन पाये कोई।
इस जमीं पर दोस्तों जन्नत बनाना चाहिए।
जिस्म पर कल से जमीं है नफरतों की गर्द गहरी।
प्रेम दरिया में यारो अब नहाना चाहिए।

सीमेन्ट से मूर्ति बनाना क्या आगमोक्त है

✽ पं. उदयचन्द्र जैन (प्रतिष्ठाचार्य) सागर ✽

आचार्यों ने श्रावकों को प्रतिमा और जिन मंदिर बनवाने का निर्देश देते हुए कहा है कि धन का लाभ प्रतिमा निर्माण कराने में है। यथा-

अतो महाभाग्यवतां धन सार्थक्य हेतवे।

नान्योपायो गृहस्थानां चैत्य चैत्यालयाद्विना ॥22॥ प्रतिष्ठा पाठ

महाभाग्य गृहस्थ के धनलाभ का सार्थक हेतु जिन बिम्ब और चैत्यालय निर्माण बिना अन्य उपाय नहीं है। इसी प्रकार प्रतिमा निर्माण का निर्देश आचार्य वसुनन्दि श्रावकाचार, सागारधर्माभूत अध्याय 1 श्लोक 35, धर्मसंग्रह श्रावकाचार अध्याय 6 श्लोक 80, प्रश्नोत्तर श्रावकाचार सर्ग 20 श्लोक 186-193, धर्मोपदेश पीयूष वर्ष श्रावकाचार अध्याय 4 श्लोक 30-32 में विस्तार से वर्णन है। प्रतिमा निर्माण गृहस्थों के लिए कल्याणकारी है। अतः उनके निर्माण में सावधानी रखना चाहिए। प्रतिमा निर्माण करते समय प्रतिमा के आकार के नाप का ध्यान रखना जहाँ महत्वपूर्ण कहा है, वहीं प्रतिमा की धातु, पाषाण आदि का भी ध्यान आवश्यक माना है।

मणि कणय रुप्यय पित्तल मुत्ताहलो वलाईहिं।

पडिमालक्खणविहिणा जिणाइ पडिमा घणविज्जा ॥39॥ वसुनन्दि श्रावकाचार

वसुनन्दि श्रावकाचार में मणि, रत्न, स्वर्ण, रजत, पीतल, मुक्ताफल और पाषाण की प्रतिमाएँ निर्मित किये जाने का विधान है।

स्वर्णरत्नमणिरौप्यनिर्मितं स्फाटिकामलशिलाभवं तथा।

उत्थितांबुजमहासनांगितं जैनबिंबमिह शस्यते बुधैः ॥69॥ प्रतिष्ठापाठ

आ. जयसेन ने मणि, रत्न, स्वर्ण, रजत, स्फटिक की प्रतिमाएँ प्रशस्त बतायीं हैं।

आचार्य जयसेन स्वामी का प्रतिष्ठा पाठ सर्वमान्य एवं प्रमाणीक माना गया है। इसमें प्रतिमा निर्माण के लिए जो सम्यक् निर्देश दिए हैं, वे अवश्य विचारणीय हैं। आचार्यों ने जहाँ सद्धातु स्वर्ण, रजत, ताम्र आदि एवं श्रेष्ठ पाषाण से प्रतिमा निर्माण का निर्देश दिया गया है, वहीं मिट्टी, काष्ठ एवं चित्र प्रतिमा का निषेध भी किया है।

मानाधिकपरीवाररहिता नैव पूज्यते।

काष्ठलेपायसां भूता प्रतिमा साम्प्रतं न हि ॥105॥ उमास्वामी श्रावकाचार

ग्यारह अंगुल से अधिक प्रमाण वाली प्रतिमा आठ प्रातिहार्य आदि रहित नहीं पूजना चाहिए। तथा आज के समय में काष्ठ, लेप और लोहे की प्रतिमा नहीं बनवाना चाहिए।

न मृत्तिका काष्ठ विलेपनादि जातं जिनेन्द्रैः प्रतिपूज्य मुक्तं ॥183॥ प्रतिष्ठा पाठ

मिट्टी काष्ठ एवं चित्र आदि का जिनबिम्ब पूज्य नहीं कहा है। जिन प्रतिमा श्रेष्ठ धातु या पाषाण की ठोस ही होती है। मिट्टी काष्ठ जैसे भंगुर द्रव्यों से जिन प्रतिमाएँ निर्मित किए जाने की विचार धारा को जैन परम्परा में कभी स्थाई मान्यता प्राप्त नहीं हो सकी है। धातु या पाषाण प्रतिमाएँ निर्मित किया जाना ही सर्वाधिक एवं सर्वमान्य रही हैं। इसी कारण मूर्ति निर्माण के

पहले शिला शुद्धि का विधान किया गया है।

प्रतिमा निर्माण के लिए शिला शुद्धि-

प्रतिमा निर्माण के लिये शिला के अन्वेषण और उसके गुण दोषों के विषय में प्राचीन ग्रंथों में विवेचन मिलता है। पं. आशाधर ने लिखा है कि जिन मंदिर के निर्माण का कार्य पूरा हो जावे अथवा पूरा होने को हो तो प्रतिमा के लिये शिला का अन्वेषण करने शुभ लग्न और शुभशकुन में इष्ट शिल्पी के साथ जाना चाहिये। वसुनन्दि ने वेत, रक्त, श्याम, मिश्र, पाराक्त, मुद्ग, कपोत, पद्म, मांजिष्ठ और हरित वर्ण की शिला को प्रतिमा निर्माण के लिये उत्तम बताया है। वह शिला कठिन, शीतल, स्निग्ध, सुस्वादु, सुस्वर, दृढ़ सुगंधयुक्त, तेजस्विनी और मनोज्ञ होना चाहिए। बिन्दु और रेखाओं वाली शिला प्रतिमा निर्माण के लिये वर्ज्य कही गयी है। उसी प्रकार मृदु, विवर्ण, दुर्गंधयुक्त, लघु, रूक्ष, धूमल, और निःशब्द शिलायें की अयोग्य ठहरायी गयी हैं।

बीनाबारह और पेटण की प्रतिमाएँ अपवाद हो सकते हैं, उन्हें प्रमाण नहीं माना जा सकता है। यह प्रतिमाएँ रेत की नहीं अपितु रेतीलें पत्थर की हैं। जैनागम में श्रेष्ठता को ही महत्व दिया गया है। जिससे प्रतिमाओं का अस्तित्व दीर्घकालिक होता है। विकृतियाँ, विसंगतियाँ जन्म नहीं ले पाती हैं। इसी से हजारों हजार वर्षों से जैन संस्कृति जीवन्त है, और रहेगी भी। वर्तमान में जहाँ भी भूगर्भ से मूर्तियाँ प्राप्त होती हैं। उसमें अधिकतम मूर्तियाँ जैन ही होती हैं। इससे जैन धर्म संस्कृति के सनातन होने का प्रमाण प्राप्त होते हैं। जो मात्र धातु और पाषाण की प्रतिमा के कारण ही है।

आज कुछ नया करने की होड़ में हम अन्य लोगों के कार्यों का बिना विचारे, बिना आगमाज्ञा के यश लाभ के लिए अन्धानुकरण कर रहे हैं, जो जैन संस्कृति को घातक होगा। सुनने में आ रहा है कि एक विशालकाय सीमेन्ट की प्रतिमा का निर्माण होने जा रहा है। पता नहीं इसका उद्देश्य क्या है, जो भंगुर द्रव्यों से प्रतिमा बनाई जा रही है। कालान्तर में यह प्रतिमा जैन संस्कृति के अपकर्षण का माध्यम बनेगी। आज भी गोमटेश्वर बाहुबली की तरह ही अन्य स्थानों पर विशाल काय प्रतिमाओं का निर्माण चल रहा है, जो श्रेष्ठ है।

जैन समाज जहाँ आर्थिक रूप से समृद्ध है वहीं, बुद्धि, विवेक की सम्पदा की भी धनी है। इस समाज ने हमेशा ठोस, श्रेष्ठ एवं स्थाई कार्य किए हैं। जिसे युगों-युगों तक जाना जाता रहा है। जिससे जैनधर्म के यश की ध्वजा लहराती ही रही है। सीमेन्ट की प्रतिमा निर्माण आगम सम्मत तो है ही नहीं जिनधर्म की अप्रभावना करने वाली भी है। यदि विशाल प्रतिमा बनवाने का भाव है तो धातु या पाषाण की प्रतिमा ही बनवाएँ जिससे जिनधर्म के साथ हमारा भी यश बढ़ेगा।

इस प्रकार की प्रतिमा बनवाने से आगे भी सीमेन्ट, प्लास्टिक, काँच, मिट्टी, काष्ठ, चित्र, लेप एवं अन्य सामान्य द्रव्य से प्रतिमा बनवाने की परम्परा प्रारंभ हो जायेगी जो जैन संस्कृति का हनन करेगी।

साधु, विद्वान एवं समाज के श्रेष्ठ वर्ग से निवेदन है कि ऐसे कार्यों का प्रेरणा तथा समर्थन न करें।



अंयम स्वास्थ्य योग

बीमारी का कारण
विरुद्ध आहार

आहार की विपरीतता दोषों को उत्पन्न करती है। जिससे छोटे-बड़े रोग शरीर में पनपने लगते हैं आहार की विरुद्धता से व्यक्ति स्वयं बीमारियों को बुला लेता है। वे विरुद्ध आहार निम्न है।

देश विरुद्ध- सूखे या तीखे पदार्थों का सेवन सूखे स्थान व दलदली जगह में चिकनाई युक्त भोजन करना।

काल विरुद्ध- सर्दी में सूखी और ठंडी वस्तुएँ खाना और गर्मी के दिनों में तीखे भोजन का सेवन।

अग्नि विरुद्ध- जठराग्नि मध्यम हो और व्यक्ति गरिष्ठ भोजन खाए तो इस अग्नि विरुद्ध आहार कहा जाता है।

मात्रा विरुद्ध- यदि घी और शहद बराबर मात्रा में लिया जाए तो ये हानिकारक है।

क्रम विरुद्ध- व्यक्ति भोजन का सेवन पेट साफ होने से पहले करे या जब उसे भूख न लगी हो अथवा जब अधिक भूख लगने, से भूख खत्म हो गई हो।

परिहार विरुद्ध- दूध व उससे निर्मित पदार्थ जिन्हें शरीर पचा नहीं पाता और डॉक्टर भी इन्हें लेने के लिए मना करते हैं।

संस्कार विरुद्ध- कई प्रकार के भोजन को अनुचित ढंग से पकाया जाए तो वह विष समान हो जाता है। वही शहद गर्म करने से विषाक्त हो जाता है।

कोष्ठ विरुद्ध- कोष्ठबद्धता रोगी को थोड़ी मात्रा में कम दल बनाने वाला भोजन देना या शिथिल गुदा वाले व्यक्ति को गरिष्ठ व ज्यादा मल बनाने वाला भोजन देना कोष्ठ विरुद्ध आहार है।

उपचार विरुद्ध- किसी उपचार विधि में अपथ्य का सेवन करना जैसे घी खाने के बाद ठंडी चीजें खाना।

सात्म्य विरुद्ध- नमकीन भोजन खाने की प्रवृत्ति रखने वाले मनुष्य को मीठे रसीले पदार्थ खाने पड़े।

दोष विरुद्ध- भोजन का प्रयोग करना जो व्यक्ति के दोष को बढ़ाने वाला हो और उनकी प्रकृति के विरुद्ध हो।

वीर्य विरुद्ध- जिन चीजों की तासीर गर्म होती है उन्हें ठण्डी तासीर की चीजों के साथ लेना।

अवस्था विरुद्ध- थकावट के बाद वात बढ़ाने वाला भोजन लेना अवस्था विरुद्ध आहार है।

पाक विरुद्ध- भोजन पकाने वाली अग्नि कम ईंधन से बनाई जाए जिससे भोजन अधपका या जल जाये।

संयोग विरुद्ध- दूध के साथ अम्लीय पदार्थों का सेवन।

हृदय विरुद्ध- ऐसा भोजन जो रुचिकर न लगे उसे खाना।

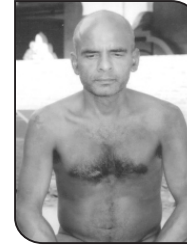
समपद विरुद्ध- विशुद्ध भोजन खाना समपात विरुद्ध आहार है। इससे पौष्टिकता विलुप्त हो जाती है।

विधि विरुद्ध- सार्वजनिक स्थान पर भोजन करना।

इन सब विरुद्ध आहारों से यदि बच करके अपनी भोजन पद्धति कोई भी व्यक्ति सुनिश्चित करता है तो वह अपने स्वास्थ्य के लिए बिना दवा लिए ही उत्तम बना लेता है।

सहनशीलता की प्रतिमूर्ति-मुनि धीर सागर जी

* ब्र. सुनीता जैन (इन्दौर) *



इन्दौर गौरव समाधिस्थ प.पू. मुनि श्री धीर सागर के द्वितीय समाधि दिवस के अवसर पर उनके चरणों में शत शत नमन।

छोटी ग्वाल टोली इन्दौर में जन्में राजकुमार (राजू) में ज्वेरी बाग छोटी नसिया के श्री पार्श्वनाथ भगवान के समान ही सहनशीलता थी।

भगवान पार्श्वनाथ के प्रतिदिन दर्शन करने से उनमें भी भगवान के समान सहनशीलता आ गई थी। बचपन में बारिस में गीली मिट्टी में

लोहे का कीला फेककर गाढ़ने का खेल खेलते थे। एक दिन वह कीला मिट्टी में न गढ़कर उनके पैर के पंजे के आरपार हो गया। बहुत तकलीफ होने के बाद भी उनकी आँखों से एक भी आँसू नहीं निकला। घर में रहते हुए घंटों-घंटों हाथों पर काटते हुए मच्छरों को नहीं भगाते थे। मानो दीक्षा के बाद होने वाले उपसर्ग को सहन करने का अभ्यास कर रहे थे। दीक्षा के बाद कुण्डलपुर में मधुमक्खियों द्वारा उपसर्ग को सहना इसी बात का प्रमाण है। मुणें जब मालूम हुआ कि मुनि धीर सागर महाराज जी पर बहुत बड़ा उपसर्ग हुआ, तो मैं तुरन्त कुण्डलपुर गई। कुण्डलपुर जाने के बाद दूधवाले भैया ने (जो चौंको में दूध देता था) बताया कि आचार्य श्री जी सहित महाराज जी आहार चर्या पर निकल गये थे। किन्तु धीरसागर महाराज जी उपवास होने के कारण तालाब के पास वाले मंदिर में दर्शन कर रहे थे। तभी किसी कारणवश मधुमक्खियों का छत्ता टूट गया। छत्ता टूटते ही हजारों की संख्या में मधुमक्खियों महाराज जी के शरीर से चिपक गई (सिर से लेकर पांव तक) और सभी श्रावक डरकर अपने-अपने कमरे में चले गये। उसी समय वह दूधवाला आ गया। और श्रावकों पर नाराज होने लगा कि आप लोग कैसे श्रावक हो जो महाराज जी पर उपसर्ग होते हुए भी कुछ नहीं कर रहे। तब कुछ श्रावक हिम्मत करके आए। और तब कुछ श्रावक और वह भैया ने महाराज जी से निवेदन कि महाराज जी आप उठ जाइयें। जब धीर सागर महाराज जी नहीं उठें, तब स्टोर से एक कम्बल लेकर आए और महाराज जी को ओढ़ा दिया। फिर पद्मासन में बैठे हुए महाराज जी को कुछ लोग उठाकर स्टोर में ले गये। और वहाँ पर मधुमक्खियों को हटाने लगे। दूधवाले भैया ने मुझे बताया कि उस समय बहुत वेदना हो रही थी। उस वेदना को सहते हुए महाराज जी बहुत जोर जोर से णमोकार मंत्र का जाप कर रहे थे। (प.पू. मुनि श्री आगम सागर जी बताया कि नाक में, कान में, मधुमक्खियों भर गई थी) तभी आचार्य श्री जी को मालूम हो गया। तब आहार से आने के बाद आचार्य श्री जी ने स्वयं अपने हाथों से 3:30

घंटे धीर सागर महाराज जी वैयावृत्ति की। मधुमक्खियों के एक-एक डंक को निकाला। मधुमक्खी के उपसर्ग के बाद एक दिन रात को बिचुने ने काट लिया। इनते उपसर्ग के बावजूद भी महाराज जी के चेहरे पर शिलन नहीं थी। सिंह की भांति अपनी चर्या का पालन कर रहे थे। कुण्डलपुर पहुंचकर मैंने महाराज जी से प्रश्न किया, कि आपके ऊपर जब इतना बड़ा उपसर्ग तब आपको कैसा महसूस हुआ। तब महाराज जी ने मुझे (तब मौन रहते थे) लिखकर बताया कि मैंने उस समय नरक की वेदना किया तो उस वेदना के आगे यह वेदना कुछ भी नहीं थी। मुझे आज भी उनके द्वारा कहे गये शब्द अंदर तक हिला देते हैं। इतनी सहनशीलता किसमें होती है। हम लोग तो एक मच्छर को सहन नहीं कर पाते हैं। इसी प्रकार तो एक मच्छर को सहन नहीं कर पाते हैं। इसी प्रकार सन् 2014 में नेमावर आते समय रास्ते में मधुमक्खियों का हमला हुआ तो सड़क पर ही बैठ गये थे। तब कुछ महाराज जी उनको उठा के लाए। आचार्य श्री ने कहा कि धीर सागर जी वहाँ आपको रूकना नहीं था। तो आचार्य श्री जी को धीर सागर महाराज जी ने का कि आचार्य श्री उपसर्ग आने पर उसका सहना चाहिए न कि भगना चाहिये। ऐसे थे हमारे गुरु इसी सहनशीलता के बल पर 3 जनवरी 2017 को हुई आसाध्य बीमारी से सामना करते हुए एक वीर के समान मौत का साक्षात् सामना करते हुए 10 जनवरी 2017 को गुना (म.प्र.) में सल्लेखना धारण कर समाधिमरण किया। समाधिमरण के दूसरे दिन जब प.पू. मुनि श्री समयसागर महाराज जी ने भरी समभा में कहा कि धीरसागर महाराज जी की बहुत ही उत्कृष्ट साधना थी। मेरी आँखों से आँसू वह रहे थे पर इसके साथ ही मुझे बहुत खुशी हुई कि मेरे गुरु का जीवन सार्थक हो गया। जिस उद्देश्य से संयम के मार्ग पर चले थे। उसमें सफल हो गये। अत्याधिक वेदना होने के बावजूद अंतिम क्षणों तक पूर्ण जाग्रत अवस्था में सभी धार्मिक क्रिया कर एक वीर का भांति अपनी मृत्यु को साक्षात् सामने देखते हुए ध्यान योग में अपने शरीर का त्याग किया।

अपने जीवन को सफल कर लिया। मेरे गुरु की यह सहनशीलता मुझे मेरे जीवन में बहुत संबल प्रदान करती है। शक्ति प्रदान करती है। मेरे गुरु आज वही है। परन्तु उनके द्वारा कहे गये एक-एक शब्द मुझे आज भी याद है। उनके बताये मार्ग पर चलकर गुरु चरण की धूल भी बन गई तो मेरा जीवन सार्थक हो जायेगा।

हमें रास्तों की जरूरत नहीं है।

हमें गुरु चरणों के निशा मिल गये।।

ऐसे धीर, वीर, सहनशीलता की मूर्ति समाधिस्थ प.पू. मुनि श्री धीर सागर महाराज के द्वितीय समाधि दिवसके पुनीतः अवसर पर गुरु चरणों में बार बार वंदन करती हूँ। नमन करती हूँ।

विटामिन चिकित्सा व विटामिन डी का शरीर में महत्व

*** जिनेंद्र कुमार जैन (गौरीनगर इन्दौर) ***

इस आधुनिक चिकित्सा पद्धति में विटामिन पर बहुत बल दिया जाता है। विटामिन वे तत्व हैं जो जीवन के लिए बहुत आवश्यक हैं जो कार्बोनिनक योगिग होते हैं जो शरीर के द्वारा स्वयं उत्पन्न नहीं किये जा सकते हैं मात्र प्राकृतिक स्रोत व खाद्य पदार्थों से ही लिये जा सकते हैं, अगर भोजन में न हो तो जीवन नहीं चल सकता है। विटामिनों को ए.बी.सी.डी.ई. आदि नामों से जाना जाता है। इन विटामिनों में विटामिन डी का शरीर में अत्याधिक महत्व है।

विटामिन डी की कमी से बिना मेहनत के थकान होती है, हड्डियों में दर्द, मांसपेशियों में कमजोरी, दिन में अधिक नींद आना, मोटापा बढ़ना, सिर में अधिक पसीना आना, बार-बार संक्रमण होना, फ्रेक्चर होना, हड्डियां नरम होना व गर्भावस्था में उसकी कमी से शिशु को सांस लेने में तकलीफ, सिर की हड्डियां कमजोर होना, रिकेट्स की बिमारी आदि जो विटामिन डी की कमी का संकेत देते हैं।

मनुष्यों का जीवन पहिले की तुलना में ज्यादा आराम दायक हो गया है। जिससे पहिले की तुलना में सुबह जल्दी उठना, घूमना ताजी हवा, सुबह की धूप का कम ही आनंद उठा पाते हैं। ज्यादातर मनुष्य एयर कंडीशन में रहते हैं आजकल तो कसरत भी एयर कंडीशन में करते हैं फिर शुद्ध हवा धूप प्रदान करने वाला पर्यावरण भी गैसों से प्रदूषित हो गया है। विटामिन डी दो प्रकार के होते हैं, जिनमें कुछ खाद्य पदार्थों से केवल विटामिन डी.एक्स. सूरज की किरणों से त्वचा में बनता है। विटामिन डी मुख्यतः शरीर में कैल्शियम और फास्फेट का अवशोषण भी करता है।

विटामिन डी का सबसे प्राकृतिक स्रोत धूप ही है, इसके अलावा कुद खाद्य पदार्थों दुध, सोयामिल्क, पनीर, मक्खन, सबूत अनाड़ा गेहूँ, मक्का, दलिया, गाजर संतरे का जूस आम आदि। खाद्य पदार्थों के सेवन के पश्चात् भी आवश्यक विटामिन की कमी होने पर ही विटामिन की गोलिएं से उसकी कमी को दूर करना चाहिये किन्तु आजकल चारों ओर विटामिन्स की धूम मची हुई है।

विटामिन और होम्योपैथी की पद्धति वाईटल फोर्स (जीवन शक्ति) का एक ही अर्थ है जिसके अनुसार वाईटल फोर्स से ही जीवन चल रहा है। वैज्ञानिक युग ही यही कहता है विटामिन के कारण जीवन है। परन्तु प्रश्न यह है कि जीवन शक्ति स्वयं कमजोर है एवं विटामिन से भरपूर भोजन का सेवन करने से भी शरीर में सुधार नहीं होता, तो गोलिएं के रूप में विटामिन देने पर भी शरीर कैसे ग्रहण करेगा वह तो मल के द्वारा बाहर निकल जावेगा व कुछ न कुछ विपरीत असर की उत्पन्न करेगा।

इसलिये उपचार का सही उपाय विटामिन की गोलिएं नहीं अपितु शरीर में आये परिवर्तन धातुगत रचना को सुधारना होगा। उपयुक्त औषधियों से धातुगत रचना को सुधारकर शरीर को ग्रहण करने योग्य बनाया जा सकता है। होम्योपैथी की धातुगत चिकित्सा मूलतः विटामिन चिकित्सा है जिसमें शारीरिक व मानसिक अवस्था अनुसार औषधियों से शरीर को इस योग्य बना दिया जाता है कि उसे बाहर से इन तत्वों की जरूरत नहीं पड़े। होम्योपैथी व बायोकेमिस्ट्री की औषधियाँ अत्यन्त सूक्ष्म मात्राओं में दी जाती हैं। जिन्हें शरीर सुगमता से ग्रहण कर लेता है व प्रतिकूल प्रभाव नहीं होता है।

शरीर में विटामिन डी की अधिकता भी हानिकारक होती है जिससे कैल्शियम की अधिकता से किडनी रोग, हड्डियों का दर्द, पेशाब अधिक आना, हाट अटेक आदि बना रहता है। अतः प्राकृतिक रूप से खाद्य पदार्थों का सेवन, सूर्य प्रकाश से शरीर में विटामिन डी की कमी से बचकर शरीर को निरोगी व सुखमय जीवन बना सकते हैं।

चलो देखें यात्रा

मध्यप्रदेश के प्रसिद्ध भगवान बाहुबली स्वामी
के जिनालय एवं तीर्थ क्षेत्र

मध्यप्रदेश, भारत वर्ष के मध्य तथा क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा प्रदेश है यहाँ करीबन सत्तर तीर्थ क्षेत्र है। इसके हर क्षेत्र में भगवान बाहुबली स्वामी की प्रतिमाएँ विराजित है, इस क्षेत्र में मध्यप्रदेश में स्थित बाहुबली स्वामी के प्रसिद्ध जिनालय एवं तीर्थ क्षेत्रों के नाम प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

इन्दौर के आसपास के तीर्थक्षेत्र

1. भगवान बाहुबली दिगम्बर जैन ट्रस्ट गोम्मतगिरी इन्दौर

भगवान बाहुबली की विशाल, अतिसुन्दर प्रतिमा वर्तमान चौबीसी जिनालयों के मध्य स्थापित सन् 1986 में की गई है।

2. श्री दिगम्बर जैन तीर्थ पुष्पगिरी सोनकच्छ जिला देवास, में बाहुबली स्वामी की विशाल प्रतिमा विराजित की गई हैं।

3. सिद्ध क्षेत्र सिद्धवरकुट जिला खण्डवा में अलग वेदी पर अत्यंत सुन्दर प्रतिमा विराजित हैं।

बुन्देलखण्ड जबलपुर क्षेत्र

4. बहोरी बंद- श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र बहोरी बंद, जिला कटनी

यहाँ पर 4.5 फीट की अति प्राचीन एवं मनोज्ञ प्रतिमा विराजमान है।

5. श्रेयांसगिरी- नये निर्माण तीर्थ क्षेत्र सतना पन्ना मार्ग पर नचनागांव में तलहटी पर बाहुबली स्वामी मंदिर है।

6. लखनादौन- श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र लखनादौन जिला सिवनी पार्श्वनाथ मंदिर में बाहुबली स्वामी की प्राचीन प्रतिमा है।

बुन्देलखण्ड के अन्य क्षेत्र

7. आहारजी अतिशय क्षेत्र जिला टीकमगढ़ में बाहुबली मंदिर है।

8. पपौरा जी अतिशय क्षेत्र जिला टीकमगढ़ में बाहुबली मंदिर में आठ फीट ऊँची प्रतिमा स्थापित है।

9. सोनागिर अतिशय क्षेत्र जिला दतिया में पहाड़ी पर मुख्य चंद्रप्रभु मंदिर के विशाल प्रांगण में अति मनोज्ञ प्रतिमा विराजित है।

10. खजुराहो अतिशय क्षेत्र- जिला छतरपुर चंदेल कालीन बाहुबली की एक सुन्दर प्रतिमा स्थापित है। मध्यप्रदेश के अन्य क्षेत्र

11. ग्वालियर किले पर तेली मंदिर के सामने प्रतिहार कालीन बाहुबली स्वामी की प्रतिमा विराजित है।

12. सिरोंज जिला विदिशा- अतिशय क्षेत्र नसिया ट्रस्ट में विशाल प्रतिमा विराजित है।

13. बजरंगगढ़ शांतीनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र जिला गुना में 1.75 मीटर ऊँची प्रतिमा दर्शनीय है।

14. भोजपुर जिला रायसेन, सिद्ध शिलापर नवीन प्रतिमा विराजित की गई है। भगवान आदिनाथ एवं भरत के साथ त्रिमूर्ति के रूप में बहुत जिनालयों एवं तीर्थों पर बाहुबली स्वामी की प्रतिमाएँ विराजित है, आधुनिक समय में भगवान बाहुबली स्वामी की प्रतिमाएँ काफी तादाद में निर्मित होकर हर क्षेत्र में विराजित की जा रही है।

दिगम्बर जैन साधु का साधना पक्ष

* राजीव कुमार जैन (टीकमगढ़) *

जैन दर्शन के विचार और आचार एकरूपता होने से उसका आचारात्मक पक्ष भर उतना ही श्रेष्ठ है जितना कि उसका दार्शनिक पक्ष। दार्शनिक जगत में जैसे अनेकांत और स्याद्वाद सिद्धान्त मान्य एवं बेजोड़ हैं, वैसे ही आचार क्षेत्र अहिंसा और अपरिग्रह के सिद्धान्त भी अपना अपूर्व स्थान रखते हैं। तीर्थंकर के विचारों में अहिंसा और अपरिग्रह (त्याग) की भावना थी इसी से उनके आचार में भी इनकी प्रतिष्ठा पायी जाती है। अहिंसा और त्याग ही तीर्थंकरों द्वारा प्रतिपादित आचार धर्म की नींव है।

तीर्थंकरों ने अपने आचार धर्म को मूलतः दो भागों में विभक्त किया है :-

1. मुनि 2. गृहस्थ धर्म। मुनि धर्म निवृत्ति प्रधान है तो गृहस्थ धर्म प्रवृत्ति प्रधान। तीर्थंकरों ने मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य निर्वाण प्राप्ति ही बतलाया है जो मुनि धर्म के पालन द्वारा प्राप्त होता है। दिगम्बर साधु इसी मुनिधर्म का पालन करते हैं। यहां विवक्षित हैं मुनिधर्म के विभिन्न पहलू ! जो संसार से विरक्त हैं औ आत्म कल्याण की ओर उन्मुख हैं, उनके लिए निवृत्ति परक मुनिधर्म का विवेचन जैनदर्शन में किया गया है। यही वह मार्ग है जिसका अवलम्बन लेकर प्रत्येक मानव अपनी आत्मा का चरम विकास कर अपने अंतिम ध्येय मोक्ष अर्थात् निर्वाण को प्राप्त कर सकता है। मुनि मार्ग आत्म साधना पावन पथ है। तीर्थंकरों ने आत्मोद्धार एवं प्राणी हित की कामना से इसी पथ का अवलम्बन लिया था। वर्तमान में गोचर होने वाले दिगम्बर साधु भी इसी पथ के पथिक हैं।

1. दिगम्बर जैन साधु नग्न क्यों ?

दिगम्बर केवल जैन धर्म के लिए ही आदर्श नहीं है, परन्तु यह प्रत्येक धर्म के लिए आदर्श हैं। दिगम्बरत्व अपरिग्रह का जीवंत उदाहरण है।

अशक्य धारणं चेदं जन्तुना कातरात्मनाम्।

जैनं सिस्संगता मुख्यं, रूपं धीरं निषेव्यते ॥ (आदिपुराण)

जिनेन्द्र भगवान के अलौकिक, अतिश्रेष्ठ सहज, सरल, प्राकृतिक बालकवत् निर्ग्रन्थ रूप का प्राकृतिक एवं सार्वभौमिक स्वरूप होने से इसका प्रत्येक युग में प्रत्येक धर्म में किसी-न-किसी रूप में पाया जाता है। स्वयं महात्मा बुद्ध कहते हैं कि मैं पहले नग्न निर्ग्रन्थ रहा, अनिश्चित विहार किया, हाथ में आहार किया है। अनेक दुरूह तपश्चरण किये हैं। इससे सिद्ध होता है कि स्वयं बुद्ध निर्ग्रन्थ थे, परंतु यह दिगम्बर मार्ग कठिन होने से इस मार्ग को छोड़कर उन्होंने मध्यमार्ग को अपनाया। (त्रिपिटक से उद्धृत)।

वैदिक साहित्य में भी प्राचीनतम ऋग्वेद में नग्न साधु को वातरशना शब्द द्वारा बताया गया है।

मुनियों वातरशना पिशंगा बसते मल (ऋग्वेदमंडल 10.02.1362)

यजुर्वेद में महावीर भगवान को नग्न बताते हुए उनकी उपासना को संशय, विपर्यय तथा अनध्यवसाय रूप रात्रि, भय तथा धनमद, शरीर मद, आदि का निवारक कहा है।

आतिथ रूपं मासर महावीरस्सनग्नहुः।

रूपमुवासदामेलत्रिखो रात्री: सुरा: सुत: ॥ (यजुर्वेद अध्याय 9 मंत्र 14)

भतृहरि शतक में भी कहा है-

एकाकी निस्पृहा शान्तः पाणिपात्रो दिगम्बरः ।

कदा शम्भो भविष्यामि कर्म निर्मूलने क्षमः ॥

हे शम्भो ! मैं अब अकेला कामना रहित, शांत, कर पात्री दिगम्बर और बंधन निर्मूलन करने वाला होऊंगा ।

इस्लाम धर्म में भी नग्नता की पुष्टि की है- हमारे इस्लाम धर्म वाले बंधुओं, देखिये शायर जलालुद्दीन ने दिगम्बर नग्न पद को दिव्य ज्योति से अलंकृत बताते हुए कहा है । वस्त्रधारी व्यक्ति की दृष्टि तो धोबी की ओर रहती है । मस्त बोला मुहत्सिव से कम जो होगा क्या नंगे से तू ओहदा बुरा है । नजर धोबी पै जमापोस की है, तजल्ली जेवर उरितांतनों । नग्नदरवेश तार्किक से कहता है- अरे भाई ! तू जा, और अपना काम कर, तू दिगम्बर सा नहीं बन सकता । वस्त्र पहनने वाले की दृष्टि तो धोबी की ओर रहती है । दिगम्बर की शोभा देवी प्रकाश रूप है या तो तुम नग्न दरवेशी से कोई संबंध नहीं रखो अथवा उनके सुदृश दिगम्बर व स्वाधीन बन जाओ । यदि तुम पूर्णतया दिगम्बर नहीं बन सकते तो अपने वस्त्रों को परिमाण में रखो ।

आज से 300 वर्ष पूर्व शाहजहां बादशाह के राज्य में मुस्लिम सूफी फकीर मुहम्मद अली नग्न रूप में विहार करते थे । उनका कहना था कि परमात्मा जिस पर दोष देखता है उसे वस्त्र पहना देता है, किन्तु जो निर्दोष है उसे नग्न ही रहने देता है । पोशाद लिबास हरकरा एबेदीक । बे एबारा लिबास उरियानी दाद (अब्दुल कासिम) जिलानी नाम मुस्लिम साधु नग्न रहा करते थे ।

ईसाई धर्म- यहां नग्न साधु का महत्व बाईबिल में लिखा है- आदम तथा उनकी पत्नी नग्न उत्पन्न हुये थे तथा उद्यान में नग्न रहते थे । उनके मन में लज्जा ने कोई स्थान नहीं बनाया था । जब उन्होंने निषिद्ध के वृक्ष के फल को खाया तो उन्हें यह ज्ञान होने लगा कि वे नग्न हैं ।

ईसाई साधु पीटर ने लिखा है, हमें अपने पास कुछ भी नहीं रखना चाहिए । परिग्रह हम सबके लिए पाप रूप है । शंकराचार्य ने विवेक चूडामणि में लिखा है कि जिस योगी के पास दिशारूपी वस्त्र होते हैं अर्थात् दिगम्बर होते हैं । वह श्रेष्ठ अवस्था में जीत पूर्ण निराकुल हो ब्रम्हदर्शन जनित आनंद प्राप्त करने में समर्थ होते हैं ।

श्री रामकृष्ण कथामृत में लिखा है कि रामकृष्ण ने परमहंस अवस्था धारण की थी । जागने पर भक्तों ने देखा कि प्रभात हो चुका है । रामकृष्ण बालक के समान दिगम्बर नग्न है, जिसके शरीर पर एक धागा मात्र भी नहीं । उक्त स्वामी जी ने अपने अश्वनी कुमार दत्त से कहा था-जब मैं सभी भौतिक वस्तुओं को भूल जाता हूं उस समय वस्त्र भी छूट जाता है ।

नग्नत्व सहज लोके विकारो वस्त्र वेष्टितम् (यशोस्तिलक चम्पू) नग्नत्व विश्व में सहज रूप है । शरीर पर वस्त्र पहनना अपने विकार को ढांकना है ।

ईसा मसीह ने अपने उपदेश में प्रतिपादित किया था कि एक सुई के छेद से कदाचित् (अनहोनी जैसी होनी) हाथी निकल सकता है, परन्तु परिग्रह धारी मनुष्य ईश्वरी राज्य के विशाल दरवाजे में प्रवेश नहीं कर सकता है । अर्थात् परिग्रह स्वर्गमोक्ष प्राप्ति के लिए सुख शांति के लिए

प्रतिशोधक स्वरूप है ।

समाजवादी नेता केवल भाषण करते हैं, किन्तु पूर्ण रूप से अपरिग्रह को जीवन में नहीं उतारते हैं । परन्तु दिगम्बर साधु केवल भाषण ही नहीं करते हैं किन्तु आचरण में भी विश्व के सामने अनुकरणीय परमोत्कर्ष आदर्श स्थापित करते हैं । **ज्ञानार्णव में शुभचन्द्राचार्य** ने कहा है कि कदाचिद् दैवयोग से अचल कहे जाने वाले पर्वत चलायमान हो जायें किन्तु कामिनी कंचन सहित सम्पूर्ण परवस्तुओं का त्याग करने वाले मुनि का साम्य प्रतिष्ठित, परिग्रह वर्जित और मात्र अपने ज्ञान ध्यान में निमग्न रहता है । उनका मन प्रासादों में श्मशान में, स्तुति में, निंदा में, पंक में, केसर कुंकुम में, पलंग और कण्टक में, पत्थर तथा मणि में, चर्म और चीनांशुक में, विकर्षण अनुभव नहीं करता और साम्य में प्रतिष्ठित रहकर आत्मलीन रहता है । उपसर्गों पर विजय पाना, परीषहों को सहन करना अपकारी पर भी क्रोध न करना, स्तुतिकर्ता को विशेष अनुराग व स्नेह की भावना न देना- ये साधु के सहज स्वभाव है ।

ज्ञानार्णव में श्री शुभचन्द्राचार्य ने कहा है- कोई व्यक्ति मुनि महाराज को पारिजात के पुष्पों से पूजता है और कोई नग्न क्षपणक कहकर क्रोध करता है, गर्ले में सर्प डाल देता है और डंडा लेकर मारने-पीटने लगता है, किन्तु उन उपकारक और अपकारक पर जिसकी तुल्यवृत्ति होती है वही योगी है । जब राजा श्रेणिक ने दिगम्बर मुनि के गले में मृत सर्प डाल दिया और जब चलना रानी को ज्ञात हुआ तब दोनों पुनः मुनि महाराज के पास गये तथा मृत सर्प को निकाला तथा उपसर्ग मुक्त मुनि महाराज ने कहा-युवयोधर्म-वृद्धिरस्तु-तुम दोनों की धर्मवृद्धि हो । यह सुनकर श्रेणिक को ज्ञान हुआ कि यह मुनि परम समभावी हैं । न तो उन्होंने चलना को विशेष आशीर्वाद दिया और न मुझे अभिशाप दिया । दोनों को एक साथ युवयोः कहकर धर्मवृद्धि दी । यह समत्व ही मुनियों का भूषण है । यदि यह समत्व उन्हें प्राप्त नहीं हुआ तो वेष वास्तविक नहीं कहा जा सकेगा ।

साधु को किसी वेष या लिंग की सीमाओं में नहीं बांधा जा सकता । निर्वेश ही उसका वेष है । शिशु अथवा प्रकृति की भांति यथा जातं नग्नता ही उसका स्वाभाविक वेष है । प्रश्न स्वाभाविक होगा कि नग्नता ही क्यों ?

वस्तुतः ढांकने की आवश्यकता वहां होती है जहां विकार होता है । दिगम्बर साधु निर्विकारी होते हैं । उनका अन्तः करण निर्मल होता है । अतः नग्नता को छिपाने की आवश्यकता नहीं होती । बालक नग्न रहता है, उसे लज्जा नहीं आती । ज्यों-ज्यों बड़ा होता है, विकार पनपने लगते हैं । ज्योंही विकार आता है वह नग्नता से सकुंचा ने लगता है । प्रकृति जो सबको नंगा ही पैदा करती है । पीछे से मनुष्य कृत्रिमता का आडम्बर ओढ़ लेता है । जो साधु होता है वह कृत्रिमता को हटाकर प्राकृतिक स्थिति में आ जाता है । और फिर बिना नग्नता के पूर्ण अपरिग्रही नहीं बना सकता । लंगोटी की व्यवस्था की व्यवस्था एवं सुरक्षा का प्रश्न साधु की स्वाधीन वृत्ति को समाप्त कर पराधीन बना देता है । जिसके चलते आत्म साधना के चरम शिखर से वह साधुच्युत हो जाता है । वेष की ही बात नहीं, साधु का सारा जीवन ही प्रकृति के आश्रित है । न कोई घर-द्वार न कोई आश्रय । आकाश ही छत है और जमीन बिछावन । ये निर्जनवन, उपवन, श्मशान, पर्वत की

गुफा, नदी की घाट आदि जैसे स्थानों पर जहां भी ध्यान अध्ययन का साधन हो, रहते हैं। न गर्मी की परवाह, न सर्दी, बरसात की चिंता, न डांस मच्छर आदि का गम और न वनचरों का भय। निर्भय होकर अकेला विचरते हैं प्रकृति की गोद में। उनमें से किसी भी स्थान को वे अपना घन नहीं बताते। स्नान करते नहीं, मूँछ, दाढ़ी सिर के बाल बढ़ गये, तो फेंक दिया उन्हें हाथों से नोच कर घास-फूस की तरह। सोने के लिए बिछावन नहीं, ओढ़ने के लिए चार नहीं। सोना भी हुआ तो रात की पिछली पहर (प्रातः काल होने से पहले) में जमीन पर ही भुजा का तकिया बनाकर एक ही करवट से सो लेते हैं। साथ में होता है सिर्फ एक कमंडलू, शौच आदि की क्रिया हेतु पानी रखने के लिए एवं जीवरक्षा के लिए स्वयं गिरे हुए मोर पंखों की पिच्छी।

2. पिच्छि कमण्डलु- सर्वथा नम्र एवं अपरिग्रही महाव्रती मुनि को चर्या की निर्दोषता के रक्षार्थ इन्हें रखने की शास्त्राज्ञा है। मानों पिच्छि और कमण्डलु मुनि के स्वावलंबन के दो हाथ हैं। पिच्छिका मयूर पंखों से बनायी जाती है, अन्य पंख पिच्छि के लिए उपादेय नहीं माने गये हैं, क्योंकि मुनियों के लिये हिंसा, चौर्य, परिग्रह आदि सर्वथा निषिद्ध है और मयूरपंख ही ऐसे सुलभ हैं, जिन्हें वह ग्रहण कर सकते हैं। वह इस प्रकार की मयूर वर्ष में एक बार अपनी पंखावली का त्यागकर नवीन प्राप्त करता है। अतः समय पर बिना हिंसा उसे प्राप्त किया जा सकता है। वनों में विचरते हुये मुनियों को वृक्षों के नीचे पुष्कर परिमाण में स्वयं पतित पंख अनायास मिल जाते हैं, ये पंख स्वयं मयूर क्षरा परित्यक्त अथवा भूमि पतित होते हैं, अतः इन्हें ग्रहण करने में चौर्यदोष भी नहीं लगता। तीसरी बात यह कि प्रतिवर्ष और पुष्कर मात्रा में अनायास मिलते रहने से यह आवश्यक नहीं कि इनको बटोर कर, संगृहीत कर आगामी वर्षों के लिए संचित किया जाये जिससे कि परिग्रह दोष की संभावना हो। इसके अतिरिक्त मयूर पिच्छि का लवभाग (बालमय अग्रभाग) इतना मृदु होता है कि प्रतिलेखन से किसी सूक्ष्म जंतु की हिंसा भी नहीं होती। इन कारणों से मयूर पिच्छि धारण करना दिगम्बर साधु की मुद्रा है। पिच्छि रखने से वह नम्रमुद्रा किसी प्रमादी की न होकर त्यागी का परिचय उपस्थित करती है। **मुद्रा सर्वत्र मान्या स्यात् निर्मद्र नैव मन्यते** नीतिसारी की यह उक्ति सारगर्भित है। मुद्रा चाहे शासन वर्ग की हो, धार्मिक वर्ग की हो अथवा व्यापार वर्ग की हो सर्वत्र मान्य होती है। मुद्रा रहित ही मान्यता नहीं। वैष्णवों, शाक्तमतानुयायियों, शैवों, राधास्वामी साम्प्रदायिकों आदि में तिलक लगाने की पृथक-पृथक प्रणाली है। राजभृत्यों के कंधों पर अथवा सामने वक्षस्थल पर वस्त्र निर्मित या धातु घटित मुद्रा होती है, जिससे उसकी पद-प्रतिष्ठा जानी जाती है और राज भृत्यता की प्रमाणिकता सिद्ध होती है। कागज के नोट मुद्रांकित होने से चलते हैं। डाक-तार विभाग मुद्रात्मक है। एक राष्ट्र में प्रवेश पाने के लिए अनुमति पत्र (पासपोर्ट) और रेल यात्रार्थ पत्र लेना आवश्यक है। इसलिए भी भ्रमण परम्परा के आदिकाल से अधिकृत चिन्ह के रूप में पिच्छि कमण्डलु रखने का विधान चला आया है।

1. मराठी कवि जनार्दन ने त्यागियों के लिए लिखा है- परिग्रहों का त्याग स्वयं करें और शास्त्र पिच्छि और कमण्डलु को रखो।

2. आचार्य सकलकीर्ति ने मूलाचार में सूचना दी है कार्तिकमास में स्वयं पतित पिच्छि से सत् प्रतिलेखन तैयार कर लेना चाहिए। यह लिंग है, योगियों का चिन्ह है।

मयूर पंख निर्मित पिच्छिधारी दिगम्बर का उल्लेख वैदिकों के पुराण-साहित्य में भी पाया जाता है। पद्मपुराण, विष्णुपुराण तथा शिवपुराण आदि में भी इसका उल्लेख है। योगी दिगम्बरों मुण्डों बर्हिपिच्छिधरो द्विजः (पद्मपुराण 13/33) ततो दिगम्बरों मुण्डो बर्हिपिच्छिर्द्विजः। (विष्णुपुराण 3/189) मयूर चंद्रिका पुंत पिच्छि का धारयन् करे। (शिवपुराण 10/80/80)

कुछ लोग मयूर पंख को प्राठयंग होने से अपवित्र करते हैं किन्तु श्री चामुण्डाय रचित चारित्रसार का कथन है कि **शरीरजा अपिमयूर पिच्छि सर्प मणिशुक्ति मुक्ता फलादयों लोके शुचित्वमुपागताः** - अर्थात् मयूर के पंख, सर्वमणि, सीप और मुक्ताफल आदि (गजमुक्ता) शरीरज होने पर भी लोक व्यवहार में शुचि माने गये हैं। मूलाचार में तो पिच्छि को दया का उपकरण कहा है। मंत्र लक्षण शास्त्र कहता है कि पिच्छि आवश्यकता होने पर छत्र भी है और चामर भी, यंत्र और मंत्र की प्रसिद्धि (सिद्धि) के लिये भी इसका व्यवहार किया जाता है, और सम्पूर्ण प्राणियों की रक्षा के लिए तो है ही।

मूलाराधना में पिच्छि के अन्य पांच गुणों को बताते हुए कहा है कि रज और स्वेद (पसीना) का अग्रहण, मृदुता, सुकुमारता और लघुत्व (हल्कापन) जिस पिच्छि में ये पांचगुण विद्यमान हों, उस प्रतिलेखन उपकरण की प्रशंसनीय असंदिग्ध है। तत्त्वार्थ श्लोक वार्तिक का प्रतिपादन है कि **श्रवण शास्त्रों** में अदत्त के अदान को स्तेय (चौर्य) कहा है। कोई भी लघु या महत् वस्तु जो स्वयं की न हो, परकीय हो, उसे वस्तु के स्वामी से ही याचना कर प्राप्त करना चाहिये। जान बूझकर अथवा प्रमादवश, अनजाने ग्रहण की हुई वस्तु चौर्यलब्ध ही मानी जायेगी। इस अर्थ में सामान्य रूप से किसी भी अदत्तवस्तु के ग्रहण का विधान मुनि के लिए नहीं है। तब क्या मयूर पिच्छि और कमण्डलु जो अरण्य में पड़े हुए मिल जाते हैं। मुनि को ग्रहण नहीं करने चाहिये। वे भी तो अदत्त है उनका आदान कैसे हो? इस शंका का समाधान करते हुए कहा गया है नदियों, निर्झरों आदि का जल सूखें हुए मोमखण्ड अथवा भस्म आदि अपने आप मुक्त मयूर पंख एवं तुम्बीफल आदि ग्रण करने में स्तेय दोष नहीं लगता यह प्रासुक हैं।

इस प्रकार पिच्छि शिवमार्ग की बुहारी है, कमण्डलु सिंचन करने वाला है, और शास्त्र शिवमार्ग की दिशाबोध की ध्रुवसूची है। उक्त प्रकार हम देखते हैं। कि दिगम्बर साधु का जीवन बिल्कुल निरपेक्ष एवं स्वतंत्र होता है। फिर भी उन्हें शरीर रक्षा के लिए भोजन की आवश्यकता होती है। तब ये आहार के लिए विहार करते हुए गृहस्थों के द्वार से अटपटी प्रतिज्ञाएं लेकर गुजरते हैं उस वक्त द्वार पर खड़ा गृहस्थ कहता है- स्वामिन् ठहरिये-ठहरिये मन शुद्ध है, वचन शुद्ध हैं, काय शुद्ध है आहार जल शुद्ध है भोजन शाला में प्रवेश करें। तब साधु ठहर जाते हैं और गृहस्थ के घर जाकर गृहस्थ द्वारा नवधा भक्ति पूर्वक ही आहार ग्रहण करते हैं अन्यथा नहीं। भोजनशाला में साधु खड़े-खड़े अपने हाथों की अंजुली बनाकर अंजुली में गृहस्थ द्वारा दिये गये भोजन का ग्रास

लेकर उसे अच्छी तरह शोध करके निर्दोष आहार ग्रहण करते हैं। वह भी दिन में सिर्फ एक बार।

वर्णित साधु की विशेषताएं यथा-

नग्न रहना, स्नान नहीं करना, एक बार भोजन करना, खड़े-खड़े आहार लेना, केश लुंचन करना, जमीन पर सोना आदि ये साथ बाह्य क्रियायें हैं। इसके साथ-साथ साधु इक्कीस अन्य क्रियाओं का और पालन करते हैं। ये हैं - पंच महाव्रत, पंच इन्द्रिय जय, पंच समिति, षट् आवश्यक, इस प्रकार कुल मिलाकर 27 प्रकार की दिगम्बर साधु की चरित्रगत विशेषताएं हैं जिन्हें साधु के मूल गुण कहे जाते हैं। प्रस्तुत है इनका संक्षिप्त विवेचन-पंचमहाव्रत-दिगम्बर साधु आत्म आराधना हेतु पांच महाव्रतों का पालन करते हैं। ये हैं-

1. अहिंसा महाव्रत- अपने समस्त कार्यों को करते हुए सदा इस बात का लिए सचेष्ट रहते हैं कि हमारे द्वारा किसी भी प्रकार के छोटे-बड़े जीवों को कष्ट न हो और न उनका वध हो।

2. सत्यमहाव्रत- ये बराबर सावधानी रखते हैं कि उनके मुख से कभी भी किसी भी स्थिति में अप्रिय और कटुक वचन नहीं निकले। हित मित यानी थोड़े शब्द और प्रिय वचन ही बोलते हैं।

3. अचौर्यमहाव्रत- बिना दिये जल और मिट्टी भी ग्रहण नहीं करते हैं।

4. ब्रह्मचर्यमहाव्रत- स्त्री के साये से अति दूर रहते हैं, स्त्री के राग विषयक कोई चर्चा नहीं करते हैं और न सुनते हैं स्त्री के मनोहर आङ्गोपाङ्ग की ओर आंख उठाकर भी नहीं देखते। गृहस्थ अवस्था में भोगे भोगों की स्मरण नहीं करते हैं। सदा आत्म स्वभाव में रमण करते हैं।

5. अपरिग्रह महाव्रत- किंचित् मात्र भी परिग्रह न रखकर सदा पूर्णरूपेश अन्तः एवं बाह्यपरिग्रह से मुक्त रहते हैं।

पंचेन्द्रियजय- पांच इन्द्रिय अर्थात् रसना (जीभ) घ्राण (नाक), चक्षु एवं कर्ण (कान) इन इन्द्रियों को जो विषय अच्छे लगते हैं उनसे साधु राग नहीं करते और जो विषय इन इन्द्रियों को अप्रिय लगते हैं उनसे द्वेष नहीं करते। पांचो इन्द्रियों के विषय उनके लिए अविषय हो जाते हैं। शांति का उपभोग तथा समता रस में स्नान, यही एक मात्र विषय रह जाता है साधु का।

पंच समिति- दिगम्बर साधु निरंतर आत्म साधना में लीन रहकर शांति सुधा का पान करते रहते हैं। यद्यपि अधिक समय तक उस अवस्था में स्थित नहीं रह सकते कारण जब आत्म स्वरूप की स्थिरता से च्युत होते हैं तब शरीर आदि की क्रियाओं में प्रवृत्ति करते हैं। उस वक्त मेरी इन क्रियाओं से किसी भी छोटे बड़े प्राणी को किसी भी प्रकार का कष्ट न पहुंचे इस भावना से यत्नाचार पूर्वक सभी क्रियायें करते हैं उनकी यह यत्नाचार-पूर्वक प्रवृत्ति जीव रक्षा के निमित्त होने के कारण समिति कहलाती है। यह पांच कोटियों में विभाजित हैं।

1. ईया समिति- साधु चलते वक्त सदा चार हाथ जमीन देखकर चलते हैं। रात में नहीं चलते ताकि पैरों के नीचे कोई जीव जन्तु दबकर मर नहीं जायें।

2. भाषा समिति-साधु बोलते वक्त सदा यह ध्यान रखते हैं कि उनके मुख से कोई भी ऐसा शब्द न निकले जो कि श्रोताओं के लिए अहितकारी एवं अप्रिय हो।

3. एषणा-समिति- शरीर एवं तप की वृद्धि हेतु जीभ के स्वाद की चाह बिना नीरस एवं शुद्ध आहार साधु लेते हैं।

4. आदान-निक्षेपण समिति-कमण्डलु, पिच्छ, पुस्तक आदि रखते एवं उठाते वक्त सदा देख समझ कर ही उन्हें रखते उठाते हैं ताकि जीव-जन्तु को कष्ट न हो।

5. प्रतिष्ठापना समिति -मल, मूत्र क्षेपण गुप्त एवं जन्तु रहित स्थान पर करते हैं। नाली आदि में नहीं। षट् आवश्यक-उपरोक्त क्रियाओं द्वारा इन्द्रियों को वश में करते हुए मन को नियंत्रित रखने के लिए साधु निम्न 6 आवश्यक क्रियाएं करते हैं -

1. प्रतिदिन दिन में तीन बार सामायिक करना, 2. स्तुति करना, 3. वंदना करना, 4. दैनिक क्रिया कलापों में प्रमादपूर्वक लगे दोषों की निन्दा करना तथा भविष्य में उन दोषों से बचने की प्रतिज्ञा करना, 5. स्वाध्याय करना-अर्थात् चिन्तन मनन, पठन-पाठन आदि 6. शरीर के प्रति अत्यन्त उपेक्षित बाधाओं एवं पीड़ा को गौण करते हुए यथाशक्ति कुछ देर के लिए शरीर को काष्ठवत् निश्चल करके आत्मा का ध्यान करना।

उपरोक्त 28 मूलगुणों का पालन प्रत्येक दिगम्बर साधु करते हैं। उपरोक्त क्रियाओं के पालन में कोई संकट आता है तो वे उससे विचलित नहीं होते। भूख-प्यास आदि की वेदना से पीड़ित होने पर किसी के आगे हाथ नहीं पसारते हैं और न ही मुख पर दीनता का भाव लाते हैं। वे तो सांसारिक बंधनों के कारण से असहयोग करके कष्टों से न घबराकर आत्मा की मुक्ति के लिए सदा उद्यमशील रहते हैं उनके लिए शत्रुमित्र, महल-शमशान, कंचन-कांच निन्दा-स्तुति सब समान है। कोई करे या तलवार चलाये दोनों ही स्थिति में उसे आशीर्वाद प्रदान कर उसके हित की ही कामना करते हैं। वे अपने ज्ञान व तप का मद नहीं करते हैं। उनका हृदय सदा दया से आर्द्र रहता है। मेरे द्वारा किसी को कष्ट नहीं पहुंचे, सबका हित हो, विश्व कल्याण की यह भावना सदा उनके हृदय में विद्यमान रहती है। उपरोक्त क्रियाओं के साथ-साथ निरन्तर ज्ञान-ध्यान एवं तप से निमग्न रहते हुए अपने वैराग्य की वृद्धि एवं पुष्टि हेतु 12 (बारह) प्रकार की भावनाओं चिन्तन करते हुए संसार, शरीर भागों से उदासीन रहते हैं। ये आत्मस्वभाव रूप धर्म के दशलक्षणों की आराधना पूर्वक सम्यक्चारित्र की पूर्णता द्वारा समस्त कर्मों के आवरण से रहित होकर मोक्षरूपी लक्ष्मी को वरण करते हैं। और चिरकार के लिए शाश्वत् एवं अखण्ड शांति सुधा का पान करते हैं उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट झलकता है कि दिगम्बर साधु की चर्या अहिंसा और त्याग पर आधारित एक महान साधना है। ये साक्षात् करुणा की मूर्ति हैं। इनका सारा जीवन स्व-कल्याण के लिए समर्पित रहता है। वस्तुतः दिगम्बरत्व की साधना की मानव जीवन की श्रेष्ठतम उपलब्धि है।

मेरी भावना:- जिसने राग द्वेष कामादिक, जीते सब जग जान लिया।

सब जीवों को मोक्षमार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया॥

बुद्ध, वीर, जिन, हरि, हर, ब्रह्मा या उसको स्वाधीन कहो।

भक्ति-भाव से प्रेरित हो य चित्त उसी में लीन रहो॥1॥

विषयों की आशा नहीं जिनके, साम्य-भाव धन रखते हैं।

निज-पर के हित साधन में जो, निश-दिन तत्पर रहते हैं॥

स्वार्थ-त्याग की कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते हैं।

ऐसे ज्ञानी साधु जगत के, दुःख-समूह को हरते हैं॥2॥

रहे सदा सत्संग उन्हीं का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे।
 उन्हीं जैसी चर्या में यह, चित्त सदा अनुरक्त रहे॥
 नहीं सताऊँ किसी जीव को, झूठ कभी नहीं कहा करूँ।
 परधन-वनिता पर न लुभाऊँ, संतोषामृत पिया करूँ॥3॥
 अहंकार का भाव न रखूँ, नहीं किसी पर क्रोध करूँ।
 देख दूसरों की बढ़ती को, कभी न ईर्ष्या-भाव धरूँ॥
 रहे भावना ऐसी मेरी, सरल-सत्य-व्यवहार करूँ।
 बने जहाँ तक इस जीवन में, औरों का उपकार करूँ॥4॥
 मैत्रीभाव जगत में मेरा, सब जीवों से नित्य रहे।
 दीन-दुःखी जीवों पर मेरे, उर से करूँ सा-स्रोत बहे॥
 दुर्जन-क्रूर-कुमार्ग-रतों पर, क्षोभ नहीं मुझको आवे।
 साम्यभाव रखूँ मैं उन पर, ऐसी परिणति हो जावे॥5॥
 गुणी जनों को देख हृदय में, मेरे प्रेम उमड़ आवे।
 बने जहाँ तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे॥
 होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे।
 गुण-ग्रहण का भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जावे॥6॥
 कोई बुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे।
 लाखों वर्षों तक जीऊँ या मृत्यु आज ही आ जावे॥
 अथवा कोई कैसा भी भय, या लालच देने आवे।
 तो भी न्याय मार्ग से मेरा, कभी न पद डिगने पावे॥7॥
 होकर सुख में मग्न न फूले, दुःख में कभी न घबरावे।
 पर्वत-नदी-श्मशान भयानक, अटवी से नहीं भय खावे॥
 रहे अडोल-अकंप निरंतर, यह मन दृढ़तर बन जावे।
 इष्ट-वियोग-अनिष्ट-योग में, सहन-शीलता दिखलावे॥8॥
 सुखी रहें सब जीव जगत के, कोई कभी न घबरावे।
 बैर-पाप अभिमान छोड़ जग, नित्य नये मंगल गावें॥
 घर-घर चर्चा रहे धर्म की, दुष्कृत दुष्कर हो जावें।
 ज्ञान चरित उन्नत कर अपना, मनुज-जन्म-फल सब पावें॥9॥
 ईति-भीति व्यापे नहीं जग में, वृष्टि समय पर हुआ करे।
 धर्मनिष्ठ होकर राजा भी, न्याय प्रजा का किया करे॥
 रोग मरी दुर्भिक्ष न फैले, प्रजा शांति से जिया करे।
 परम अहिंसा-धर्म जगत में, फैले सर्व हित किया करे॥10॥
 फैले प्रेम परस्पर जग में, मोह दूर ही रहा करे।
 अप्रिय कटुक कठोर शब्द नहीं, कोई मुख से कहा करे॥
 बनकर सब युगवीर हृदय से देशोन्नति-रत रहा करें।
 वस्तु-स्वरूप-विचार खुशी से, जब दुःख संकट सहा करें॥11॥



अध्यात्म की बेजोड़ रचना इष्टोपदेश

आचार्य पूज्यपाद 5 वीं ईसवी शती के प्रभावक आचार्य हुए। व्याकरण सिद्धान्त न्याय दर्शन, तर्क विद्या के निष्णात विद्वान आचार्य पूज्यपाद इष्टोपदेश ग्रंथ के सृजेता हुए हैं। आचार्य पूज्यपाद जी ने प्रस्तुत ग्रंथ के सिवाय सर्वार्थ सिद्धि, समाधि तंत्र, जैनेन्द्र व्याकरण, जैनेन्द्र लघुवृत्ति, सिद्ध रसयान, दश भक्ति संग्रह जैसे संस्कृत भाषा के उत्कृष्ट ग्रंथों का लेखन कर जैन धर्म दर्शन संस्कृति का महान् उपकार किया है।

प्रस्तुत इष्टोपदेश ग्रंथ में 50 श्लोक एवं एक बसंतिलका छन्द का प्रयोग किया गया है। ग्रंथ के मंगलाचरण में संज्ञान रूप अनंतज्ञान रूप परमात्मा को नमस्कार किया गया एवं परमात्मा उन्हें ही माना गया है जिन्होंने समस्त कर्मों का अभाव करके स्वभाव की प्राप्ति की है।

विषयवस्तु- निमित्त उपादान से सिद्धि बताते हुये व्रतों की सार्थकता पर प्रकाश डाला है। मोक्ष पद भावों से स्वर्ग तो अपने आप मिला जाता है। स्वर्ग सुख का कथन करने के उपरान्त इन्द्रिय सुख को भ्रांति मात्र घोषित किया है। मोह से घिरा व्यक्ति वस्तु स्वरूप को नहीं जानता है। मोही जीव परपदार्थ को अपना मानता है। संसारी जीव की कौटुम्बिक झलक दिखने के बाद अहितकर क्रोध व्यर्थ माना है संसार परिभ्रमण के साथ विपत्ति कोई आती ही रहती है धन को दुखकर बताया है संसारी प्राणी दूसरों के दुख देखकर सबक नहीं लेता है। लोभी को धन इष्ट होता है। त्याग के लिए

धन संचय उचित नहीं होता है। भोग हर समय दुखदायी होते हैं। अपवित्र शरीर कमनीय नहीं है। उपकारक कौन अपकारक कौन जैसे विन्दूओं पर इस ग्रंथ में सटीक विचार किया गया है।

विवेकी किसमें आदर करें, आत्म स्वरूप, आत्मध्यान के उपाय, आत्म ध्यान का फल, एकत्व में संबंध नहीं बन्ध मुक्ति के कारण निर्भय भाव साध्य हैं संयोगों को त्यागने की प्रेरणा दी है।

पुद्गलों की परिणति मेरी नहीं है ज्ञानी के अनासक्त बुद्धि होती है। सभी अपना प्रभाव बढ़ाते दिखाते हैं। भेदज्ञान का फल एवं उपाय आत्मोपकारी बनने की प्रेरणा दी गई है। निजात्म को ही गुरु घोषित किया गया है, निमित्त मात्र सहायक है, निज आत्मक चिन्तन की पद्धति, आत्म संवित्ति की पहचान अनुभूति का फल, योग साधना के लिए निर्जनता योगी निर्विकल्प दशा, विशेषताएं बताई गयी हैं।

साम्यभाव योगी ही कर्मों से छूटता है। जो जहाँ हैं वहीं रमता है।

आगे इसी क्रम में सुख दुख के आधार पर में अनुराग का फल दुख, स्वरूप निष्ठता, आनंद का कार्य कर्म ईंधन जलाना है। मुमुक्षु के कर्तव्य तत्व का सार एवं अंत में इष्टोपदेश ग्रंथ का फल बताया गया है।

प्रस्तुत ग्रंथ अध्यात्म की दृष्टि से बेजोड़ रचना है इस ग्रंथ का जितनी बार भी अध्ययन किया जायें उतनी बार नया विषय ही मिलता है।

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
दिसम्बर 2018

कहाँ मिलेगा वो मधुर रस

प्रथम-

रूकें न मेरे पंख कभी
खोजती फिरती जगह सभी
एक तमन्ना है मेरी बस
कहाँ मिलेगा वो मधुर रस

पल्लवी जैन (वासोदा)

द्वितीय-

जगह जगह मैं घूम रही हूँ

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा
नवम्बर 2018 के विजेता

प्रथम : श्रीमति कान्ता जैन (मदनगंज किशनगढ़)
द्वितीय : सौ. सरला रमेशराव कस्तुरे (महाराष्ट्र)
तृतीय : श्री विनयचंद्र जैन (विदिशा)

ठूठ पर बैठी खोज रहीं हूँ
थोड़ा तो मिल जाये रस
कहाँ मिलेगा वो मधुर रस

श्रीमति रूचि जैन (सागर)

तृतीय-

जीवन मेरा यों ही बीता
सारा उपवन सूखा जीता
नहीं गुलाब अब मिलता खास
कहाँ मिलेगा वो मधुर रस

श्रीमति रजनी जैन (राहतगढ़)

वर्ग पहेली क्र. 225
नवम्बर 2018 के विजेता

प्रथम : श्री एम. सी. जैन (कोटा राजस्थान)
द्वितीय : श्री कपूरचंद्र जैन (जतारा)
तृतीय : ब्रती बी.एल. जैन (नई दिल्ली)

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा : दिसम्बर 2018 का हल

- | | | |
|--------------|---------------|-------------------------------------|
| 01. उपास्य | 18. मुक्ति | 35. विवेक |
| 02. वासना | 19. प्रदर्शित | 36. विशुद्धि |
| 03. प्रभु | 20. राग | 37. जिनवाणी |
| 04. मन | 21. शिक्षा | 38. कण्ठ |
| 05. कल्याण | 22. पार | 39. भक्त |
| 06. वीतरागता | 23. भगवान् | 40. भगवान् |
| 07. प्रभु | 24. फीके | 41. धुवडी आसाम |
| 08. भक्त | 25. जीवन | 42. 15 अक्टूबर 2018 |
| 09. दीपक | 26. अनमोल | 43. आ. ज्ञानसागर जी महाराज |
| 10. दशा | 27. सिद्धि | 44. त्रिशला आरती मंडल रहली |
| 11. राग | 28. गुणारोपण | 45. पंचबालयति जैन मंदिर इन्दौर |
| 12. सागरमय | 29. दावानल | 46. खजुराहो 14 अक्टूबर 2018 |
| 13. वैभव | 30. मुक्ति | 47. डॉ. जगदीश चन्द्र जैन - दो रूपये |
| 14. भगवान् | 31. सयम | 48. 85 प्रतिशत |
| 15. पारसमणि | 32. राग | 49. अन्ना रंजित मल्होत्रा मुम्बई |
| 16. सुखी | 33. मुक्ति | 50. 45 वर्ष |
| 17. निर्मलता | 34. उपादेय | |



पुराण प्रेरणा

सज्जन के वचन

निर्गुणापि गुणान् सद्भिः कर्णपूरी
कृताकृतिः ।

बिभर्त्येव वधूवक्त्रैश्चूतस्येवाग्रमञ्जरी॥

जिस प्रकार स्त्रियों के मुखों द्वारा अपने कानों में धारण की हुई आम की मंजरी निर्गुणा-डोरा-रहित होने पर भी गुण सौन्दर्य विशेष को धारण करती हैं उसी प्रकार सत् पुरुषों के द्वारा श्रवण की हुई निर्गुणा-गुण रहित रचना भी गुणों को धारण करती है।

भावार्थ- यदि निर्गुण रचना को भी सत् पुरुष श्रवण करते हैं तो वह गुण सहित के समान जान पड़ती है।

साधुरस्याति काव्यस्य दोषवत्ता मयाचितः ।

पावकः शोधयत्येव कलधौ तस्य कालिकाम्॥

साधु पुरुष याचना के बिना ही काव्य के दोषों को दूर कर देता है सो ठीक ही है क्योंकि अग्नि

स्वर्ण की कालिमा को दूर हटा ही देती है।

दुर्वचो विषदुष्टान्तर्मुखस्फुरितजिह्वकान्।

निगृह्णन्ति खलव्यालान् सन्नरेन्द्राः
स्वशक्तिभिः ॥

दुर्वचनरूपी विष से दूषित जिनके मुखों के भीतर जिह्वाएँ लपलपा रही हैं ऐसे दुर्जनरूपी साँपों को सज्जनरूपी विषवैध अपनी शक्ति से शीघ्र ही वश कर लेते हैं।

रजो बहुलमारूक्षं खलं कालं विदाहिनम्।

सन्तःकाले कलध्वानाः शमयन्ति यथा
द्यनाः ॥

जिस प्रकार मधुर गर्जना करने वाले मेघ अत्यधिक धूलि से युक्त, रूक्ष और तीव्र दाह उत्पन्न करने वाले ग्रीष्म काल को समय आने पर शान्त कर हैं उसी प्रकार मधुर भाषण करने वाले, सत्पुरुष, अत्यधिक अपराधन करने वाले कठोर प्रकृति एवं सन्ताप उत्पन्न करने वाले दुष्ट पुरुष को समय आने पर शान्त कर लेते हैं।

(आदि पुराण से)

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों को क्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. ज् अ ज् न् र् अ न् अ र् ई स् अ आ ग ई नि
2. ज् अ य् र् ग् अ न् र् ई स् अ आ ग ई नि
3. ज् अ र् इ म् न् उ श् च् ई न् त् अ नि
4. ज् अ आ र् श्च अ व् र् ई स् अ आ ग ई नि
5. ज् अ प् र् ल् ए अ र् ई स् अ आ ग ई नि

परिणाम :

दिसम्बर 2018: (1) मरण कण्डिका (2) भगवती आराधना
(3) विराग स्वरूप विद्यासागर (4) सिद्धि विनिश्चय (5) लघीस्त्रय

कैसे आए काम में गुणवत्ता

करियर



अगर सालों तक मेहनत करने के बावजूद आपका जॉब टाइटल नहीं बदला है या फिर आप खुद को आगे बढ़ते हुए नहीं पाते हैं तो यह स्थिति आपको फ्रिक में डाल सकती है। हालांकि जॉब टाइटल के नहीं बदलने का यह अर्थ नहीं है कि आप सुधार नहीं कर रहे। दरअसल यह बात आपके सीनियर्स को भी पता होनी चाहिए। लेकिन इससे पहले आपको खुद भी जानना चाहिए। कि क्या आप एक हाईफार्मर हैं ? यह जानकारी ग्रोथ में खासी काम आयेगी। यहाँ दिये गये कुछ पॉइंट्स इन एनालिसिस में आपकी मदद करेंगे।

मुश्किल कामों पर अच्छा फीडबैक-

याद करें पिछले सालों में आपके काम पर किस तरह का फीडबैक मिला है। शुरुआती दौर में काम के दौरान आपको कई बार रिवीजन के दौर से गुजरना पड़ा होगा। हालांकि धीरे-धीरे आपने बेहतरी भी हासिल की होगी। अब अगर आप मुश्किल कामों को आसानी से करते हुए सकारात्मक फीडबैक हासिल कर लेते हैं तो इसका अर्थ है कि आप बेहतर परफॉर्मर की कैटेगरी में शामिल हो रहे हैं।

काम की स्पीड में बढ़ोतरी-

क्या पिछले सालों में आपके काम की आलोचना में कमी आई है और क्या आप प्रोजेक्ट्स को पहले की तुलना में आधे से भी कम समय में पूरा कर लेते हैं ? अगर हाँ तो इसका मतलब है कि आप हाई परफॉर्मर हैं अगर आप अपने कामों को बिना किसी मदद के और डैडलाइन पर खत्म कर लेते हैं तो इसका अर्थ है कि आपकी परफॉर्मेंस बेहतर हो रही है।

लगातार नए प्रोजेक्ट मिलना-

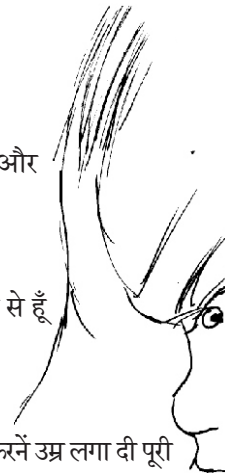
अगर आपको लगातार नए असाइनमेंट्स मिल रहे हैं तो ऐसा होना भी एक सकारात्मक संकेत है। इसके साथ ही अगर अब आप काम में इतने कुशल हो गये हैं कि कोई भी प्रोजेक्ट आपको मुश्किल नहीं लगता और आपका वर्क मैनेजमेंट भी पहले से बेहतर हुआ है तो इसका अर्थ है कि अब आपको और मुश्किल चुनौतियों की ओर बढ़ना चाहिए यह उन्हें अपने लिए अवसरों में भी बदलने का वक्त है।

कविता

श्मशान

* वीरेन्द्र भूपत (सिरोंज) *

एक दिन सयोंग बस सुबह दोपहर शाम रात श्मशान के पास से गुजरा और हर समय नई नई चिताये जलती देख मेरा माथा ठन्डा तब मैंने श्मशान से पूछा हे श्मशान क्या बात तेरी खामोशी क्यों नहीं जाती तब श्मशान बोला मैं क्या करूँ लोग आते हैं और अपनी अपनी जान देकर मुझे आवाद किये जाते हैं इसमें मेरा क्या कसूर है मैं तो उनमें से हूँ जिन्हें दुनिया में कोई जगह नहीं देता उन्हें मैं अपने में जगह दे देता हूँ इसमें मेरा क्या दौरा है मैं किसी को भी आंत्रित नहीं करता फिर भी लोग अपनों को मेरे पास छोड़ जाते हैं इसमें मेरा क्या अपराध तब बखस मेरे मुँह से निकल पड़ा घर से श्मशान की कितनी दूरी जिसे पार करने उम्र लगा दी पूरी



दुनिया भर की बातें



■ 1 नवम्बर

- ईश निंदा मामले में पाक सुप्रीम कोर्ट ईसाई महिला आसिया बीबी को मौत की सजा से बरी किया। कट्टर पंथियों ने प्रदर्शन किया टी एल पी ने जज को धमकी दी।

- कम्प्यूटर बाबा को श्री पंच दिगम्बर अनी अखाड़े से निष्कासित किया गया।

- श्री लंका के राष्ट्रपति मैत्रीपाला सिरिसेना ने संसद का निलम्बर हटाया।

■ 2 नवम्बर

- किशतवाड़ा (जम्मू) भाजपा नेता अनिता परिहार और उनके भाई की हत्या बाद बबाल मचा जम्मू प्रांत में कर्फ्यू लगा।

- विधानसभा चुनाव हेतु भाजपा नं. 170 उम्मीदवारों की सूची जारी की।

- इतिहास रामचन्द्र गुहा ने अहमदाबाद युनिवर्सिटी में पढ़ने मना किया ए.बी.बी.पी. ने उन्हें देश द्रोही बताया था।

■ 3 नवम्बर

- सुप्रीम कोर्ट के पूर्व जज चेलमेश्वर ने कहा इतिहास पर नजर डालें तो राम मंदिर के लिये सरकार कानून ला सकती है।

- सुप्रीम कोर्ट पहली बार हर शनिवार 10 से 11.30 तक जनता के लिए खुलेगा।

- अफगानिस्तान के नांगाहार प्रांत में

तालीबान और आई एस के आतंकी भिडे 31 आतंकी मारे गये।

■ 4 नवम्बर

- ब्रिटेन के कैप्टन लुइस रूड 75 दिन में अंटार्कटिक पोलर क्षेत्र की 1500 किमी. यात्रा पूरी करने निकले।

- कश्मीर में 9 साल बाद नवम्बर के पहले हफ्ते में भारी बर्फबारी हुई।

- कश्मीर के शोपियां जिले में सुरक्षा बलों के साथ मुठभेड़ में हिलबुल मुजाहिदीन के दो आतंकी मोहम्मद इरफान बट और शाहिद मीर मारे गये।

■ 5 नवम्बर

- राजपुर विधानसभा से भाजपा प्रत्याशी और पूर्व राज्यमंत्री देवीसिंह पटेल (66) का हृदयाघात से निधन हो गया।

- देश की परमाणु पनडुब्बी आई एन एस अरिहंत ने अपनी पहली गश्त पूरी कर ली।

- मानहानि के मामलों में दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को एक विशेष अदालत से बरी कर दिया।

■ 6 नवम्बर

- बेंगलुरु: सत्तारूढ़ कांग्रेस व जेडी-एस गठबंधन ने राज्य में लोकसभा की तीन और विधानसभा की दो सीटों पर हुए उपचुनाव में चार सीटें जीत ली।

- तिरुअनन्तपुरम: सबरीमाला मंदिर में विरोध प्रदर्शन के दौरान एक 52 वर्षीय महिला और मीडिया कर्मी घायल हो गये।

- नई दिल्ली: देश की राजधानी की वायु गुणवत्ता बहुत खराब श्रेणी में दर्ज की गई है।

■ 7 नवम्बर

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुरुवार को नई दिल्ली में भाजपा के वरिष्ठ नेता लाल कृष्ण आडवाणी को उनके 91वें जन्मदिन पर बधाई दी।

- एस.एस.बी के जवानों ने नेपाल से भारत में अवैध रूप से प्रवेश करते चीन के छह नागरिकों को रूपाईहिडा सीमा पर पकड़ लिया।

- दंतेवाड़ा जिले के बचेली इलाके के बस को आई.ई.डी धमाका कर उड़ा दिया। इसमें एक सी.आई. एस. एफ का एक जावन शहीद होगया और चार नागरिकों की मौत होगई।

■ 8 नवम्बर

- तेलगांवा की राजधानी हैदराबाद में पुलिस ने साढ़े सात करोड़ रुपये नगद बरामद किए।

- पुलिस ने बगैर वैध दस्तावेजों के देश में रह रही एक बांग्लादेशी नागरिक तथा उसे आश्रय देने वाले एक जोड़े को गिरफ्तार किया।

- गंगोत्री के कपाट गुरुवार को शीतकाल के लिए बंद कर दिए गये।

■ 9 नवम्बर

- टिकट की दावेदारी कर रहे कांग्रेस के वरिष्ठ नेता प्रेम सिंह कुशवाह ने शुक्रवार को चूहे मारने की दवा खाली।

- दक्षिणी कश्मीर के पुलवामा जिले के त्राल में शुक्रवार को सुरक्षा बलों ने जैश के पाकिस्तानी आतंकी को मार गिराया।

- भारतीय पत्रकार स्वाति चतुर्वेदी को साहस के लिए 2018 का रिपोर्टर्स विदाउट बॉर्डर्स प्रेम फ्रीडम अवॉर्ड मिला।

■ 10 नवम्बर

- श्रीलंका के राष्ट्रपति मैत्रीपाला सिरिसेना ने संसद भंग कर दी।

- ब्रिटेन की बर्मिंघम क्राउन कोर्ट ने भारतीय मूल के दुकानदार की मौत के मामले में पुलिस अधिकारी जैसन बैनिस्टर को 18 माह जेल की सजा सुनाई।

- भाजपा और अन्य दक्षिण पंथी संगठनों

के विरोध के बीच कर्नाटक में टीपू सुल्तान की जयंती मनाई गई।

■ 11 नवम्बर

- दिल्ली- स्पेशल पुलिस सेल ने 2 लाख के नक्सली इनामी अजीतराय को गिरफ्तार किया।

- महिन्द्रा राजपक्षे ने राष्ट्रपति मैत्रीपाला सिरिसेना की श्रीलंका फ्रीडम पार्टी 50 साल पुराना गठबंधन तोड़ा।

- केन्द्रीय सतर्कता आयोग को सीबीआई प्रमुख आलोक वर्मा के खिलाफ 2 करोड़ की रिश्वत के ठोस सबूत नहीं मिले।

■ 12 नवम्बर

- केन्द्रीय मंत्री अनंतकुमार का निधन हुआ वे 59 वर्ष के एवं कैंसर से पीड़ित थे।

- सुप्रीम कोर्ट ने अयोध्या विवाद पर जल्दी करने से इन्कार कर दिया।

- छत्तीसगढ़ में विधानसभा चुनाव के पहले चरण में 72% मतदान हुआ।

■ 13 नवम्बर

- ललितपुर- जिले के बानपुर में छिदामी ने शराब के नशे में 3 पुत्रियों को हथौड़े से मारकर जलाया।

- पेरिस : फ्रांस की पुलिस ने एक लकजरी कार से शेर का शावक बरामद किया।

- फ्लिपकार्ट के सह संस्थापक और ग्रुप के सी. ई. ओ बिन्नी बंसल ने इस्तीफा।

■ 14 नवम्बर

- सुप्रीम कोर्ट ने रफाल डील में भ्रष्टाचार की जाँच की मांग पर फैसला सुरक्षित रखा।

- श्रीलंका संसद में प्रधानमंत्री महेन्द्र राजपक्षे के विरोध में अविश्वास प्रस्ताव पारित हुआ।

- नाभा (पंजाब) एस.बी. आई के गार्ड

की हत्या कर 2 लुटेरों ने 50 लाख रुपये लूटे।

■ 15 नवम्बर

- फर्जी डिग्री मामले में ए.बी. वी.पी ने दिल्ली विश्व विद्यालय के अध्यक्ष अकिव बसोया को निलम्बित किया।

- अशीण कुंद्रा मिजोरम के नये मुख्य चुनाव अधिकारी नियुक्त हुए।

■ 16 नवम्बर

- वाराणसी: महिला डाक्टर शिल्पी राजपूत ने जहर का इंजेक्शन लगाकर आत्महत्या की।

- तमिलनाडू में 120 किमी. की गति से गजा तूफान ने तबाही मचाई 23 लोग मरें 42 हजार लोग बेघर हुए।

- 1954 में एम बी बी एस की डिग्री लेने वाली एशिया की पहली महिला डॉक्टर टी. एस. कनक का निधन हुआ वे 86 वर्ष की थी।

■ 17 नवम्बर

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी मालदीव नव निर्वाचित राष्ट्रपति इब्राहिम मोहम्मद सोलिह के शपथ समारोह में गये।

- 1971 की लोगों वाल की जंग के हीरो ब्रिगेडियर कुलदीप सिंह चाँदपुरी का निधन हुआ वे 74 वर्षीय महावीर चक्र से सम्मानित थे।

- विज्ञापन व रंग मंच के मशहूर कलाकर एलीक पदमसी का निधन हुआ।

■ 18 नवम्बर

- फेसबुक के जरिये आतंकी बनाने वाली महिला शाजिया गिरफ्तार हुई।

- अमृतसर : निरंकारी सत्संग पर आतंकी हमला हुआ बम से 3 मरे 20 घायल हुए।

- बागपत: (यू.पी.) 1800 साल पुराने तांबों के सिक्के मिले 1 वें कुषाण कालीन थे।

■ 19 नवम्बर

- इन्दौर : मल्हारगंज थाना क्षेत्र के

क्षीपाबाखल में तीन लोग जिंदा जले सलीम, नजमा बानो, पोता कासिम को बचाने के चक्कर में जिंदा जले।

■ 20 नवम्बर

- दिल्ली की एक कोर्ट ने 1984 के सिक्ख विरोधी दंगों में दो लोगों की हत्या के दोषी यशपाल सिंह को मृत्युदंड की सजा सुनाई।

- ग्वालियर- स्काय लार्क पार्क स्कूल पढ़ने वाले कक्षा 3 के छात्र सूरज नरवरिया की ऑटो से गिरने के बाद मौत हुई ऑटो में 19 बच्चे थे।

- सी. बी. आई. डायरेक्टर आलोक वर्मा एवं वकील को सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस ने जबाब लीक होने पर फटकार लगाई।

■ 21 नवम्बर

- इंडोनेशिया में मृत के पेट से 6 किलो प्लास्टिक निकला।

- जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल सत्यपाल मलिक ने विधानसभा भंग कर दी।

- दक्षिण कोरियास के किमयांग इंटर पोल के अध्यक्ष बने।

■ 22 नवम्बर

- भारत में जन्मी पाकस्तानी शायरा फहमादी नहीं रहीं। वे 73 वर्ष की थी।

- केन्द्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने देश के 539 बाल कल्याण केन्द्र बंद किये।

- इस्लामाबाद : एयरपोर्ट पर फ्लाइट रद्द होने पर पाक के पर्यटन मंत्री ने अपने सामान में आग लगाई।

■ 23 नवम्बर

- प्रसिद्ध कथाकार हिमांश जोशी का

निधन हुआ वे 83 वर्ष के थे।

- अनंतनाग (जम्मू कश्मीर) जिले के जंगलों सुरक्षाबलों से हुई मुठभेड़ में लश्कर के 6 आतंकी ढेर हुए।

- पान मसाले राजश्री व केसर ब्रांड में केसर पैदा करने वाला रसायन गौबेयर के मिलने की पुष्टि हुई।

■ 24 नवम्बर

- पूर्व केन्द्रीय मंत्री वाय एस चौधरी के घर ऑफिस पर ईडी का छाया पड़ा वे टीडीपी के सांसद हैं।

- मांड्या (कर्नाटक) जिले के कनागा नामराड़ी में बस नहर में गिरि 9 बच्चों सहित 30 लोग मरे।

- 35 साल की मैरीकॉम ने 6 गोल्ड मैडल जीते दुनिया की पहली बॉक्सर बनी।

■ 25 नवम्बर

- शोपियाँ (जम्मू कश्मीर) सुरक्षा बल की मुठभेड़ में 6 आतंकी मारे गये एक जवान नाजिर अहमद शहीद हुए।

- पूर्व रेलमंत्री सी. के. जाफर शरीफ का निधन हुआ। वे 85 वर्ष के थे 1991 से 1995 तक रेलमंत्री रहे।

- पेरिस : फ्रांस में डीजल भाव वृद्धि के खिलाफ 80000 लोग सड़क पर उतरे।

■ 26 नवम्बर

- रायबरेली : जेल के बरैक में कैदियों को शराब पीते पकड़ा गया जेल अधीक्षक सहित 6 अधिकारी सस्पेंड हुए।

- अमेरिका और कनाडा की सीमा से लगे ग्रेट लेक्स क्षेत्र में बर्फ का तूफान आने से 1600 उड़ानें रद्द हुईं।

- छत्तीसगढ़ : सुकमा जिले के किस्टाराम में मुठभेड़ में 6 महिला सहित 4 नक्सली ढेर हुए एवं 2 जवान शहीद हुए।

■ 27 नवम्बर

- पंजाब के मंत्री नवजोत सिंह सिद्धू ने पाक प्रधानमंत्री इमरान खान को फरिश्ता कहा।

- प्रसिद्ध पार्श्व गायक मोहम्मद अजीज का निधन हुआ वे 64 वर्ष के थे।

- मलेशिया: सुबांग में श्री महा मरिया माँ के मंदिर को हटाने के विवाद में हिंसा भड़की उपद्रवियों ने बाहर खड़े वाहनों में आग लगाई।

■ 28 नवम्बर

- म.प्र विधानसभा चुनाव के लिए 75% मतदान हुआ।

- सुप्रीम कोर्ट ने बिहार के शेल्टर होम में हुए योन शोषण की जाँच सी.बी.आई. को सौंपी।

विप्रो चेयरमेन अजीम प्रेम जी को फ्रांस का सर्वोच्च सम्मान नाईट ऑफ दलीजियन ऑनर से सम्मानित किया गया।

■ 29 नवम्बर

- अमेरिका ने इस साल पाकिस्तान को 20151 करोड़ रुपये की रक्षा सहायता रोकी।

- इसरो ने पृथ्वी की निगरानी करने हायसिस और आठ देशों के 30 उपग्रह सफलता पूर्वक भेजे।

- पश्चिम बंगाल में जहरीली शराब पीने से 11 मरे।

■ 30 नवम्बर

- बैंकॉक- एक कार ने थाईलैंड के खाओ याई नेशनल पार्क में हाथी को टक्कर भारी हाथी ने ड्रायवर को मार डाला।

- अच्छे दाम, कर्म मुक्ति की माँग को लेकर 24 राज्यों के किसान दिल्ली पहुँचे।

- हाईकोर्ट ने हास्यकला कार राजपाल यादव को 5 करोड़ के कर्ज मामले में 3 माह के लिये जेल भेजा।

इसे भी जानिये

कौन है अविष्कारक किसका

हेनरी फोर्ड-
जी. डाइमलर (1885)-
ग्राह्व बैल (1876)-
ग्राह्व बैल (1876)-
ब्रेकेट (1909)-
बुशनैल (1776)-
कैक्सटन (1455)-
कोल्ट (1835)-
डेमलर (1876)-
हम्फ्री डेवी (1816)-
निकोलस ऑटो (जर्मन) 1876-
थॉमस कॉक (ब्रिटेन) 1847-
एडीसन थॉमन अल्वा (1878)-
माइकल फैराडे (1939)-
फ्रेंकविल (1930)-
फुल्टन (अमरीका) 1807-
जिलेट-
गुहनवर्ग (1455)-
जेम्स पकल (1862)-
गैलीलियो (1609)-
हाइजन (1657)-
इलियास हो (1846)-
रिचार्ड हो-
जेम्सवाट (1764)-
मैकमिलन (1842)-
मौसर-
मरकेटर-
मरगेन्थलर (1852)-
मोंटगोल्फियर (1783)-
पारकल-
स्विंटन (1914)-
शोलज (1868)-
डब्ल्यू. शोकले (1956)-
टोरीसेली (1644)-
आर.ए. वॉटसन वाट (1919)-
राइट ब्रदर्स (1903)-
वाटर मैन (1884)-
जिंस-
फर्डिनेंड कैरे (1858)-

मोटर कार मेन्यूफैक्चर
मोटर कार अथवा ऑटोमोबाइल
टेलीफोन
माइक्रोफोन
हैलीकॉप्टर
सबमेरीन
छापाखाना
रिवाल्वर
गैस इंजन
सेफ्टी लैम्प
इंटरनल कम्बश्चन इंजन
रबर टायर
इलैक्ट्रिक बल्ब तथा ग्रामोफोन
डायनमो
जेट प्रोपलशन
स्टीमवोट
सेफ्टी रेजर
छापने की कला
मशीन गन
टेलिस्कोप
पेण्डुलम वाली घड़ी
सिलाई मशीन
रोटरी प्रिंटिंग प्रेस
भाप का इंजन
बाइसिकिल
रायफल की मैगजीन
आकाश तथा पृथ्वी का ग्लोब
लिनोटाइप
बैलून
गणना की मशीन
मिलिटरी टैंक
टाइपराइटर
टांजिस्टर
बैरोमीटर
रडार
ऐरोप्लेन
फाउण्टेन पेन
कैमरा तथा लेंस
रेफ्रिजरेटर



दिशा बोध पंडित कौन



01. उपादेय क्या है ?
उत्तर. गुरु के वचन उपादेय है।
02. हेय क्या है ?
उत्तर. नहीं करने योग्य पाप कार्य।
03. गुरु कौन हैं ?
उत्तर. जिसने तत्त्व को समझ लिया है जो निरंतर सभी प्राणियों के हित में लगा रहता है।
04. व्यक्ति को शीघ्र क्या कार्य करना चाहिए ?
उत्तर. व्यक्ति को संसार नष्ट करने का कार्य करना चाहिए।
05. मोक्षरूपी वृक्ष का बीज क्या है ?
उत्तर. क्रिया सहित सम्यग्ज्ञान मोक्ष रूपी वृक्ष का बीज है।
06. मार्ग में भोजन क्या है ?
उत्तर. मार्ग में भोजन धर्म है।
07. इस लोक में पवित्र कौन हैं ?
उत्तर. इस लोक में पवित्र वहीं है जिसका मन शुद्ध हो।
08. पंडित कौन है ?
उत्तर. पंडित वही जो विवेकी हो।

प्रश्नोत्तर रत्न मालिका से

नववर्ष में नया संदेश

* चंचला संतोष जैन (इन्दौर) *

पूरे भारत वर्ष में नये वर्ष के उत्साह व नये वर्ष के स्वागत में बच्चे से लेकर वृद्ध उत्साहित रहते हैं। इस नये वर्ष का उत्साह, खुशी, क्या वास्तव में सुख को लाने वाली है।

हमारा शरीर जीवन रूपी आयु बढ़ती जा रही है और अंतिम श्वास कब रुक जाये, कब सिमट जाए, पता नहीं न जाने कितने वर्ष नये वर्ष के स्वागत में आये और चले गये, हर नया वर्ष आता है नया संदेश लेकर कि अब तो जाग जाओ, तुम्हारे जीवन का क्या उद्देश्य है ? तुम्हे मानव जन्म कितनी जन्मों के पुरुषार्थ स्वरूप, अनंत जन्मों के पुण्यों का प्रतिफल है, बहुत दुर्लभ है यह मानव तन, कही व्यर्थ न हो जाये नया वर्ष बताने आया है कि मानव जन्म का लक्ष्य व उद्देश्य क्या है। सही मायने में।

क्या धन, एश्वर्य, ख्याति, लाभ, कीर्ति, यश, नाम, परिग्रह सुख संशोधनो का उपलब्धि ये ही तुम्हारा लक्ष्य है ? नहीं इनमें तो दुख और अशांति भरी पड़ी है।

हमें मिला है यह नर तन एक सौगात के रूप में स्वयं की पहचान पाने के लिये मैं कौन हूँ ? जाना कहा है ? इस जीवन का उद्देश्य क्या है ?

शरीर की पहचान से स्वयं की पहचान समझता है, मानव पर यह सब मिथ्या मान्यता है। इसे ही बदलना है नये वर्ष में, इस मिथ्या भ्रान्ति का अंत करना है। यह मानव जन्म सत्य को प्रकाशित करने मिला है हमें।

नया वर्ष हमें जागने आया है बतला रहा है स्वयं को जानो ये पर्याय विनाशी है इस आयु का भरोसा नहीं, कब अंत को प्राप्त हो जाये। तुम तो अजर अमर अविनाशी तत्व हो। ये पुद्गल में अंत बुद्धि, एकत्व कर्तव्य भोक्तृत्व बुद्धि करते हो, शरीर से ममत्व रखते हो, वास्तव में तुम नहीं थे। अब तो करो दृष्टि, अपने चैतन्य श्वासवत् अविनाशी स्वरूप पर नया वर्ष आया है नया संदेश देने।

नया वर्ष कह रहा है जाग जाओ मैं उजाला लेकर आया हूँ पिछले अंधेरे को समाप्त करो, पुरानी भ्रान्तियों को, मैं तो हमेशा आता रहूँगा इस झूठे शरीर, पर्याय, का जो क्षणिक है, जिसे तुमने अपना माना है, अब अंत करो अपने मिथ्या अभिप्राय को मान्यता को बदलो, दिग्दर्शित होगा तुम्हे तुम्हारा स्वरूप। आत्मा को पहचानो स्वयं को जानो नये वर्ष में यही तुम्हारी सबसे बड़ी उपलब्धि है।

जब तुम्हारी मान्यता बदलेगी तभी वास्तव में नये वर्ष का स्वागत होगा, तुम्हारी उल्टी मान्यता का होगा विक्षेप जब महसूस होगा, अरे मैं इतने वर्षों से अंधेरे में था, आज उजाला लेकर आया है नया वर्ष।

तभी होगा विलय, ईर्ष्या द्वेष, जलन, वैमनस्य, कटुता, कषायों, का क्रोध, यश, कीर्ति, लाभ, अलाभ, भय, चिंता अरति, रति, तृष्णा, जीवन में पलायन होगा, तभी होगा खुशी का साम्राज्य, सच्चे सुख का आभास, वास्तव में तभी होगा नये वर्ष का स्वागत, जब चैतन्यता की सुधि आयेगी, वही से नया संवेरा होगा जहाँ अनंत संभावनाओं से परम पराकाष्ठा, को पाने की धुन होगी वही से सुख शांति की शुरुआत होगी, अरहंत सिद्ध अवस्था पाने का जिसका लक्ष्य होगा, वही कर पायेगा सही मायने में नये वर्ष का स्वागत।

नया वर्ष प्रकाश लेकर आया है, कह रहा है तुम अंधेरे से बाहर आओ, अपने नये स्वरूप को जानो, तुम तो अनंत गुणों से समाहित प्रकाशवान हो स्वयं को देखो, तीर्थंकर वीतराग भगवान तुम्हे राह दिखा रहे, उस प्रकाशित मार्ग पर चलो अरहंत भगवान कह रहे हैं कि मैंने मार्ग प्रकाशित किया है उसी रास्ते पर चलते चलो तुम्हें तुम्हारा लक्ष्य अवश्य प्राप्त होगा यही से सत्य रूप में नये वर्ष का स्वागत होगा, इसी के साथ समस्त जीवों को नये वर्ष की शुभकामनायें।

आओ सीखें : जैन न्याय

विवेक ख्याति विपर्यय की समीक्षा

मीमांसक दर्शन मीमांसक प्रभाकर के अनुयायी विपर्ययज्ञान में विवेक ख्याति को स्वीकार करते हैं। उनकी अवधारणा है कि सीप में चाँदी है, ऐसा यह ज्ञान एक नहीं है अपितु दो ज्ञान है। इनमें एक ज्ञान प्रत्यक्ष ज्ञान है दूसरा स्मरण ज्ञान है, क्योंकि इन दोनों ज्ञानों के कारण भी भिन्न-भिन्न है और विषय भी भिन्न-भिन्न है। यह एक प्रत्यक्ष ज्ञान है उसका कारण इन्द्रिय है और चाँदी स्मरण ज्ञान उसका कारण संस्कार है। अतः भिन्न विषय तथा भिन्न कारण होने से यह चाँदी है। यह दोज्ञान ही मानना चाहिये। इस तरह अपनेपक्ष को सिद्ध करने के लिये प्रभाकर मीमांसक कुछ इस प्रकार तर्क देते हैं

तर्क 1 - अतीत चाँदी का भी दोष की वजह से अतीत रूप प्रतिभास नहीं होता है क्योंकि सामने वर्तमान सीप में पहले देखी हुई चाँदी में समानता होने से उस समानता का अवलम्बन पाकर जो ज्ञान उत्पन्न होता है वह ज्ञान सीप और चाँदी में भेद ग्रहण होने से चाँदी के स्मरण में कारण होता है किन्तु मैं चाँदी का स्मरण करता हूँ, उस काल में यह बोध नहीं होता इसलिये इसे स्मृति प्रमोष अथवा विवेकाख्याति कहते हैं।

तर्क 2 - जो स्मृति प्रमोष को विपरीतख्याति मानते हैं उनके मत में बाह्य चाँदी के न होने पर भी चाँदी का ज्ञान चाँदी की प्रतीति करा देता है। वैसे ही सभी ज्ञान बाह्य अर्थों के अभाव में भी उनका ज्ञान करा देंगे। अतः इसे स्मृति प्रमोष ही मानना चाहिये।

जैन पक्ष स्मृति प्रमोष को अमान्य करते हुये जैनार्थों ने सीप में यह चाँदी है, ये दो ज्ञान नहीं है, अपितु एक ही ज्ञान है। अपने पक्ष को सिद्ध करने के लिये अपने तर्क दिये हैं, वे निम्न हैं -

तर्क 1. - चक्षु आदि सामग्री विषय भी एक है। सीप का टूकड़ों को काच का कामिल आदि दोषों के कारण चक्षु चाँदी के रूप में दिखलाई देता है दोषों का यह काम है कि वे अविद्यमान वस्तु का ज्ञान करा देते हैं।

तर्क 2 - यह चाँदी है इस ज्ञान में सीप किस रूप में काम करती अकारण रूप से (ब) विषय रूप से अ पक्ष तो ठीक नहीं है क्योंकि यह चाँदी है इस ज्ञान का कारण यदि सीप है तो जहाँ वास्तव में चाँदी है वहाँ जैसे चक्षु आदि के न होने पर चाँदी का ज्ञान नहीं हो सकता है वैसे ही सीप के न होने पर चाँदी का ज्ञान नहीं हो सकते हैं क्योंकि आप सीप को चाँदी ज्ञान का कारण मानते हैं।

तर्क 3 - अब यदि ब पक्ष को स्वीकार करते हैं तो यह सिद्ध होता है कि इस ज्ञान का सीप है अतीत चाँदी नहीं। अतः यह चाँदी का ज्ञान एक ही है और विषय भी एक ही है।

तर्क 4 - यह शब्द भी परोवर्ती है चाँदी शब्द चाँदी को ही बतलाता है न कि किसी विषयान्तर को। अन्यथा वास्तविक चाँदी के ज्ञान में भी विषयान्तर का प्रसंग आयेगा क्योंकि चाँदी के स्वरूप मात्र का प्रतिभास दोनों ज्ञान में समान रूप से है।

तर्क 5 - यदि सीप में यह चाँदी है इस ज्ञान का विषय यह देखी हुई चाँदी है तो वहाँ चाँदी का प्रतिभास अतीत रूप से ही होना चाहिये और उस अवस्था में ज्ञाता की प्रवृत्ति उस चाँदी में नहीं होना चाहिये क्योंकि अतीत वस्तु को प्राप्त करना शक्य नहीं है। अतः इस ज्ञान का विषय सीप ही है।

तर्क 6 - भेद की प्रतीति न होने मात्र प्रवृत्ति में कारण नहीं हो सकता है। ज्ञाता की प्रवृत्ति का कारण सामने चाँदी का दिखाई देना है न कि भेद की प्रतीति न होना।

तर्क 7 - मीमांसक का कहना है कि यद्यपि इस ज्ञान का विषय अतीत चाँदी है फिर भी चाँदी का यह ज्ञान सामने वर्तमान वास्तविक चाँदी के ज्ञान के समान ही होता है इसी से तो उसमें पुरुष की प्रवृत्ति होती है मीमांसक के इस कथन पर जैनार्थ कहते हैं कि तब तो यह ज्ञान वर्तमान वस्तु का ज्ञान नहीं कराता है इसलिये अतीत चाँदी का प्रतिभास कराने वाले ज्ञान के तुल्य ही हुआ अतः तुल्य होने से परोवर्ती वस्तु उसे प्रवृत्ति नहीं करना चाहिये क्योंकि अतीत चाँदी के ज्ञान में ऐसा नहीं देखा जाता है। इस ज्ञान का विषय यद्यपि सीप है इसलिये विषयभेद नहीं माना जा सकता है।

तर्क 8 - अब यदि दो ज्ञान माने जाते हैं तो इन ज्ञान की उत्पत्ति क्रम से होती है अथवा युगपत् क्रम से तो हो नहीं सकते हैं क्योंकि यह तो इस प्रत्यक्ष ज्ञान से पहले चाँदी का स्मरण होता है अथवा बाद में प्रथम पक्ष ठीक नहीं है क्योंकि यह इस प्रत्यक्ष ज्ञान के होने से पहले चाँदी स्मरण का बीज जो संस्कार है उस संस्कार का प्रबोध कोई कारण ही नहीं है जिससे पहले देखी चाँदी का स्मरण हो जाये और पूर्व संस्कार के प्रवृद्ध होने पर स्मृति होने से ज्ञान के युगपत् होने का प्रसंग आयेगा। दूसरा पक्ष भी ठीक नहीं है क्योंकि 'यह' इस प्रत्यक्ष ज्ञान के पश्चात् होने वाला चाँदी का ज्ञान चक्षु व्यापार रुक जाने पर भी उत्पन्न हुआ कहलाया और 'यह चाँदी है' यह ज्ञान आँखबंद करने के बाद भी होना चाहिये इस तरह यह क्रम ज्ञान प्रतीति विरुद्ध है।

और ज्ञान की उत्पत्ति युगपत् हो नहीं सकती, क्योंकि मीमांसक मत में इन्द्रिय ज्ञान को युगपत् स्वीकार नहीं किया जाता है।

तर्क- स्मृति प्रमोष किसे कहते हैं ?

क्र.	मीमांसक स्वरूप मत	बाधा
1.	स्मृति के नाश होने का नाम स्मृति प्रमोष है।	जब धूम को देखकर अग्निकोजान लेते हैं तब धूम और अग्नि का संबंध नष्ट हो जाता है यह भी स्मृति प्रमोष कहा जायेगा।
	अथवा	
2.	प्रत्यक्ष के स्मृति के एकत्व अध्यवसाय का नाम स्मृति-प्रमोष है।	विषय और स्वरूप दोनों के एकत्व अध्यवसाय बनने में बाधा आती है।
	अथवा	
3.	स्मृति का प्रत्यक्ष रूप होने का नाम स्मृतिप्रमोष है।	क्योंकि जब स्मृति रूप को छोड़कर प्रत्यक्ष रूप हो जायेगी स्मृति रूप नहीं रहेगी तब उसे स्मृतिप्रमोष कैसे कहा जा सकता है?
	अथवा	
4.	'वह इस अंश का अनुभव होना' स्मृति प्रमोष है।	वह चाँदी इस ज्ञान को मीमांसक एक ही स्मरण ज्ञान मानते हैं यह शब्द का प्रमोष होने पर चाँदी का प्रमोष होगा।
	अथवा	
5.	स्मृति के तिरोभाव का नाम स्मृतिप्रमोष है।	यह तिरोभाव ज्ञान के युगपत् सिद्ध होने पर ही संभव है। ज्ञान का युगपत् मीमांसकों को स्वीकार नहीं है।

निष्कर्ष- इस प्रकार की विपरीत ख्याति को विवेकाख्याति या स्मृति प्रमोष सिद्ध नहीं होता है।

कहानी
कसक

भोपाल के नीले अम्बर को निहारते हुये कुछ खोये खोये से छत पर टहल रहे आदित्य विक्रम छत के बीचों बीच खड़े हो गये रोज की तरह आज टहलने में मन नहीं लग रहा था कुछ देर टहलते फिर खड़े हो जाते थे फिर टहलने लगते थे आकाश में उन्होंने देखा और एक तेज फाइटर विमान सुखोई की थी उन्होंने सुखाई को उड़ान भरते हुए देखा गांधीनगर



स्थित अपने बंगले की छत पर विमान को देखकर चहक उठे तभी उनका पोता आर्यन ऊपर आया और उसने अपने दादाजी को अचानक बच्चों जैसे चहकते देखा तब उसने कहा दादू क्या बात है। आज तो आप हम जैसे बच्चे बन गये तब आदित्य विक्रम ने आर्यन से कहा नहीं बेटे तुम मुझे समझने में चूक गये हो आर्यन ने कहा दादू अब चूक नहीं सकते हैं और अब 10वीं क्लास पढ़ने लगे है इतने सालों से आपके अनुभव सुनते सुनते हम भी अच्छी तरीके से फेस रीडिंग करने लगे हैं। तब आदित्य विक्रम ने कहा आर्यन तो तब तुम चूक ही गये हो मैं बच्चों जैसा नहीं चहका हूँ अपितु एक नौ जवान जैसा धांधू मचाने लगा हूँ। अभी बेटा यहां से एक फाइटर विमान निकला उसे देखा था उसकी उड़ान देखकर मेरा मन भी भीतर से उछल पड़ा और हाथ पैरों में वही जोश आ गया जो कभी वायु सेना के समय रहते आता था। आर्यन ने कहा दादा जी आज अच्छा दिन है पाँच दिसम्बर है और मेरे स्कूल की छुट्टी भी है मैं

आपसे सुनूंगा आज पूरी वो कहानी जो आप कई बार मुझे सुनाना चाहते हैं दादाजी ने कहा बिल्कुल बेटे आज का दिन सबसे अच्छा दिन आज मैं तुम्हें पूरी कहानी सुना ही देता हूँ। 5 दिसम्बर सन् 1971 की बात है जब भारत व पाकिस्तान का घमासान युद्ध चल रहा था भारत युद्ध में सफलता का इतिहास लिख रहा था मैं उस समय वायुसेना का चीफ मार्शल था गुप्तचरों

की सूचना आई थी एक पेटनटेंको की पूरी ट्रेन भारत की तरफ बढ़ रही है यदि इस ट्रेन को निशाना नहीं बनाया गया तो हमारी सफलता का इतिहास अधूरा रह जायेगा। मेरे बॉस ने मुझे एक रणनीति दी और अभियान मुझे मिला मेरा मन भीतर से उछल पड़ा कि मुझे भी भारत माता के सेवा करने का एक अवसर मिल रहा है मेरे बॉस ने यह भी कहा था काम बहुत सावधानी से करना है रिस्क भी बहुत है हम तुम जैसे अधिकारी को खोना नहीं चाहते हैं क्योंकि अभी तुमसे भारत माता के लिये बहुत आशा है। मैंने अपने अधिकार को नमस्कार किया और अपने मिशन पर निकल पड़ा एयरवेस से हमारे विमान ने उड़ान भरा और ठीक उसी जगह पहुंच गया जहां पेटनटेंको की ट्रेन छप्क छप्क करती आगे बढ़ रही थी हमारा निशाना बिल्कुल ठीक पड़ा अट्टाईस बम एक साथ ट्रेन पर गिरे एक भी बम का निशाना नहीं चूका पूरे के पूरे टैंक ध्वस्त हो गये हमारा विमान लौटकर अपने स्थान पर आ रहा था पाकिस्तानी एयरगन हमारे विमान को

निशाना किया और गन अपने निशाने पर सफल हुआ पाकिस्तानी एयर गन से हमारे विमान में दो छर्रे लगे विमान में छर्रे लगते ही विमान में आग लगना शुरू हो गया।

आर्यन ने फिर बीच में ही दादू से कहा आप तो फिर बहुत घबड़ा गये होंगे दादू ने कहा नहीं हमने यह सोचा कि अगर हम शरीद हो जायेंगे तो अभी हमारा सपना अधूरा रहेगा क्योंकि हम यह समझ रहे थे कि हम अपनी शरहद पर आ चुके हैं। और मौत आने के पहले घबड़ाना हमारे स्वभाव में ही नहीं था हम यह सोचते थे जब तक स्वांस न रूक जाये तब तक हमें अपने प्रयास करने पीछे नहीं हटना चाहिए। आर्यन बेटे आधुनिक युद्ध शरीर की ताकत से नहीं अपितु मस्तिष्क की बुद्धि से लड़े जाते हैं आयी हुई विपत्ति में जो धैर्य से काम लेता है वही सफलता को प्राप्त करता है और जो विपत्ति आने पर धबड़ा जाता है तो वह जान बूझ कर मौत को अपने पास बुला लेता है आर्यन ने पूछा दादू जब आग लग गई होगी उस समय विमान कितने ऊँचे थे। तब आदित्य विक्रम ने थोड़ी देर चुप रहकर के अपनी स्मृति पर जोर लगाया और कहा बेटे उस समय विमान चार हजार फिट ऊँचाई पर उड़ रहा था तब मैंने एक बात और सोची की यदि पैराशूट खोलता हूँ और कही दुश्मन के हाथ लग गया तो उससे तो अच्छा है कि शहीद हो जाऊँ पर दूसरा विचार मेरा यह आया और संभावना भी नजर आई कि शायद हम अपनी मातृभूमि की शरहद पर ही उतरेंगे पर नियति को कुछ और ही मंजूर था विमान की आग बढ़ती गई और वह धीरे-धीरे नीचे गिरने लगा मैंने भी पैराशूट खोल ही लिया धीरे-धीरे नीचे आने लगा जैसे ही मैं जमीन पर आया मैंने पैराशूट हटाया और चारों तरफ देखा तब मुझे मालूम पड़ा कि मैं पाकिस्तान की सरजमीं पर खड़ा हूँ और भारत की सरहम मात्र दो सौ मीटर दूर है मैं भारत की तरफ लपका परन्तु इसी बीच

आवाज आई हैंडसप मैंने हाथ ऊँचे कर दिये क्योंकि मैंने देखा चारों तरफ से बन्दूक की नौके मेरी ओर थी मेरे हाथ ऊँचे करते ही मुझे युद्ध बन्दी बना लिया गया पहले मेरी तलाशी ली गई और फिर मुझे पाकिस्तानी सेना के वाहन में ले गये फिर मुझे राउनपिंडी जेल ले जाया गया और युद्ध बन्दी बना लिया गया जेल के चारों तरफ चीतकार ही चीतकार सुनाई दे रही थी मुझे सबसे पहले उन्होंने निर्वस्त किया और मेरे ऊपर घड़ो ठण्डा पानी डाल दिया जो पानी बर्फ से भी ज्यादा ठण्डा था फिर मुझे पूरी रात निर्वस्त्र ही पत्थर की ठण्डी जगह पर सुलाया गया दूसरे दिन रात बीतने के बाद सुबह-सुबह जेल अधिकारियों के साथ कुछ जल्लाद टाईप के लोग आये बेटा आर्यन उन्होंने मुझे टेनिस के रैकट से मारना शुरू कर दिया और आर्यन मैं जब तक अचेत नहीं हो गया तब तक वे मुझे मारते रहे वे भारत की सेना की परिस्थिति पूछ रहे थे मैंने सोच लिया था मर सकता हूँ पर अपने देश के साथ गद्दारी नहीं कर सकते हैं फिर उन्होंने मुझे प्रलोभन देना शुरू कर दिया और कहने लगे कि तुम अपने देश लौट सकते हो व शर्त है कि तुम यह बता दो कि तुम्हारे देश में पेट्रोल पम्प सरहद से लगकर कितने हैं मैं इस विषय में चुपचाप रहा तो उन्होंने मुझ रायफल की बटों से मारना शुरू कर दिया रोज हमारी पिटाई होती थी किसी दिन तो वे खाट के पाय के नीचे मेरे हाथ रखवा देते थे फिर ऊपर से वे कूदा करते थे उनकी मारपीट से एक-एक हड्डी मेरे टूट चुकी थी संवेदनाएँ समाप्त हो चुकी थी बस इतना पता लगता था कि कोई कुछ कर रहा है। जब वे मेरे भारत के बारे में पूछते थे तो मैं सिर्फ मौन धारण कर लेता था वे मेरा गला दबाते थे मुंह दबाते थे कभी प्यार से पुच कारते थे और कई प्रकार के हथकण्डे अपनाते थे और वे सोचते थे कि कहीं मैं टूट जाऊँ और कुछ उगल दूँ परन्तु मैं यह सोचता था कि मैं अपनी जान बचाने के लिए देश के साथ गद्दारी तो कर

लूगा किन्तु ये देश के दुश्मन मेरे से सुराख लेने के बाद मुझे निश्चित तौर पर मार ही डालेंगे जब मारना ही है तो भारत माता के साथ वफादारी करके ही मरेंगे पाँच महीने आठ दिन की हवालात के बाद आँखों पर पट्टी बांधकर भारत देश की सीमा पर छोड़ा है जब मुझे उन्होंने कोको कोला पीने के लिये दिया तब मैंने उसे हाथ से भी नहीं छुआ उन्होंने कहा यह कोकोकोला, स्विस्सलैण्ड का है तब मैंने वह कोकाकोला पिया आज भी मैं कभी कभी यही सोचता हूँ कि मुझे एक अवसर मिलें।

बेटा आर्यन कभी कभी कुछ ऐसी बातें होती हैं जो जिंदगी भर खटकती रहती है और एक लम्हें की भूल और एक क्षण का गलत निर्णय जिंदगी भर के लिये एक निर्णय बन जाता है।

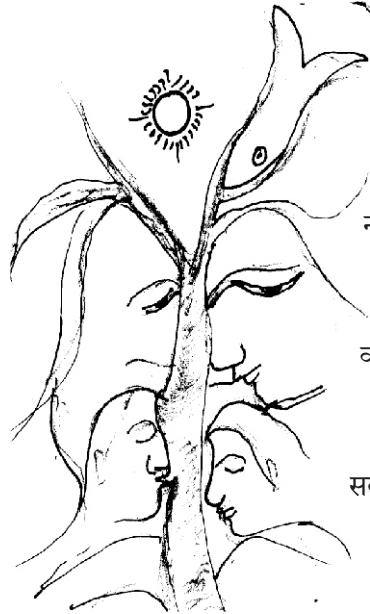
आर्यन ने दादाजी से कहा कि दादू अब आप क्या सोचते हैं क्या आपको ऐसा लगता है कि जिंदगी मुझे कर्ज के रूप में मिली है।

आदित्य विक्रम ने कहा कि सचमुच में आर्यन मैं ऐसा ही मानता हूँ कि जब जेल में मेरे साथ मारपीट की जाती थी और मुझसे कुछ उगलवाने की कोशिश की जाती थी तब मैं सोचता था काश मैं विमान में ही शहीद हो जाता तो कितना अच्छा होता परन्तु मैं अपने भाग्य को ही कोशता रहा आज भी मैं यही सोचता हूँ कि मुझे एक बार फिर सेना में मुझे अगर अवसर दिया जाये तो मैं शहीद हो जाऊँ गा और एक मन में जो हमेशा कि कसक है उसे पूरा कर लूंगा आर्यन ने कहा सचमुच में दादू आपकी इस कसक के साथ मैं भी हूँ आप और हम दोनों सेना में भरती हो जायेंगे और एक बार पाकिस्तान से दो-दो हाथ करके मिटा लेंगे अपने मन की कसक।

कविता

नववर्ष

* सुभाषचन्द्र सरल (अशोकनगर) *



नव वर्ष का नूतन विहान, उज्ज्वल अनन्त आसमान।
स्वप्निल सजीली रश्मियों से, गुंजायमान, प्रकाशमान।
नव वर्ष का नूतन विहान.....

भास्कर की प्रथम किरण सम, भोर का सन्देश देता।
चन्द्र की शीतल किरण सम, शान्ति का उपदेश देता।
न्याय नीति से छू सकें हम, प्रगति का समुन्नत आसमान।
नव वर्ष का नूतन विहान.....

हिंसा का तम दूर भगायें, दया और करुणा अपनायें।
वात्सल्य का भाव जगाकर, जीवन अपना सफल बनायें।
भाईचारे से, बढ़ायें हम, संस्कृति की उज्ज्वल शान।
नव वर्ष का नूतन विहान.....

सब धर्मों का सम्मान करें हम हर पूर्वज का मान रखें हम।
वर्ग भेद को दूर भगायें राष्ट्र प्रेम का भाव जगायें।
भारत भू से प्रीति जताकर, हम बढ़ाये भारत की शान।
नव वर्ष का नूतन विहान

आचार्य विद्यासागर जी के चिंतन में नारी का गौरव

* बा. ब्र. सुनील भैया (तारंगा गुजरात) *

आचार्य श्री विद्यासागर जी कहते हैं कि नारी समाज की रीढ़ है-उनका यह कहना अक्षरक्षः सत्य है। भारतीय संस्कृति में नारी के सम्मान को बहुत महत्व दिया गया है। संस्कृत में एक श्लोक है-

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता।

शोच्यन्ते हि यत्रैता, विनश्यत्यासु हितत् कुलम् ॥

अर्थात्- जिस कुल में नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता भी निवास करते हैं और जिस कुल में नारियाँ शोक मग्न रहती हैं उस कुल का शीघ्र ही विनाश हो जाता है।

नारियाँ ही महापुरुषों की जननी हैं, तीर्थंकर जैसे नर-रत्नों को जन्म देने का सौभाग्य नारियों ने ही प्राप्त किया है। यही कारण है कि कवियों ने भी उनकी प्रशंसा में बहुत कुछ कहा है-

नारी-नारी मत कहो, नारी गुणों की खान।

नारी से पैदा हुए, चौबीसों भगवान ॥

श्री मानतुंगाचार्य ने नारियों की महिमा का वर्णन करते हुए भक्तामर स्त्रोत में श्लोक स. 22 लिखा है-

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,

नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।

सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं,

प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥

अर्थात्- हे भगवान ! सैकड़ों स्त्रियाँ सैकड़ों पुत्रों को जन्म देती हैं। किन्तु आप जैसे पुत्र को जन्म देने वाली माता विरली ही होती है सो ठीक ही है। क्योंकि सभी दिशाएँ नक्षत्रों को जन्म दे सकती हैं। किन्तु हजारों किरणों से दैदीप्यमान ऐसे सूर्य को एक पूर्व दिशा ही जन्म देती है।

भगवज्जिनसेनाचार्य जी ने महापुराण में लिखा है कि- ऋषभदेव ने ब्राम्ही पुत्री को दाहिने हाथ से लिपी और सुंदरी पुत्री को बाँए हाथ से अंकों का लिखना सिखाया। यही कारण है कि लिपी बाँए से दायीं और अंक दाँए से बायीं और लिखे जाते हैं, ब्राम्ही के नाम पर ही विश्व की प्राचीनतम लिपि ब्राम्ही कहलाती है।

उपनिषदकार ने मातृदेवो भव कहकर माँ रूपी नारी को देवत्व के स्थान/उच्च आसन पर बिठाया है।

न अरि यस्या सा नारी अथवा या न अरि यस्य कस्यामि सा नारी

जैसे- वायु की अपनी कोई सुगंध नहीं होती, वह जैसा संपर्क पाती है वैसा ही सुरभित/दुरभित होकर बहती है। उसी प्रकार नारी की स्थिति है।

नारी- विधाता की सर्वोत्तम और नायाब सृष्टि है। नारी की सूरत और सीरत की पराकाष्ठा और उसकी गहनता को मापना दुष्कर ही नहीं नामुमकिन है। प्राचीन काल से ही हम नारियों के अवदान, अवस्थिति एवं अस्मिता का आंकलन करते हैं तो ज्ञात होता है कि नारी हमारे समाज की शक्ति है, जीवन्त और मुर्तिमन्त धरोहर है, अनेक विघ्न, बाधाओं और पीड़ाओं के भीषण झंझावात में भी उन्होंने अपने सदगुणों के दीपक को निष्काम्य भाव से प्रदीप्त रख इस जगतीतल को प्रकाशित किया है।

भगवान महावीर के काल में सामाजिक परिवेश में नारियों की अत्यंत दुर्दशा थी। वे दासी के रूप में नारकीय जीवन बिता रही थी। समाज में उनका शोषण हो रहा था। बाजार में खुले आम मातृ शक्ति का क्रय-विक्रय होता था, उन्हें पशुओं की तरह खरीदने के लिए बोलियाँ लगाई जाती थी। गुलामी में जकड़ी इन शोषिताओं को न तो स्वतंत्रता का कोई अर्थ था और न ही किसी तरह का अवसर। ऐसे समय जब समाज में नारी मुक्ति के संबंध में कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था। तब भगवान महावीर ने नारी को स्वतंत्रता प्रदान कर उसे समाज में समानता का अधिकार दिलाया।

मध्यकाल में नारियों की शोचनीय स्थिति हो गई थी, उनकी स्वतंत्रता का अपहरण हुआ। सामाजिक प्रतिष्ठा नष्ट हो गई, उसे शिक्षा के अधिकार से भी वंचित होना पड़ा। देश की परिस्थितियाँ उनके अनुकूल नहीं थी। मुगलों का साम्राज्य होने से नारी को चार दीवारी में बंद रखा जाता था। पर्दा प्रथा का अधिक प्रचलन था।

स्वामी दयानंद सरस्वती ने नारी जाति के जागरण के लिये स्कूलों से लेकर कॉलेजों तक प्रबंध किया गया।

आज हमें आजादी को हासिल किये 68 वर्ष पूरे हो चुके हैं। हमारा देश प्रगतिशीलता की ओर तेजी से बढ़ रहा है। आज की नारी किसी भी क्षेत्र में पुरुष से पीछे नहीं है, फिर चाहे सौंदर्य का क्षेत्र हो, रक्षा क्षेत्र हो, सेना का क्षेत्र हो, इंजीनियरिंग, अंतरिक्ष यात्रा, पर्वतारोहण, चिकित्सा सेवा, हवाई सेवा, समाज सेवा, प्रशासनिक सेवा, शिक्षा के क्षेत्र में अपनी बुद्धिमत्ता/योग्यता का परिचय दिया है। आज की नारी हर क्षेत्र में आगे बढ़ने के प्रयास में कार्यरत है।

सौंदर्य के क्षेत्र में आज हमारा भारत सभी देशों से आगे है, विगत कई वर्षों से भारत की महिलायें जैसे- ऐश्वर्या राय, सुस्मिता सेन ने विश्व सुंदरी का ताज सिर पर पहनकर ने केवल भारत बल्कि पूरे विश्व में सम्मान प्राप्त किया है।

संगीत के क्षेत्र में लता मंगेशकर, अनुराधा पौडवाल को साक्षात् सरस्वती माँ का दर्जा दिया गया है। किरण बेदी, पी.टी उषा, कल्पना चावला जैसी महिलाओं ने साबित किया है कि वे किसी से कम नहीं हैं।

साहित्य के क्षेत्र में महादेवी वर्मा ने अपनी विभिन्न रचनाओं के माध्यम से नारी जगत का गौरव बढ़ाया है।

युद्ध के क्षेत्र में बहादुर वीरांगना झाँसी की महारानी लक्ष्मीबाई ने देश की स्वतंत्रता के लिये अंग्रेजों के दाँत खट्टे कर दिये थे। रानी दुर्गावती भी देश के लिये बलिदान हो गई।

सेवा के क्षेत्र में शांतिदूत मदर टेरेसा ने विदेशी होते हुए भी भारत को अपना कर्म क्षेत्र बनाया कोलकाता में द सोसायटी आफ द मिशन रोज ऑफ चैरिटी नामक संस्था के माध्यम से उन्होंने गरीबों, दीन-दुखियों, लाचारों की सेवा का बीड़ा उठाया। अनेक राष्ट्रीय, अंतराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित मदर टेरेसा अपनी पूरी जिंदगी दया का फरिश्ता बनीं रहीं।

प्रधानमंत्री के रूप में प्रियदर्शिनी श्रीमति इंदिरा गांधी ने 16 वर्ष तक भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री के रूप में रहकर हमारे देश को आगे बढ़ाया और स्वयं देश के लिये बलिदान हो गईं।

राष्ट्रपति के रूप में श्रीमति प्रतिभा पाटिल प्रथम महिला राष्ट्रपति बनीं।

मुख्यमंत्री के रूप में श्रीमति वसुंधरा राजे सिंधिया (राजस्थान) श्रीमति ममता बनर्जी (पं बंगाल) श्रीमति जयललिता (तमिलनाडु) श्रीमति आनंदी बेन पटेल (गुजरात) विदेश मंत्री रूप में

श्रीमति सुषमा स्वराज, लोकसभा अध्यक्ष के रूप में श्रीमति सुमित्रा महाजन आदि शीर्ष पदों पर आसीन हुई हैं, और सफलता पूर्वक काम करके दिखा रही हैं।

भारत की प्रथम महिलाओं की सूची

1. भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री- श्रीमति इंदिरा गांधी
2. भारत की प्रथम महिला कांग्रेस अध्यक्ष- डॉ. एनी बेसेंट
3. भारत की प्रथम महिला संयुक्त राष्ट्र महासभा अध्यक्ष- विजय लक्ष्मी पंडित
4. भारत की प्रथम महिला राज्यपाल और कांग्रेस अध्यक्ष- सरोजनी नायडू
5. भारत की प्रथम महिला इंग्लिश खाड़ी तैरकर पार करने वाली- आरती गुप्ता (शाह)
6. भारत की प्रथम महिला जज- फातिमा
7. भारत की प्रथम महिला माउंट एवरेस्ट विजेता- बछेंद्री पाल देवी
8. भारत की प्रथम महिला नोगेल पारितोषिक विजेता- मदर टेरेसा
9. भारत की प्रथम महिला विधानसभा अध्यक्ष- शन्नो देवी
10. भारत की प्रथम महिला दिल्ली तत्क पर बैठने वाली- रजिया सुल्तान
11. भारत की प्रथम महिला राजदूत- विजय लक्ष्मी पंडित
12. भारत की प्रथम महिला आई पी एस- किरण बेदी
13. भारत की प्रथम महिला अध्यापिका- सावित्री देवी फूले
14. भारत की प्रथम महिला ज्ञान पीठ पुरस्कार विजेता- आशापूर्णा देवी
15. भारत की प्रथम महिला चुनाव लड़ने वाली- कमला देवी चट्टोपाध्याय
16. भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति- श्रीमति प्रतिभा पाटिल

धार्मिक क्षेत्र में जबलपुर की मढ़िया जी का मंदिर तो इसका जीवंत उदाहरण है। एक नारी चक्की पीस-पीस कर पैसा इकट्ठा किया मंदिर बनवाया। आज भी वह मंदिर हमें नारी की श्रद्धा, भक्ति एवं समर्पण का संकेत दे रहा है।

महामात्य चामुण्डराय की माता को भगवान बाहुबली को दर्शन की तीव्र उत्कंठा हुई तो तत्कालीन नेमिचन्द्राचार्य के निर्देशन में पहाड़ में बाहुबली की विशाल प्रतिमा उकेरी गई/ निर्माण कराया गया और उन्होंने दर्शन किए तभी बड़े-बड़े राजा-महाराजाओं ने अभिषेक किया, परन्तु पूर्ण रूप से अभिषेक नहीं हुआ और एक गुल्लिका अज्जी की छोटी सी लुटिया के जल से संपूर्ण अभिषेक हो गया। यह नारी की श्रद्धा का प्रतीक है।

महारानी शान्तला जिनके यशोगान के प्रमाण में भरपूर मिलते हैं, क्योंकि वही एक मात्र ऐसी महिला थी, जब महाराजा बिट्टिदेव ने वैष्णव धर्म अपनाया तो उस महारानी शान्तला ने अकेले जैन धर्म पर दृढ़ आस्था बनाए रखी और देव, शास्त्र और गुरु के चरणों में अपना जीवन बिताया।

10वीं शताब्दी के अन्तिम चरण में दक्षिण भारत में दान चिंतामणि अतिमव्वे का नाम अत्यंत प्रखरता से उद्दीप्त होता है, अपनी विशिष्ट संयम और त्याग के कारण इनका गौरव पद स्थान है। रत्न जैसे प्रसिद्ध महाकवि को आश्रय देकर भक्ति और साहित्य के प्रचार में प्रोत्साहन देने से जैन महिलाओं में दान चिंतामणि की प्रतिष्ठा पाई।

राजा श्रेणिक के सम्यक्त्व लाभ एवं तीर्थंकर प्रकृति के बंध में रानी चेलना की भूमिका को

ही प्रथम श्रेय जाता है।

नेपालियन बोनापार्ट ने नारी की महिमा को बताते हुए कहा था कि मुझे एक योग्य माता दे दो, मैं तुम्हें एक योग्य राष्ट्र दूँगा।

जैन परंपरा में नारी को बहुत महत्व दिया गया है। नारी के उत्थान के लिये तीर्थंकरों ने नारियों को अपने समवशरण में अलग से स्थान दिया है, उनके उत्थान का उत्कर्ष का मार्ग प्रशस्त किया। जहाँ नारी का सम्मान नहीं वह देश, राष्ट्र, समाज उन्नति नहीं कर सकता। नारी के बिना मानव विकास असंभव है। नारी सृष्टि का आधार है, नारी करुणा की मूर्ति है।

भारतीय मनीषा में नारी के छह रूप बताये गये हैं -

नारी का सबसे पहला रूप है-

1. कन्या- कन्या को मांगलिक कहा गया है। किसी भी मंगल कार्य में कन्या भोज कराने की भी भारतीय परम्परा है, उसे उभय कुलवर्धिनी कहा गया है।

2. पत्नी- आदर्श पत्नी के पाँच गुण बताये गये हैं-

1. जो पति की सहायिका, सहचारिणी और सहभागिनी हो।
 2. जो अपने पति के जीवन को सुख करे।
 3. जो अपने पति के जीवन को उच्च बनाए।
 4. जो पति के दोषों को नम्रता से सुधारे।
 5. जो अपने पति के सुख-दुख में बराबर सहायक हो।
- ऐसे गुणों से मण्डित पत्नी ही आदर्श पत्नी हो सकती है।

3. अर्थान्नि- जो अपने पति के दिल पर राज करे। जो अपने समर्पण और पति-परायणता से अपने पति के दिल को जीत ले।

4. जननी/माँ - माँ के रूप में नारी की महत्वपूर्ण भूमिका है।

5. भार्या- भार्या वह होती है जो अपने परिवार और बच्चों का भरण पोषण करती है।

6. कुटुम्बिनी- अपने प्रेममय व्यवहार और कार्य कुशलता के कारण वह पूरे परिवार का संरक्षण करते हुए कुटुम्बिनी बनकर अपने छठवें रूप को पूर्ण करती है।

मरणकण्डिका ग्रन्थ में नारी के ग्यारह नाम बताये गये हैं -

स्त्री- दोषों का आच्छादन करने से यह स्त्री कहलाती है।

वधु- वध करने से वधु कहलाती है।

प्रमदा- प्रमा की बहुलता के कारण प्रमदा कहलाती है।

नारी-न अरि: इति नारी पुरुष के लिये इससे बढ़कर अन्य कोई शत्रु नहीं है अतः नारी कहलाती है।

विलया- पुरुष को देखकर विलीन हो जाती है। छिप जाती है इसलिये उसे विलया कहते हैं।

कुमारी- पुरुष के कुत्सित मरण का उपाय करने से कुमारी कहलाती है।

भीरू- धर्म कार्य से डरती है इसलिये भीरू कहलाती है।

महिला- महादोष लाती है इस कारण महिला कहलाती है।

अबला- हृदय बल नहीं रखती इस कारण अबला कहलाती है।

दोषा- प्रीति पूर्वक पाप सेवन करने से दोषा कहलाती है।

ललना- खोटे आचरण में लगी रहती है अतः ललना कहलाती है।

शीलवती नारियाँ मनुष्यों से नहीं देवों से भी पूज्यता प्राप्त कर लेती हैं। शील के प्रभाव से अग्नि का जल होना, सर्प का हार हो जाना, वज्र के फाटक खुल जाना इत्यादि उदाहरण मात्र कल्पनायें नहीं हैं, सच हैं। जो नारियाँ पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत पालन करती हैं, व्रत, प्रतिमा आदि व्रतों से अपने शरीर को अलंकृत करती हैं, क्षुल्लिका-आर्यिका बन जाती हैं, वे महिलायें ब्राम्ही और सुंदरी के समान सर्वजनों में पूज्य हो जाती हैं। आज भी चन्दनबाला, अनन्तमति जैसी कन्यायें हैं, सीता मैना सुंदरी, मनोरमा जैसी पतिभक्ता हैं, चेलना जैसी कर्तव्य परायणा हैं और ब्राम्ही, सुंदरी के पद चिन्हों पर चलने वाली आर्यिकायें हैं, हमारी बहनों को उनसे शिक्षा लेनी चाहिए।

प्रतिभास्थली

प्रतिभास्थली जैनाचार्य 108 विद्यासागर जी महाराज की असीम कृपा और दूरदृष्टि से पल्लवित पुष्पित व फलित भारत-भर में अनूठा व अद्वितीय कन्या आवसीय शिक्षण संस्थान है। यहाँ शिक्षा अर्थोपार्जन का साधन नहीं अपितु ज्ञान-दान की पावन प्रक्रिया है। यहाँ बाल ब्रह्मचारिणी विदूषी, प्रशिक्षित शिक्षिकायें कन्याओं के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण हेतु अपनी निस्वार्थ सेवायें अहर्निश प्रदान कर रही हैं। सी.बी. एस. ई. मान्यता प्राप्त यह संस्थान आज के आधुनिक परिवेश में प्राचीन गुरुकुलों की स्मृति को पुनः जीवंत कर रहा है।

परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महामुनिराज द्वारा दीक्षित 172 आर्यिकायें एवं लगभग 900 बाल ब्रह्मचारिणी बहनें मोक्षमार्ग पर अग्रसर हैं।

नारी नाम संग्राम का, करती ना विश्राम।

बेटी-बहन हैं तीर्थ तो माँ हैं चारो धाम॥

कविता

दर्शन को तरसते हैं

✽ शिखरचन्द्र जैन (शिखर) गंजबासौदा ✽

जहाँ पर आप रुक जायें, धर्मधन ही बरसते हैं।
गुरुवर विद्या सागर तो, हमें भगवान लगते हैं॥
नहीं है कोई समझौता, आचारों विचारों में,
बड़ी दृढ़तम तपस्या में, सदा वो लीन रहते हैं॥
जहाँ पर आप रुक जायें, धर्म धन ही बरसते हैं।
जहाँ में ऐसे कई प्राणी, जो दर्शन को तरसते हैं।
दर्श जो आपके कर लें, बड़े वो भाग्यशाली हैं,
नजर तेरी जिसे देखे, बड़ा सौभाग्य रखते हैं॥
जहाँ पर आप रुक जायें, धर्म धन ही बरसते हैं।
तेरे चरणों की पद रज को, सदा माथे पें रखते हैं।
बड़ी किस्मत उसी की है, जो पड़गाहन करें तेरा,
वो चौका धन्य हो जाये, वहाँ माणिक बरसते हैं॥

भूल सुधार

* ब्र. जिनेश मलैया (प्रधान सम्पादक संस्कार सागर, इन्दौर) *

संस्कार सागर दिसम्बर 2018 अंक में एक लेख दिल्ली की बिन्दु जैन का प्रकाशित हुआ। जिससे मेरे पास देशभर विद्वान और कई श्रद्धालुजनों के संदेश आये उन्होंने सर्वप्रथम तो यह आपत्ति ली कि यह लेख आगम विरुद्ध है इसे संस्कार सागर में स्थान कैसे मिल गया है जिस का शीर्षक ही चौकाने वाला है सिद्ध भगवान भी पुनः लौटकर संसार में आते हैं ? इस शीर्षक में प्रश्नवाचक चिन्ह भी लगा जो सदैव प्रश्न के रूप में प्रस्तुत है इस पर विचार करना मेरी समझ से कोई बुरी बात नहीं है कि कई लोग गणतीय आधार पर सोचते हैं कि जब 6 माह 8 समय में 608 जीव मोक्ष जायेंगे तो एक समय जरूर ऐसा आयेगा जब संसार शून्य हो जायेगा और संसार चलाने के लिये मोक्ष से सिद्ध भगवान को लौटना होगा यह मात्र कोरी कल्पना है आगम और तर्क के आधार पर इसे साकार सिद्ध नहीं किया जा सकता है।

सर्वप्रथम बिन्दु जी ने स्वयं स्वीकार किया है कि जब कर्म बीज जल जाता है तभी सिद्ध बनते हैं तो ऐसे सिद्ध परमात्मा कर्मोदय के बिना अपने परम पद से कैसे गिरेंगे आगे आपने अपनी कल्पना या बुद्धि के आधार पर लिखा है कि सभी जीवों के गुण पर्यायों में निरंतर षड्गुण हानी और वृद्धि होती है। किन्तु आप यह भूल गये कि यह शुद्ध अर्थपर्याय है इसका संबंध विशुद्धि और संक्लेश से नहीं जोड़ा जा सकता है। क्योंकि शुद्ध अर्थ पर्याय के बिना सिद्धों के उत्पाद व्यय ध्रौव्य सिद्ध नहीं होगा और उत्पाद व्यय सिद्ध हुए बिना द्रव्य में अगुरुलघुत्व सामान्य गुण नहीं बनेगा। बिन्दु जी के उस तर्क पर आगम प्रमाण खोजना होगा कि सिद्धों के अनंत गुण हानि वृद्धि विशुद्ध और संक्लेश रूप होती है। ऐसा आगम जैन दर्शन में उपलब्ध नहीं है।

जैन दर्शन में तथ्यों की दो कसौटी से परीक्षा की जाती। 1. आगम की कसौटी है तो दूसरी तर्क कसौटी है। तर्क के आधार पर किसी भी तथ्य को स्वीकार नहीं किया जा सकता है। आगम प्रमाण की सहमति के बिना किसी बात को आगे बढ़ाना तो सरल होता है किन्तु यह नहीं भूलना चाहिए कि आगम प्रमाण के बिना दिया गया तर्क मात्र संभावना या कल्पना के अंतर्गत ही आता है। यदि बिन्दु जी किसी भी जले हुए बीज से अंकुर पैदा करवा दें तो हम ही नहीं अपितु सारा जैन दर्शन यह मान लेगा कि हाँ सिद्ध भगवान लौटकर वापस आ सकते हैं। यदि जले हुए बीज में अंकुर उत्पन्न होना किसी प्रकार से संभव नहीं होगा तो फिर हमें यह सहर्ष स्वीकार करना होगा कि सिद्ध परमात्मा लौटकर कभी संसार में नहीं आ सकते हैं।

अक्षय अनंत जीवों की संख्या संसार में विद्यमान हो तो फिर अक्षय अनंत का तथ्य स्वीकार करना चाहिए। जब आपने इसे स्वीकार किया है कि भूतकाल अनंत है और भविष्य काल अनंतानंत है तो फिर आपको विचार करना होगा कि एक आलू में अनंत जीव होते हैं और अभी एक आलू की संख्या के बराबर जीव अनंत भूतकाल बीतने के बाद अभी मोक्ष नहीं पहुँच पाये तो आप ही चिंतन करना कि इस संसार में अभी आलू ही कितने हैं जिनके मोक्ष पहुँचने में कितने अनंत भूतकाल लग जायें तो भी आलू के जीव मोक्ष नहीं पहुँच सकते हैं फिर संसार चलाने के लिये सिद्ध परमात्मा को वापस संसार में आने की आवश्यकता कहाँ रह जाती है।

जिसने अलौकिक गणित का अध्ययन किया है वह समझ सकेगा कि संख्या के संख्यामान के संख्यात, असंख्यात और अनंत ये तीन भेद हैं। असंख्यात के युक्ता संख्यात परितसंख्यात और असंख्यात संख्यात अनंत के युक्तानंत, परितानंतानंत और अनंतानंत इस प्रकार असंख्यात के तीन अनंत के तीन और एक संख्यात इन सातों के जघन्य मध्यम और उत्कृष्ट के भेद से 21 भेद होते हैं। यह अनंतानंत राशि अक्षयानंत का रूप है बिन्दु जी से हम आग्रह पूर्वक कहना चाहेंगे कि वे अक्षयानंत का स्वरूप ठीक ठीक समझे तो फिर आप यह कहना उचित नहीं समझेगी कि संसार जब शून्य हो जायेगा तब फिर सिद्ध भगवान वापस आकर उजड़े हुए संसार को आबाद करेंगे पर यह तथ्य याद रखना होगा कि अभव्य राशी संसार को हरा भरा सदैव बनायें रखेगी अतः सिद्ध भगवान को वापस संसार में आने की आवश्यकता नहीं रह जायेगी।

बिन्दु जी का तर्कों के आधार पर यह मानना न्यास संगत नहीं कि सिद्ध भगवान लौटकर वापस आते हैं, क्योंकि कर्मबंध के बिना संसार में वापस आना असंभव है कर्मबंध के कारण तत्त्वार्थ सूत्र के अष्टम अध्याय के प्रथम सूत्र में कहा मिथ्यादर्शनाविरति प्रमादकषाय योगा बन्धहेतवः।

अर्थात् बंध के कारण मात्र 5 ही माने गये 1. मिथ्यादर्शन 2. अविरति 3. प्रमाद 4. कषाय 5. योग मोह के क्षय होने से मिथ्यादर्शन सिद्धों के किसी प्रकार से संभव नहीं हो सकता है अन्यथा क्षय का स्वरूप कभी यह नहीं माना जा सकता है कि उसका पुनः उद्भव हो। अतः आचार्यों ने आगम में यह कहा है कि कर्म का बीज जल जाने का नाम ही क्षय है, बीज जल जाने के बाद अंकुर होने की किसी तरह से संभावना नहीं है क्योंकि सिद्धों के बंध के 5 कारणों में से कोई भी कारण नहीं पाया जाता है।

मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग ये पाँचों कारण मोह और योग के कारण से होते हैं। मोह और योग के निमित्त से गुणस्थान की रचना होती है और सिद्ध भगवान गुणस्थान और मार्गणा स्थान से अतीत है। द्रव्यसंग्रह की गाथा- 13

मग्गणगुणठाणेहिंय, चउदसहिं हंवति तह असुद्धणया।

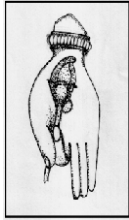
विण्णेया संसारी, सव्वे सुद्धा हु सुद्धणया॥

प्रस्तुत गाथा से यह सिद्ध होता है कि सिद्ध भगवान गुणस्थान और मार्गणा से अतीत हैं। नियमसार के शुद्धभाव अधिकार में एवं समयसार के अजीव अधिकार में सिद्ध भगवान को संक्लेश और विशुद्धि स्थान से रहित बताया है और ऐसी परिस्थिति में सिद्ध भगवान के संक्लेश और विशुद्धि परिणाम कैसे होंगे। अब बिन्दु जी ने सिद्ध भगवान के संक्लेश और विशुद्धि परिणाम की कल्पना किस आधार पर की है यह समझ से परे है। ऐसी आगम विरुद्ध कल्पना करना जिनशासन की अवहेलना के सिवाय कुछ भी नहीं है और यह श्रुतज्ञान का अवर्णवाद है। और यह अवर्णवाद दर्शनमोहनीय कर्म के बंध का कारण है। सिद्ध भगवान हमारे प्रत्यक्ष प्रमाण के विषय नहीं हैं वे किसी केवलज्ञानी के ही बनते हैं इस आधार पर कोई प्रत्यक्ष उदाहरण नहीं दिया जा सकता है। आगम प्रमाण को ही आधार बनाकर चर्चा की जा सकती है। तर्क और अनुमान एक सीमा तक साथ दे सकते हैं। और बिन्दु जी के तर्कों में कोई दम नहीं है, अतः आगमप्रमाण ही एक मात्र हमारा सहारा है। बीज जलने के बाद यदि अंकुरित हो जाये तो सिद्ध वापस आ सकते हैं यदि जला हुआ बीज अंकुरित नहीं हो सकता है तो सिद्ध भगवान भी वापस नहीं आ सकते हैं।

नवागढ़ (नंदपुर) की पुरा सम्पदा और मांगलिक प्रतीक

* ब्र. जयकुमार जैन निशांत (टीकमगढ़) *

भारत विभिन्न संस्कृतियों से मंडित ऐसा दोष है, जहां करोड़ों वर्ष प्राचीन साक्ष्य उपलब्ध हैं। इसके विभिन्न प्रदेशों में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं पौराणिक धरोहर संरक्षित हैं। उन्हीं में से भारत हृदय बुन्देलखण्ड की ऐतिहासिकता भी अतिप्राचीन है। इसके नामकरण के संबंध में अनेक मान्यताएँ एवं कथानक हैं। इसके चित्रकूट (रामायण), दशार्ण (महाभाष्य, मार्कण्डेय, पुराण, मेघदूत), चेदि (महाभारत) गोल्लदेश (कुवलयमाला), चि-चि-टो (चीनी यात्री ह्वेनसांग), युद्धदेश (विष्णु धर्मोत्तर पुराण) जीजाक भक्ति (इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका) जुझौति (स्कंधपुराण), गौडवाना, कर्णावती, डाहल, वज्रदेश, मध्यदेश, चन्द्रावती, विन्ध्येलखण्ड, पिप्ललादि, पद्मावती, गोलापुर, बुन्देलखण्ड (छत्र प्रकाश एवं वीरसिंह देव चरित्र) आदि नाम प्राचीनकाल से आज तक रखे गये। बुंदेलखण्ड के झांसी संभाग के जिला ललितपुर में देवगढ़, बालावेहट, चांदपुर, दुधही, सेरोन, मदनपुर, कारीटोरन, गिरार, नवागढ़ (नंदपुर), सड़कौरा, अंजनी, बानपुर, सीरोन, जहाजपुर, दैलवाड़ा आदि अनेक तीर्थ एवं प्रागैतिहासिक नगर विद्यमान हैं। जिनमें नवागढ़ क्षेत्र की पुरासम्पदा एक विशिष्टकाल की संस्कृति को अभिव्यक्त करती है।



नवागढ़ (नंदपुर) में प्राप्त प्रतिमायें एवं शिल्प गुप्तकाल, प्रतिहारकाल तथा प्रारंभिक चंदेलकाल के हैं जिनमें इनकी प्राचीनता जहां पांचवी सदी सिद्ध होती है, वहीं पुरापाषाण कालीन औजार (2 से 5 लाख वर्ष पूर्व), कप मार्क (10 हजार वर्ष), शैलचित्र (5 से 8 हजार वर्ष), तीर्थकर रॉककट इमेज (2 हजार वर्ष) से इसकी प्राचीनता स्वमेव सिद्ध हो रही है। नवागढ़ (नंदपुर) ग्राम नाबई रमणीक, शांत, हरियाली युक्त पर्वत श्रृंखलाओं के मध्य 24 से 35 अक्षांश एवं 78 से देशांश पर कलरा नाला, पनरा नाला, हरई नाला के मध्य स्थित है। यहाँ अतिशयकारी तीर्थकर, चक्रवर्ती एवं कामदेव त्रिपदधारी अरनाथ स्वामी का जैन तीर्थ, आचार्य गुफा, उपाध्याय गुफा, साधु गुफा, दूल्हादेव, देवासर, बगाजटोरिया (पहाड़ी) फाईटन टोरिया, सिद्धों की टोरिया, बगाजमाता, हनुमान मंदिर, बावड़ी टीले प्रसिद्ध हैं।

1. आचार्य कुन्द कुन्द स्वामी ने दंसणपाहुड में तीर्थकर के शरीर पर पाये जाने वाले एक हजार आठ शुभलक्षणों का उल्लेख किया है।

विरहदि जाव जिणिंदो सहसट्ट सुलक्खणेहिं संजुत्तो।

चउतीस अइसयजुदो सा पडिया थावरा भणिया॥35॥

एक हजार आठ शुभ लक्षणों से युक्त तथा चौतीस अतिशयों से सहित तीर्थकर भगवान तब तक



यहां विहार करते हैं, तब तक उनको स्थावर प्रतिमा कहा गया है। तीर्थकर के शरीर में पाये जाने वाले एक हजार आठ शुभलक्षण कौन-कौन से हैं प्रकट करते हैं- श्रीवत्स, हाथ और पैरों में शंख, कमल, स्वस्तिक, अंकुश, तोरण, चंवर, सफेद छत्र, सिंहासन, ध्वज, दो मच्छ, दो कलश, कछुवा, चक्र, मेरु, इन्द्र पर्वत, नदी पुर, गोपुर, चन्द्र, सूर्य, उत्तम घोड़ा, व्यंजन बांसुरी, वीणा, मृदंग दो पुष्पमाला, रेश्मीवस्त्र, बाजार, कुण्डल आदि सोलह आभूषण, फलों से

युक्त उपवन, अच्छी तरह से पका हुआ धान का खेत, रत्नद्वीप वज्र, पृथ्वी, लक्ष्मी, सरस्वती, कामधेनु, बैल, चूड़ाभूषण, महानिधि, कल्पबेल, सुवर्ण, जम्बूवृक्ष, गरुण, नक्षत्र, तारका, राजभवन, गृह, सिद्धार्थवृक्ष, अष्टप्रातिहार्य, अष्टमंगल द्रव्य इन्हें आदि से लेकर एक सौ आठ लक्षण होते हैं और तिल मस्सा आदि नौ सौ व्यंजन होते हैं। यह सब मिलकर 1008 शुभ लक्षण कहलाते हैं।

2. अष्टप्रतिहार्य- अशोक वृक्ष, सुरपुष्प वृष्टि, दिव्यध्वनि, दिव्यचमर, सिंहासन, भामंडल दुंदुभि एवं छत्रत्रय।

3. अष्टमंगल द्रव्य- सुवर्णमय झारी, तालपत्र, सुवर्णकलश, पताका, सुप्रतिष्ठ (ठौना), सफेद छत्र, दर्पण और चमर।

4. आचार्य जयसेन स्वामी ने प्रतिष्ठापाठ में माता के सोलह मांगलिक स्वप्नों का वर्णन किया है। बैल, ऐरावत, सिंह स्वर्णकलश, अभिसिक्त लक्ष्मी, युगत पुष्पमाल, चन्द्रमा, सूर्य, युगलकलश, कमलयुक्त सरोवर, समुद्र, सिंहासन, स्वर्ग विमान, धरणेन्द्र भवन, रत्नराशि, निर्धूम अग्नि।

5. धवला पुस्तक प्रथम की टीका में आचार्य वीरसेन स्वामी ने मांगलिक द्रव्यों का वर्णन किया है।

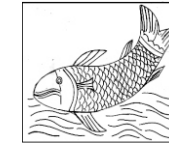
सिद्धत्थ-पुण्ण कुंभो वंदनमाला य मंगल छत्तं।

सेदो वण्णो आदंसणे य कण्णा य जच्चसो॥3॥

सिद्धार्थ (श्वेत सरसों) जल से भरा कलश, वंदनमाला, छत्र, श्वेतवर्ण दर्पण आदि अचित्त मंगल हैं। बालकन्या तथा उत्तम जाति का घोड़ा सचित्त मंगल है तथा अलंकार सहित कन्या मिश्र मंगल है। इसके साथ जिनबिम्ब, जिनयति, जिनेन्द्र देव, जिनयति प्रतिमा, शास्त्र, पंचकल्याणक क्षेत्र, अष्टान्हिका पर्व को भी मंगल कहा जाता है।

6. प्रतिष्ठापाठ में छत्र, रत्नदर्पण, ध्वजा, वस्त्र एवं मांगलिक आभूषणों का वर्णन मिलता है॥3॥

अभी तक प्राप्त अवशेषों में मांगलिक प्रतीकों में मुख्यतः खारबेल के शिलालेख में स्वस्तिक, मोहन जोदड़ो की सील में वृषभ, पुष्प चंदेरी की प्राचीन अभिलेख (ईसापूर्व द्वितीय सदी) नंदीपद (नद्यावर्त) स्वस्तिक, विहग, मीन, मिथुन, पद्म, शंख, त्रिरत्न, वज्र, ध्वज, तालवृत्त (व्यंजन), दर्पण भद्रासन जाव पडिरूवा आदि।



तीर्थकरों के चिन्ह, श्रीवत्स, छत्र, चमर, भामण्डल, चक्र, वृक्ष, गंगा, यमुना देवी, मकरतोरण आदि प्राचीनकालीन शिल्पों में, प्रायः सभी मूर्तियों में प्राप्त होते हैं। मथुरा में प्राक् कुषाण एवं कुषाण काल के आयागपट्टों में भी मांगलिक प्रतीक प्राप्त हुये हैं। प्राचीनतम् शैलचित्रों में वृषभ, हिरण, चक्र, सरोवर, पहाड़ वसतिका, सूर्य, केवलज्ञान (लोकपूरण चक्रिका) चक्षु पंचमगति प्रतीक, सप्तपंखुडी पुष्प आदि का अंकन यहां की पुरातात्विक ऐतिहासिका को दर्शाते हैं। इन मांगलिक प्रतीकों की जैन धर्म के मांगलिक प्रतीकों से अत्यधिक साम्यता मिलती है।

फाईटन पहाड़ी पर स्थित गुफा में पाषाण शिला पर उत्कीर्ण चरणयुगल तथा उत्कीर्ण कायोत्सर्ग मुद्रा (रॉककट इमेज) इन शैलाश्रयों को जैन श्रमणों की साधना एवं जैन तीर्थ के निर्माण की हजारों वर्ष प्राचीन प्रारंभिक भूमिका का संकेत करते हैं। इनसे सिद्ध होता है यहां जैन संस्कृति का क्रमिक विकास एवं संरक्षण होता रहा है। यह प्रसिद्ध साधना स्थल रहा है।



संग्रहीत पुरा संपदा में तीर्थंकरों के बिम्बों में भी मांगलिक प्रतीक उपलब्ध है। आदिनाथ- वृषभ संवत् (1123), अजितनाथ-हस्ती, संभवनाथ-घोड़ा, सुमतिनाथ- विहग, पद्मप्रभ-कमल, चन्द्रप्रभ-चन्द्रमा, शीतलनाथ-वृक्ष धर्मनाथ-वज्रदण्ड, शांतिनाथ-हिरण (1202) अरनाथ-मीन, मल्लिनाथ-कलश, नेमिनाथ-शंख, पार्श्वनाथ-सर्प (1568), महावीर सिंह (1195), साधु परमेष्ठी-पिच्छी आदि। फाईटन पहाड़ी की एक गुफा से उपाध्याय परमेष्ठी का संवत् 1188 (1131ई.) की मांगलिक प्रतिमा तथा पहाड़ी के आसपास कमल कलिका युक्त कलात्मक सुन्दर हाथ एवं अन्य शिल्पों के साथ विशाल प्रतिमाओं की प्राप्ति यहां विशाल जैन मंदिरों का संकेत करते हैं। डॉ. मारुतिनंदन प्रसाद तिवारी वाराणसी के अनुसार चारों मानस्तंभों से सिद्ध होता है कि यहां चार मंदिर और रहे होंगे।

पाषाण पट्ट पर णमोकार मंत्र का अंकन विशेष मांगलिक प्रतीक है।

विभिन्न शिल्पों में मांगलिक प्रतीक- मानस्तंभ संवत् 1203 पर जंजीर युक्त घंटिका एवं उपाध्याय बिम्ब, गंगायमुना देवी, कलश युगल, अकलंक-निकलंक बिम्ब में शास्त्र एवं लेखनी, अलंकृत शिखर, त्रिछत्र एवं गजयुगल, परमेष्ठी बिम्ब में कमण्डलु-पिच्छी, मंदिर छत वितान (आयागपट्ट) में कीर्तिमुख, अंबिका देवी, आम्रवृक्ष, फल एवं अरिहंत बिम्ब, इन्द्राणी के हाथ में चंवर उड़ते हुए यक्ष का पुष्पहार, महिचंद्र श्रेष्ठी के हाथ में पुष्पमाला एवं अरिहंत बिम्ब में अष्ट प्रातिहार्य विशेष मांगलिक प्रतीक हैं।

इस प्रकार नवागढ़ (नंदपुर) में संग्रहीत पुरावशेषों में प्राप्त मांगलिक प्रतीकों से सिद्ध होता है कि यहां विशेषरूप से जैन संस्कृति का क्रमिक विकास हुआ है। यह श्रमण संस्कृति एवं विद्याध्ययन, गुरुकुल का विशाल तीर्थ रहा है, जहां साधकों ने आकर साधना के साथ-साथ सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं धार्मिक धरोहर का संवर्धन किया है।



जैन तीर्थक्षेत्र से तीन कि.मी. पश्चिम में फाईटन (फाईव स्टोन) पहाड़ी पर स्थित शेलाश्रय एवं गुफाओं से प्राप्त पुरा संपदा, दक्षिण में एक किमी. दूर बगाजटोरिया में स्थित श्रेष्ठी महिचंद फलक पर मांगलिक अरिहंत बिम्ब, उपाध्याय गुफा से प्राप्त अम्बिका देवी के शीर्ष पर अरिहंत बिम्ब, चमरधारिणी इन्द्राणी, पूर्व दिशा में एक किमी. दूर चंदेल बावडी के पास मंदिर अवशेषों में अमलसार तथा उत्तर दिशा में आधा किमी. दूर टीले से प्राप्त आक्रांतहस्ती युक्त सिंह एवं अमलसार इस क्षेत्र की विशालता को कई किमी. में होने के संकेत

करते हैं। मिट्टी एवं पाषाण के मन के यहाँ विशाल नगर एवं उसमें मानव सभ्यता का संकेत करते हैं जिनका अन्वेषण करने से न जाने कितने रहस्यों एवं तथ्यों का उद्घाटित होना शेष है।

अरनाथ मूलनायक जिन प्रतिमा में श्रीवत्स, चंवर, मीन, पार्श्वनाथ बिम्ब में माल्याधर एवं मृदंग, शांतिनाथ बिम्ब में युगलहिरण, आदि तीर्थंकर बिम्ब में मांगलिक प्रतीक हैं। इनके अतिरिक्त



स्वतंत्र प्रतीक भी नवागढ़ संग्रहालय में संग्रहीत हैं- शिखर कलश, अमलसार, चक्र, त्रिछत्र सकलश गलयुगल, माल्याधर, मंदिर, शिखर आदि। पचास से अधिक खण्डित तीर्थंकर बिम्बों में चमर छत्र भामंडल अशोक वृक्ष मृदंग, श्रीवत्स, माल्याधर, गजयुगल, मंगलकलश, मांगलिक प्रतीक रूप में उपलब्ध हैं। जिनशासन में मांगलिक प्रतीक सुखसमृद्धि धर्माचरण का संकेत करते हैं।

भक्त्य मुनि दीक्षा महोत्सव दयोदय गौशाला ललितपुर

क्र.	मुनि नाम	पूर्व नाम	स्थान	जन्म	पिता	माता	शिक्षा	आजीवन व्रत
1.	मुनि श्री निग्रन्थसागर जी	ब्र. श्रेयांस बैया	बुढ़ार (शहडोल)	26/11/89	श्री श्रीकांतजी जैन	श्रीमति सरिता जैन	बी.ई. (आई. टी.)	07/08/11 डोगरागँव
2.	मुनि श्री निग्रन्थसागर जी	ब्र. अभिषेक बैया (मोन्)	पनागर (जबलपुर)	25/01/87	श्री राजेश सिंघई	श्रीमति सविता सिंघई	एम.ए.	06/05/10
3.	मुनि श्री निग्रन्थसागर जी	ब्र. दीपेन्द्र बैया (मोन्)	केरबना (दमोह)	27/03/83	स्व. कोमलचंद जैन	श्रीमति तेजा जैन	बी.कॉम. कमप्यूटर	10/10/15 बीनावारह
4.	मुनि श्री निग्रन्थसागर जी	ब्र. नितेन्द्र बैया	नरसिंहपुर म.प्र.	28/04/81	श्री तुलसीराम जैन	श्रीमति प्रेमलता जैन	एम.कॉम	16/07/15 बीनावारह
5.	मुनि श्री निग्रन्थसागर जी	ब्र. पिकेश बैया	हाटपिपल्या (देवास)	01/09/85	श्री पवन जैन	श्रीमति हेमलता जैन	बी.कॉम	09/11/08 रामटेक
6.	मुनि श्री निग्रन्थसागर जी	ब्र. आकाश बैया	सागर म.प्र.	13/09/87	श्री प्रकाशचंद जैन	श्रीमति आशा जैन	एम.कॉम	05/05/07
7.	मुनि श्री निग्रन्थसागर जी	ब्र. सतीश बैया	खुरई (सागर)	05/07/71	स्व. प्रेमचंद गुरहा	स्व. नर्मदाबाई जैन	एम.ए. (हिन्दी साहित्य)	21/06/17 रामटेक
8.	मुनि श्री निग्रन्थसागर जी	ब्र. दीपक बैया	संदलपुर (खलिंगांव)	04/11/84	श्री अशोक जैन	श्रीमति फुलकुंवर जैन	बी.कॉम	2015 बीनावारह
9.	मुनि श्री निग्रन्थसागर जी	ब्र. मनीष बैया (मोन्)	इन्दौर म.प्र.	09/05/83	श्री विजय जैन	श्रीमति किरन जैन	एम.कॉम	14 मई 2009 राजनाद गांव
10.	मुनि श्री निग्रन्थसागर जी	ब्र. अर्पित रावत	राधौगढ़ (गुना) म.प्र.	02/12/90	श्री अनिल रावत	श्रीमति मीना रावत	एम. टेक	17/08/17 रामटेक

अध्यात्म शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज द्वारा अब तक दी हुई 426 दीक्षाएं

स्थान	क्षु. दीक्षाएं	दिनांक	श्री थूबोनजी	8	10 जुलाई 1987
श्री सोनागिरजी	4	18 दिसम्बर 1975	जबलपुर	4	28 जुलाई 1988
श्री कुण्डलपुरजी	2	2 नवम्बर 1976	श्री मुक्तागिरिजी	8	25 जुलाई 1991
श्री नैनागिरजी	2	2 नवम्बर 1978	श्री रामटेकजी	1	21 जुलाई 1994
श्री नैनागिरजी	5	10 जनवरी 1980	श्री महुआजी	4	21 अगस्त 1996
श्री ईसरी	1	21 नवम्बर 1982	श्री गिरनारजी	5	19 दिसम्बर 1996
श्री आहारजी	9	8 नवम्बर 1985	श्री सिद्धवरकूटजी	1	1 अप्रैल 1997
श्री द्रोणगिरिजी	1	15 दिसम्बर 1985	श्री सिद्धवरकूटजी	1	13 अप्रैल 1997
श्री नैनागिरजी	12	10 फरवरी 1987	श्री नेमावरजी	6	5 जनवरी 1998
श्री मुक्तागिरिजी	7	16 मई 1991	गंजबासौदा	1	15 फरवरी 2008
श्री मुक्तागिरिजी	1	25 जुलाई 1991	कुल	57	
श्री रामटेकजी	1	23 जुलाई 1994	स्थान	मुनि दीक्षाएं	दिनांक
श्री कुण्डलपुरजी	1	23 सितम्बर 1994	श्री द्रोणगिरिजी	1	8 मार्च 1980
श्री कुण्डलपुरजी	3	7 अक्टूबर 1995	सागर	2	15 अप्रैल 1980
श्री तारंगाजी	7	20 अप्रैल 1996	श्री नैनागिरजी	2	20 अक्टूबर 1981
श्री सिद्धवरकूटजी	1	1 अप्रैल 1997	श्री नैनागिरजी	3	20 अगस्त 1982
श्री नेमावरजी	7	9 अगस्त 1997	श्री ईसरी	5	25 सितम्बर 1983
कुल	64		श्री आहारजी	1	1 जुलाई 1985
स्थान	ऐलक दीक्षाएं	दिनांक	श्री सोनागिरजी	8	31 मार्च 1988
श्री कुण्डलपुरजी	1	10 जुलाई 1977	श्री नेमावरजी	10	16 अक्टूबर 1997
श्री कुण्डलपुरजी	1	19 नवम्बर 1977	श्री मुक्तागिरि	9	11 फरवरी 1998
श्री नैनागिरजी	1	2 अक्टूबर 1978	श्री नेमावरजी	23	22 अप्रैल 1999
श्री नैनागिरजी	1	31 अक्टूबर 1978	जबलपुर	25	21 अप्रैल 2004
श्री नैनागिरजी	1	10 जनवरी 1980	श्री रामटेकजी	24	10 अगस्त 2013
श्री नैनागिरजी	2	14 जनवरी 1978	विदिशा	5	16 अक्टूबर 2014
श्री मुक्तागिरिजी	1	7 जनवरी 1980	बीना बारह जी	2	31 जुलाई 2015
श्री नैनागिरजी	1	सितम्बर 1981	ललितपुर (उ.प्र.)	10	28 नवम्बर 2018
श्री बीनावारह	1	10 फरवरी 1982	कुल	130	
सागर	1	15 अप्रैल 1982	स्थान	आर्थिका दीक्षाएं	दिनांक
श्री सम्मोदशिखरजी	7	10 फरवरी 1983	श्री नैनागिरजी	11	10 फरवरी 1977



श्री कुण्डलपुरजी	8	7 अगस्त 1989	श्री नैनागिरजी	11	41
श्री कुण्डलपुरजी	1	9 अगस्त 1989	श्री रामटेकजी	5	28
श्री नरसिंहपुर	5	20 फरवरी 1990	श्री मुक्तागिरिजी	6	27
श्री नरसिंहपुर	2	23 फरवरी 1990	श्री सोनागिरजी	2	17
श्री कुण्डलपुरजी	15	4 जुलाई 1992	श्री सम्मोदशिखरजी	1	7
श्री कुण्डलपुरजी	2	7 जुलाई 1992	श्री नरसिंहपुर	2	7
जबलपुर	25	25 जनवरी 1993	श्री थूबोनजी	1	8
श्री रामटेकजी	1	19 अगस्त 1993	श्री ईसरीजी	2	6
श्री रामटेकजी	1	28 अगस्त 1993	श्री आहारजी	3	11
श्री नेमावरजी	29	6 जून 1997	श्री तारंगाजी	1	7
श्री नेमावरजी	14	18 अगस्त 1997	श्री गिरनारजी	1	5
श्री कुण्डलपुरजी	58	13 फरवरी 2006	श्री महुआजी	1	4
आचार्यश्री के सान्निध्य में समाधिस्थ			श्री द्रोणगिरिजी	2	2
6 मुनि, 2 आर्थिका, 2 ऐलक, 6 क्षुल्लक, 3 क्षुल्लिका			सागर	2	3
आचार्यश्री से दीक्षित शिष्यों की समाधि			श्री सिद्धवरकूटजी	3	3
10 मुनि, 8 आर्थिका, 2 ऐलक, 4 क्षुल्लक, 3 क्षुल्लिका			श्रीवीनावारहजी	2	3
आचार्यश्री के सान्निध्य में दीक्षाएं			श्री गंजबासौदा	1	1
स्थान	कितनी बार	दीक्षाएं	विदिशा	1	5
श्री कुण्डलपुरजी	10	92	ललितपुर (उ.प्र.)	1	10
श्री नेमावरजी	6	89	कुल	68	426
जबलपुर	4	55	16 बार क्षुल्लक, 21 बार ऐलक, 15 बार मुनि, 13 बार आर्थिकाएं एवं 3 बार क्षुल्लिकाएं इस प्रकार कुल 68 बार दीक्षाएं दी गई।		

दीक्षा और महादान

✽ प. विनोद कुमार रजवाँस ✽

शताधिक दीक्षा प्रदाता, युगनिर्माता, कालजयी प्रतिमा के धनी आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के करकमलों से जैनेश्वरी दीक्षा प्राप्त करने वाले निकट भव्यात्माओं ने 28/11/2018 बुधवार को पंचकल्याणक महोत्सव के मध्य तपकल्याणक के दिन तीर्थंकर की दीक्षा के पश्चात दीक्षा ग्रहण कर अपना मोक्षमार्ग प्रशस्त किया। भगवान आदिनाथ स्वामी ने भावों की विशुद्धि के लिये परिग्रह का त्याग किया।

मध्येयवनिकं स्थित्वा सुरेन्द्रे परिचारिणि।

सर्वत्र समतां सम्यग्भावयन् शुभभावनः ॥195॥

व्युत्पृष्टान्तर्बहिःसंगो नैस्संग्ये कृतसंगरः।

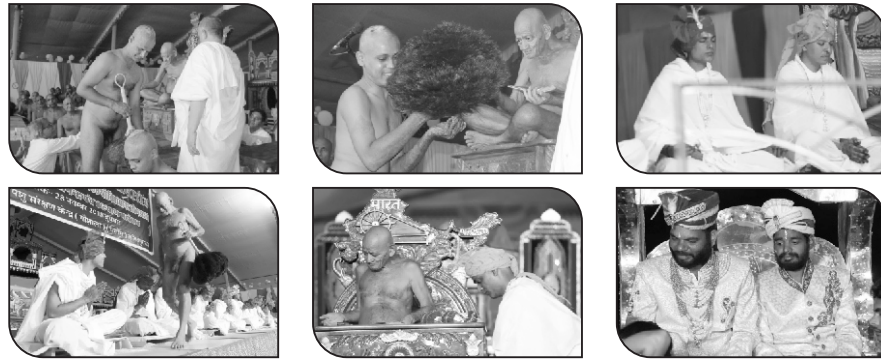
वस्त्राभरणमाल्यनि व्यसृतजन् मोहहानये ॥196॥

सभी वस्तुओं में समताभाव का विचार और जिन्होंने अन्तरंग और बहिरंग परिग्रह छोड़ दिया है और परिग्रह रहित रहने की प्रतिज्ञा की है, जो संसार की सब वस्तुओं में समता भाव का विचार कर रहे हैं, और जो शुभ भावनाओं से सहित है ऐसे उन भगवान् वृषभदेव नवनिका के भीतर मोह को नष्ट करने के लिये वस्त्र, आभूषण तथा माला वगैरह का त्याग किया।

इस प्रकार से भावों की विशुद्धि समता परिणाम के लिये अन्तरंग एवं परिरंग परिग्रह का त्याग करना आवश्यक होता है।

इसी परम्परा का अनुसरण करते हुए ब्र. आकाश (मीनू) भैया सागर ने दीक्षा ग्रहण की। जन्म 13/09/1987 को पिता सिंघई प्रकाशचन्द्र एवं माता श्रीमति आशा सागर के गृह में हुआ।

आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत 05/05/1907 को ग्रहण किया। एम. कॉम तक शिक्षा प्राप्त की। आपने दीक्षा ग्रहण करते समय आपने जहाँ अंतरंग परिग्रह का सम्पूर्ण त्याग किया वही बहिरंग परिग्रह को भी छोड़ा। इसमें अपने अपने वस्त्र आभूषणों के साथ अचल सम्पत्ति का त्याग किया ही साथ ही चल सम्पत्ति के रूप में आपने स्वामित्व के लगभग 25 लाख रुपये तथा चांदी आदि के बर्तन प्रतिममत्व का त्याग कर उक्त राशि का दान देकर समता भाव को ग्रहण कर महाव्रत धारण कर जीवन को धन्य बनाया है।



आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के संसंध सान्निध्य में दिनांक 28/11/2018 को पंचकल्याण के तपकल्याणक के अवसर पर मुनि श्री समयसागर महाराज के पास रहकर पढ़ने तथा साधना करने वाले ब्र. श्रेयांश भैया बुढ़ार, ब्र. मोनू भैया पनागर, ब्र. दीपेन्द्र भैया केरबना, ब्र. नितेन्द्र भैया नरसिंहपुर, ब्र. पिकेश भैया हाटपिपल्या, ब्र. आकाश भैया सागर, ब्र. सतीश भैया खुरई, ब्र.

दीपक भैया सुन्दरपुर, ब्र. मनीष भैया इन्दौर, ब्र. अर्पित भैया राघौगढ़ को उन्ही के ही सामने मुनि दीक्षा दी गई। 27 नवम्बर को सभी ब्रह्मचारी भाईयों को मेंहदी आदि लगाकर बिनोरी क्षेत्रपाल मंदिर से होती हुई गौशाला परिसर में पहुंची जहां उनके गोदी भराई का कार्यक्रम हुआ। तथा रात्रि में सभी भाईयों का केशलॉच मुनि संघ के सान्निध्य में हुआ। प्रातः काल केशलॉच के पश्चात सभी भाईयों को हल्दी आदि लगाई गयी। उसके पश्चात गणधर वलय विधान पंचकल्याणक स्थल पर किया गया। विधान के पश्चात



सभी भाईयों को आचार्य श्री के पाद प्रक्षालन का अवसर भी मिला। उसके पश्चात सभी भाईयों ने आचार्य संघ का पङ्गाहन किया। दोपहर 1 बजे आचार्य संघ के साथ सभी भाई पांडाल स्थल पर पहुंचे। वहां पर भगवान के तपकल्याणक का कार्यक्रम चल रहा था। आचार्य श्री ने भगवान श्री आदिनाथ स्वामी के दीक्षा संस्कार किये तत्पश्चात् नवीन दीक्षार्थियों को बैठने के लिये सौभाग्यवती महिलाओं से चौक पुराया गया उस पर दीक्षार्थियों को बिठाया गया। आचार्य श्री ने ठीक 4.15 मिनट पर संस्कार प्रारंभ किये। जिसमें गंधोदक पंचमुष्टि केशलॉच शिर प्रक्षालन हाथ (अंजली) श्रीकार लेखन मांगलिक द्रव्य तथा अंकलेखन 28 मूलगुण संस्कार मां के अंजली में मांगलिक द्रव्य समर्पण के बाद सभी महाराजों का नामकरण संस्कार के साथ पिच्छी कमण्डल एवं शास्त्र भेंट किया गया। इनके नाम क्रमशः मुनि श्री निर्गन्ध सागर, मुनि श्री निभ्रान्तसागर, मुनि श्री निरालससागर, मुनि श्री निराश्रव सागर, मुनि श्री निराकारसागर, मुनि श्री निश्चिंतसागर, मुनि श्री निर्मानसागर, मुनि श्री निशंकसागर, मुनि श्री निरंजनसागर, मुनि श्री निर्लेपसागर रखा गया। तत्पश्चात् आचार्य श्री ने मुनि श्री समयसागर महाराज को बुलाकर उनसे वार्तालाप कर निर्यापक श्रवण मुनि श्री समयसागर जी की घोषणा की। तथा आचार्य श्री ने कहां पिछले 42 सालों से पृछने के पश्चात आज हव कहा है। ऐसे निर्यापक श्रवण और भी बनाये जा सकते है। ऐसे विचार आचार्य श्री ने अपने उद्बोधन में रखे।



डाक टिकटों पर जैन इतिहास एवं संस्कृति



सुरेश जैन

जैन व्यक्तित्व दानवीर जैन राजा भामा शाह



भामा शाह का नाम भारत के इतिहास में सबसे अधिक सम्मान के साथ लिया जाता है। उन्होंने बलिदान तथा देश भक्ति की सबसे ऊँची मिसाल कायम की थी। भारत के इतिहास में राणा प्रताप की वीरता तथा भामाशाह की दानशीलता प्रसिद्ध है। एक था रण-बाकुरा, दूसरा त्याग वीर, मेवाड़ की रक्षा के लिये राणा तलवार था और भामा ढाल था। दोनों के जीवन का व्रत था- राष्ट्रीय शक्ति का संवर्धन। महाराणा उदय सिंह के स्वर्गवास हो जाने पर महाराणा प्रताप को दो चीजे मिली- मेवाड़ का विशाल राज्य तथा महामंत्री के रूप में भामा शाह। राणा प्रताप से आयु में भामा शाह बहुत बड़े थे अतः राणा प्रताप भामा का बहुत आदर करते थे। भामा का व्यक्तित्व अद्भुत था। बड़ी आयु में भी उनकी स्फूर्ति, उत्साह और कार्य करने की शक्ति तरुणों को आश्चर्य में डालती थी। भामा में बिजली की चमक थी और सागर की गर्जना। मुगल सम्राट अकबर की विशाल सेना के साथ राणा प्रताप की सेना का हल्दी घाटी में भयंकर युद्ध हुआ था, उस में वीर भामाशाह ने मुख्य रूप से भाग लिया था। राणा ने भामा से कहा था भामा तुम केवल कलम के ही धनी नहीं हो तलवार के भी धनी हों।

हल्दी घाटी का युद्ध बहुत लम्बा चला। अपने सैनिकों को भोजन दे सके इतना धन भी राणा के पास नहीं बचा था। भूखे सैनिक कब तक और किस शक्ति से लड़ते-राणा की सेना बिखरने लगी। राणा हताश हो चुके थे। अकबर की विशाल सेना से राणा अकेले कहाँ तक और कब तक लड़ते। वह अपनी जन्म भूमि को छोड़कर सिन्ध की ओर जाने का निश्चय कर चुके थे। अपने प्रयाण से पूर्व वह अपनी मातृ-भूमि से करुण स्वर में कह रहे थे। मातृ-भूमि अन्तिम नमस्कार है। क्षमा करना जननी तुम्हें स्वतन्त्रता नहीं दिला सकती अब मैं जाता हूँ। यह तुम्हारा अन्तिम दर्शन है। बहुत दिनों से भामा शाह राणा प्रताप की खोज कर रहे थे। न जाने कितने पहाड़ों को छान डाला था, फिर भी राणा नहीं मिले। राणा को न पाकर वह बहुत हैरान और परेशान थे। सहसा भामा शाह के कानों में यह शब्द पड़े अब मैं जाता हूँ और यह तुम्हारा अन्तिम दर्शन है पहाड़ के सीने को चीरता हुआ भामा का स्वर फूट पड़ा और मैं भी तुम्हारे साथ चल रहा हूँ, मेरे आका, मुड़ कर राणा ने भामा को देखा ओर उठ कर गले मिले। भामा के नेत्रों से आँसू बह निकले, वह बोले अभी तो मेवाड़ की स्वतन्त्रता और चित्तौड़ की मुक्ति करवाना शेष है। राणा ने निराश स्वर में कहा-यह स्वप्न रह गया है। मेरे पास तो इतना धन भी नहीं कि एक सैनिक को पेट भर सकूँ। भामा ने कहा आप चिंता न करें हिम्मत न हारे, मेरे पूर्वजों ने जो धन-राशि संचित की है वह सब आपको अर्पण करता हूँ, वह धन-राशि इतनी है कि बारह वर्षों तक पच्चीस हजार सैनिकों का खर्च चल सकता है। आप सेना एकत्रित कीजिए। मेरे पूर्वजों ने यह सब इसी मातृ-भूमि से पाया है और आज उसी की रक्षा के लिये अर्पण कर रहा हूँ। भामा की वीर वाणी सुनकर राणा का पस्त हुआ साहस फिर से जागृत हो गया। राणा की रण-वीरता ने और भामा की दान-वीरता ने फिर से मेवाड़ को झकझोर कर खड़ा कर दिया। राजस्थानी वीरों की हुंकार से हल्दी घाटी मुखरित हो उठी। मेवाड़ के जन-जन के प्राण-प्राण से स्वर फूट पड़ा। धन्य है, भामा शाह की दानवीरता धन्य

है, राणा प्रताप की युद्ध वीरता।

भामा शाह पारिवारिक परिचय एवं देश प्रेम

मेवाड़ में एक ग्राम है खमणोर, जिसमें श्री भारमल जी कावड़िया रहते थे। वह जाति के ओसवाल जैन थे। इस परिवार की गणना उच्च कोटि के धन्ड्या परिवारों में होती थी। इनके परिवार को प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान् पर अटूट श्रद्धा व आस्था थी। श्री भारमल जी ने परिवार का व्यापार संभालने की बजाय अपने देश की रक्षा करने को प्रमुख स्थान दिया। उनकी बहादुरी की ख्याति सुनकर राणा साँगा ने उनको रणथमभोर राज्य का किलेदार बनाया। किलेदार कौन होता है ? उस जमाने में जो भी किसी राजा का किला जीत लेता था वह पूरे राज्य का स्वामी बन जाता था। इसलिये किले की रक्षा करना सबसे कठिन काम होता था। यह काम किलेदार तथा उसके नीचे फौज के संपूर्ण होता था। ओसवालों ने सदा राणाओं के साथ कंधे से कंधा मिलाकर अपने देश की रक्षा की है, इसलिये राणा वंश में ओसवाल जाति का सदा सत्कार एवं सम्मान रहा है।

भामाशाह का जन्म ई. सन् 1547 को हुआ था, इनको राजकुमार की तरह युद्धकला की शिक्षा मिली थी। पिता के जीवन काल में भी भामा शाह युद्ध में अपना लोहा मनवा चुके थे। पिता को अपने पुत्र की धीरता, वीरता तथा योग्यता पर पूर्ण विश्वास था। कुछ समय बाद महाराणा उदय सिंह ने भारमल जी को अपना प्रधानमंत्री नियुक्त कर दिया। भारमल जी अपने अन्तिम समय तक मेवाड़ के प्रधानमंत्री रहे। इनके स्वर्गवास होने के बाद वृद्ध राणा की पारखी नजरों ने भामा में छिपे हुए तेज को पहचान लिया था, अतः भारमल जी के स्थान पर तरुण भामा को राणा उदय सिंह ने अपना प्रधानमंत्री तथा सेनापति नियुक्त कर दिया तथा उसके हाथों में राज्य की बागडोर सौंपकर सन्तुष्ट हो गये। उदय सिंह की मृत्यु के बाद राणा प्रताप ने भामाशाह को अपने राज्य का प्रधानमंत्री तथा सेनापति नियुक्त किया। इन्होंने अपने छोटे भाई ताराचंद के साथ मिलकर मेवाड़ के लिये कई युद्ध लड़े। भामाशाह की मृत्यु ई. सन् 1600 में हो गई। इनकी यादगार उदयपुर में बनी हुई है। भामा शाह की कई पुरखों ने उदयपुर के महाराणा की प्रधानमंत्री के तौर पर सेवा की है, आज भी उनके वंशज उदयपुर में रहते हैं।

जब भामा शाह ने राणा प्रताप को युद्ध के लिए धन दिया उस समय इनके परिवार ने माऊंट आबू में विश्व प्रसिद्ध दिलवाड़ा जैन मन्दिरों के बिलकुल समीप जैन मन्दिर बनवाना शुरू कर दिया था, नींव भरी जा चुकी थी, दीवार बननी शुरू हो चुकी थी, उन्होंने मंदिर का कार्य रोक दिया तथा सारे का सारा धन जो कि उस समय 100 करोड़ रूपया था, वह राणा प्रताप के चरणों में रख दिया ताकि धन देश की आजादी के काम आये। आज भी भामा शाह तथा इनके परिवार के मन्दिर निर्माण कार्य की भरी हुई नींव तथा दिवारे देखी जा सकती है।

आज के समय में भी यदि धनवान व्यक्ति समाज को बड़ा दान देता है तो उस की संज्ञा भामा शाह से की जाती है।

भामा शाह पर डाक टिकट

31 दिसम्बर ई. सन् 2000 को देश के महान व्यक्तियों की श्रृंखला में दानवीर जैन राजा भामा शाह के चित्र वाली एक टिकट भारत सरकार के डाक विभाग ने जारी की थी। इस बहुरंगी डाक टिकट का मूल्य 300 पैसे है यह चार लाख संख्या में छापी गई थी। टिकट के बीचो बीच एक गोल दायरे में भामा शाह का चित्र बना हुआ है। इसका विवरण सटेनले गिब्बस केटालाग लंदन में नम्बर 1976 पर दिया गया है।

हमारे गौरव

राष्ट्रकूट सम्राट कृष्ण तृतीय

राष्ट्रकूट कृष्ण तृतीय अकालवर्ष (939-967)ई. इन्द्र तृतीय के उपरांत क्रमशः तीन राजे हुये और तदनन्तर अमोघवर्ष तृतीय वह्मिग का पुत्र एवं उत्तराधिकारी यह कृष्ण तृतीय राष्ट्रकूटों के सिंहासन पर बैठा वह इस वंश के अंतिम नरेशों में सर्वमान्य था। गंग नरेशों के साथ कई विवाह सम्बन्ध स्थापित करके उन्हें अपना परम हित और सहायक बना लिया था। गंग नरेश भुतूग द्वितीय मरूलदेव मारसिंह आदि ने आदि ने तथा उनके सुप्रसिद्ध सेनापति वीर चामुण्डराय ने कृष्ण के लिये अनेक युद्ध सफलतापूर्वक लड़े और उसकी विजय पताका चहुँ और फहरायी। कृष्ण के करहाड़ ताम्रपत्र (959ई.) उस समय लिखे गये थे जब सम्राट अपने मेलपाटि (मैलाड़ि) के सैन्य शिविर में ठहरा हुआ जीते हुये प्रदेश धन, रत्न, आदि अपने सामन्तों और अनुगतों में उदारता पूर्वक बाँट रहा था। वह स्वयं भी एक वीर योद्धा दक्ष सेनानी, मित्रों के प्रति उदार, विद्वानों का आदर करने वाला धर्मात्मा एवं प्रतापी नरेश था। उसने राष्ट्रकूट साम्राज्य और वंश की प्रतिष्ठा को गिरते-गिरते बचाया। अपने अधिकांश पूर्वजों की भाँति वह जैनधर्म का पोषक था। जैनाचार्य बादिधंगल भट्ट का बड़ा सम्मान करता था। यह विविध विषय विशेषज्ञ, अदभुत प्रतिभा सम्पन्न आचार्य गंग मारसिंह के गुरु थे। उनका राजनीति विषयक ज्ञान ऐसा अगाध और सटीक था कि वल्लभराज (कृष्ण तृतीय) की राजधानी और राजसभा के समस्त विद्वानों ने उनकी महत्ता स्वीकार करके सम्मानित किया था। स्वयं सम्राट कृष्णराज उनसे अत्यधिक प्रभावित था और उन्हीं की मन्त्रणा एवं परामर्शों के फलस्वरूप वह अपने युद्धों में तथा विभिन्न प्रदेशों को विजय करने में सफल हुआ था। सम्राट के समस्त मण्डलीक और सामन्त भी इसी कारण इन आचार्य का अत्यधिक आदर करते थे। कृष्ण तृतीय ने शान्तिपुराण और जिनाक्षर माले के रचयिता कन्नड़ जैन महाकवि पोन्न (पौन्नमय्य) को उभय चक्रवर्ती की उपाधि देकर सम्मानित किया था एवं प्रश्रय दिया था। जैनाचार्य इन्द्रनन्दि ने ज्वालामालिनी कल्प मान्यखेट में 939 ई में रचा था। आचार्य सोमदेव ने अपने नीतिवाक्यामृत यशस्तिलक चम्पू (959 ई.) आदि प्रसिद्ध ग्रन्थों की रचना भी इसी सम्राट के एक चालुक्य सामन्त के प्रश्रय में गंगधार नगर में की थी। सम्राट के प्रधानमंत्री भरत और उनके पुत्र नन्न अपभ्रंश भाषा के जैन महाकवि पुष्पदन्त के प्रश्रयदाता थे। पुष्पदन्त कृष्णराज का उल्लेख तुडिगु महानुभाव नाम से किया है और नाग कुमार चरित में मान्यखेट को श्री कृष्णराज के खड्ग के कारण दुर्गम कहा है।



हास्य तरंग

1. जज (सेठी जी से) - पिछली बार तुमको दो माह की सजा मिली थी इसी अदालत से - जी हाँ इस बार तुमको छोड़ रहा हूँ। गवाहों की कमजोरी से बच गये। इतना ज्यादा ब्याज लेना जुर्म है समझें सेठी जी (जज से) - मेरी इतनी से बिनती है कि मुझे एक सप्ताह के लिये और जेल में रहने दीजिये क्यों ? कैदियों पर मेरा पैसा उधार है, वसूल करना है।
2. पुलिस स्टेशन रूम पर फोन आया - इंस्पेक्टर साहब किसी ने मेरी कार के सभी पुर्जे चुरा लिये है, ब्रैक, क्लच, एक्सीलेटर, स्टेरिंग सभी गायब है। इंस्पेक्टर ने कहा - मैं तत्काल आकर जाँच करता हूँ। इंस्पेक्टर जाने के लिये तैयार हो रहा था कि पुनः फोन की घंटी बजी वही व्यक्ति बोला सर क्षमा करें, कार में सब ठीक है गलती मेरी हैं मैं जल्दी में पिछली सीट पर बैठ गया था।
3. डॉक्टर - अपने बचपन के दोस्त मरीज से कहते हैं मैं बचपन में डाकू बनना चाहता था, पता है। मरीज - ईलाज का बिल देखते हुए - बहुत लकी हो डॉक्टर साहब, इस दुनियाँ में तुम जैसे भाग्यशाली हो सपने सच होते हैं।
4. क्लास टीचर छात्रों को द्वन्द का अर्थ समझा रही थी, द्वन्द ऐसी जोड़ी को कहते हैं जिसमें सदा विरोध रहता हो जैसे सुख-दुख, गर्मी-सर्दी, रात-दिन, बलेक-व्हाइट आदि समझ गये हो, भावित एक उदाहरण दो - टीचर जी मम्मी - पापा जिनेन्द्र कुमार जैन (गौरीनगर इन्दौर)

गणिनी आर्यिका
पंचबालयति मंदिर इन्दौर में

देश की सर्वोच्च साध्वी गणिनी आर्यिका ज्ञानमति माताजी संसंध 7 दिसम्बर को मल्हारगंज इन्दौर से विहार करते हुये श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर दर्शनार्थ पधारी, विजयनगर चौराहे पर संत शिरोमणि

आचार्य श्री विद्यासागर जी की शिष्या परमपूज्य आर्यिका श्वेतमति माताजी, विदेहमति माताजी, आवाहमति माताजी के साथ पूर्वोत्तर क्षेत्र से शताधिक श्रावक-श्राविकाओं के साथ ब्र. जिनेश मलैया, पं. सुरेश जैन मारौरा, वीरेन्द्र कुमार जैन, धमेन्द्र जी आदि ने भव्य अगवानी की मंदिर जी के दर्शनोपरान्त धर्मसभा में पूज्य रवीन्द्र कीर्ति जी संघ पति श्री अनिल जी दिल्ली प्रतिष्ठाचार्य श्री विजयकुमार जी, डॉ. जीवन प्रकाश जी का पंचबालयति मंदिर ट्रस्ट की ओर से तिलक, माला, श्रीफल, आचार्य श्री विद्यासागर जी का चित्राकन भेंटकर स्वागत सम्मान किया गया। पूज्य आर्यिका ज्ञानमति माताजी, पूज्य चंदनामति माताजी, पूज्य स्वामी जी ने अपने वक्तव्य में आचार्य ज्ञानसागर जी, आचार्य श्री विद्यासागर जी के संस्मरणों के साथ कहा हम आचार्य शान्तिसागर जी की परम्परा की बगिया के पुष्प हैं।

और कहा हमारा विहार मांगीतुंगी से बुंदेलखंड होकर अयोध्या की ओर चल रहा है। अयोध्या में 5 मार्च से 10 मार्च तक भगवान आदिनाथ महामस्तकाभिषेक चलेगा आप सभी साधर्मी बन्धु अयोध्या आमंत्रित हैं।



बाल कहानी

भगवान ने बचाया

सौरभ पण्डा साड़ोरा का एक समाज सेवी युवक था वह रेल्वे की फाटक पर अपनी मोटर साइकिल लिये खड़ा था सामने से मालगाड़ी आ रही थी मालगाड़ी आने के पूर्व बुजुर्ग आदमी रेल पटरी जल्दी-जल्दी पार कर रहा था किन्तु बीच रेल्वे की पटरी पर आते ही वह गिर गया उसके गिरते ही रेल्वे फाटक के दोनों तरफ खड़े लोग एवं सौरभ पण्डा उसे उठाने की लिये दौड़े किन्तु मालगाड़ी अपनी स्पीड से उसके बिल्कुल पास आ गयी उठाना किसी भी तरह से संभव नहीं हो पाया लोग उसके मरने की प्रतीक्षा करते रहे थे मालगाड़ी के पायलेट ने स्टेशन मास्टर साड़ोरा को अपनी बाकी टाकी फोन से सूचना दी कि गेट नं. 48 के बीच एक व्यक्ति मालगाड़ी के नीचे आ गया हैं स्टेशन मास्टर एन के जैन तुरंत रेल्वे फाटक पर पहुँचे उन्होंने देखा कि मालगाड़ी पूरी गुजर चुकी लोग एक बेहोश व्यक्ति को चारों तरफ से घेरे हुए हैं पुलिस अधिकारी भी सामने खड़े हुए हैं सब आश्चर्य कर रहे हैं कि मालगाड़ी के चौसठ डिब्बे ऊपर से गुजर जाने के बाद भी इस भाग्यशाली बुजुर्ग को खरोंच तक नहीं आयी फिर सब लोगों ने अचेत अवस्था में उठाकर एम्बुलेंस में लिटाया और अस्पताल में भर्ती कर दिया 15 मिनट बाद जब उसे चेतनता आयी तो सबने उससे पूछा कि आपका नाम क्या है तो उन्होंने कहाँ मेरा नाम चिरोंजी लाल कुशवाह हैं। मैं महिदपुर का रहने वाला हूँ। मुझे बचाया है भगवान ने।



संस्कारों से मानव की पहचान हुआ करती है।
माँ बच्चों के हेतु प्रभु से यही दुआ करती है ॥
प्रेम, दया, करुणा ममता का भाव भरा हो जन-जन में,
त्याग-समर्पण उपकारो का समावेश हो जीवन में।
जीने को तो जीते है सब जीना उसका जीना है,
उसके घर की शाखाओं की छाँह हो मेरे आँगन में ॥
इसानों सी वृक्षों में भी जान हुआ करती है।
संस्कारों से मानव की पहचान हुआ करती है ॥
पाकर जो ना खुशी मिली वो मिली है खोकर पाने में,
दोनों हाथ लुटाकर वृद्धि और भी हुई खजाने में।
मुट्ठी भर दानों से पंछी, कितने खुश हो जाते हैं,
मुझे दुआ दे गए चहककर कितने ही अनजाने में।
दर्द किसी का हो और अपनी आँख बहा करती है।
संस्कारों से मानव की पहचान हुआ करती है ॥

कविता

संस्कार

* ऋषभ जैन (महिदपुर) *



संस्कार गीत

बच्चों को बतजायें हम



बच्चों से जब प्यार करें हम
सपनों को साकार करें हम

1.
संस्कार की नींव रखे हम
पीढ़ी का निर्माण करें हम
2.
दया धर्म का पाठ पढ़ायें
मानवता की राह चलायें
3.
देश भक्ति के गीत सुनायें
नैतिकता की कथा सुनायें
4.
बच्चों को कुछ समय निकाले
अपना भी कुछ फर्ज निभायें
5.
खेल खेल में धर्म बतायें
जीने की नित कला सिखायें
बच्चों से बन जायें हम
कभी न आये दिल में गम

बाल कविता

पुस्तक



पुस्तक से जो प्रेम बढ़ाते
वे ज्ञानी जन की कहलाते
पुस्तक सरस्वती मात सही है
पूज्यनीय त्रिलोक मही है
जो पुस्तक को धारण करते
कभी नहीं अज्ञानी रहते
बोधि समाधि उनको मिलती
ज्ञान कली जीवन में खिलती
नहीं घमण्ड कुछ मन में आता
अन्तरज्ञान उन्हें ही सुहाता
तर्क शील विद्वान बनें वे
संसार दुखों का नाश करें वे
एक दिवस मुक्ति पा जाते
नहीं लौट कभी वापस आते
धर्म कर्म के वे गीत हैं गाते
जिनवाणी का मान बढ़ाते

समाचार

पंचकल्याणक सम्पन्न

ललितपुर- आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के संसंध सान्निध्य में दिनांक 23 नवम्बर से 30 नवम्बर 2018 तक श्री दिगम्बर जैन मंदिर गौशाला ललितपुर के पंचकल्याणक प्रतिष्ठाचार्य ब्र. विनय भैया बण्डा के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न हुये। जिसमें 58 ब्राह्मी सुन्दरी बनाई गई।

सागर- आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के शिष्य मुनि श्री योगसागर जी, मुनि श्री निर्णयसागर जी, मुनि श्री अभयसागर जी, मुनि विमलसागर जी आदि 19 मुनिराज तथा आर्यिका श्री अनंतमति माताजी, आर्यिका श्री भावनामति माताजी, आर्यिका श्री उपशांतमति माताजी, आर्यिका श्री अकंपमति माताजी आदि 49 माताजी के सान्निध्य में श्री दिगम्बर जैन मंदिर भाग्योदय तीर्थ सागर में पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव प्रतिष्ठाचार्य ब्र. विनय भैया बण्डा के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न हुये।

आगामी पंचकल्याणक

गढ़ाकोटा- 14 से 19 जनवरी 2019 तक आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के शिष्य मुनि श्री सुव्रतसागर जी महाराज के सान्निध्य में श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पटेरिया जी गढ़ाकोटा में पंचकल्याणक सम्पन्न होगा।

रानीबाग दिल्ली- ऐलाचार्य श्री अतिवीर सागर जी महाराज के संसंध सान्निध्य में दिनांक 14 से 19 जनवरी 2019 तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठाचार्य जयकुमार निशांत टीकमगढ़ के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न होगा।

चांदामेटा- आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज के संसंध सान्निध्य में दिनांक 2 फरवरी से 7 फरवरी तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठाचार्य जयकुमार निशांत टीकमगढ़ के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न होगा।

बूंदी राजस्थान- मुनि श्री विश्रांतसागर जी महाराज के संसंध सान्निध्य में 25 जनवरी से 31 जनवरी 2019 तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठाचार्य जयकुमार निशांत टीकमगढ़ के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न होगा।

कैलाशनगर दिल्ली- आचार्य श्री ज्ञानसागर महाराज जी के संसंध सान्निध्य में दिनांक 10 से 16 फरवरी 2019 तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठाचार्य जयकुमार निशांत टीकमगढ़ के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न होगा।

आहारजी- आचार्य विनिश्चय सागर महाराज जी के संसंध सान्निध्य में दिनांक 25 से 31 जनवरी 2019 तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठाचार्य सनतकुमार विनोद कुमार रजवास के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न होगा।

गौरझामर- आचार्य श्री विशुद्ध सागर महाराज जी के संसंध सान्निध्य में दिनांक 20 से 25 अप्रैल 2019 तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठाचार्य सनतकुमार विनोद कुमार रजवास के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न होगा।

जबलपुर- आचार्य श्री विशुद्ध सागर महाराज जी के संसंध सान्निध्य में दिनांक 8 से 13 मार्च तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न होगी।

पलवल हरियाणा- उपाध्याय श्री गुप्तिसागर जी महाराज के संसंध सान्निध्य में दिनांक 18 से 23 जनवरी को पंचकल्याणक प्रतिष्ठा प्रतिष्ठाचार्य हंसमुख जैन धरियावत के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न होगी।

त्रिलोक्यमंडल विधान सम्पन्न

नागपुर- आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की शिष्या आर्यिका श्री दृढमति माताजी संसंध सान्निध्य में दिनांक 22 से 30 दिसम्बर 2018 तक श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर तुलसीनगर नागपुर में ब्र. धीरज भैया राहतगढ़ के विधानाचार्यत्व में सम्पन्न हुआ।

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये माह : जनवरी 2019

- भक्ति-गंगा की लहर हृदय के भीतर से होना चाहिये और पहुँचना चाहिये वहाँ जहाँ निस्सीमता हो ?
- जब तक..... की धारा बाहर की ओर प्रवाहित रहेगी तब तक भगवान अलग रहेंगे और भक्त अलग ?
- स्तुति में तन्मयता आने पर अतिशय प्रगट हो जाते हैं ?
- पूजा-भक्ति का माहात्म्य अद्भुत है बंधुओ ! एक तिर्यच पर्याय में जन्म लेने वाला क्षुद्र..... भी मरकर स्वर्ग के अपार वैभव को क्षणभर में पा लेता है ?
- श्रद्धा,..... से परे है लेकिन उसकी विरोधिनी नहीं ?
- श्रद्धा से अंधकार में भी जो प्रतीत हो सकता है वह प्रकाश में सभव नहीं, प्रकाश में सुविधा मिल सकती है पर.....नहीं ?
- श्रद्धा, आस्था और अनुराग से अभिसिञ्चित मन में ही..... का जन्म होता है ?
- का सेतु एक ऐसा सेतु है जो श्रद्धेय और श्रद्धालु की दूरी को पाट देता है ?
- मांगने से नहीं किन्तु अधिकार.....से मिलते हैं ?
- विश्वास दिलाया जा सकता है पर रास्ता तो को तय करना होगा ?
- आस्था मस्तिष्क में नहीं हृदय में जमती है अतः हमारी आस्था का केन्द्र ज्ञान सम्पन्न मस्तिष्क नहीं बल्कि भावना सम्पन्न.....होता है ?
- निज आत्मा और परमात्मा पर आस्था-विश्वास की बात ही निराली है, उस समय की भावदशा के प्रभाव से अनादिकालीन मिथ्यादृष्टि.....कोड़ा-कोड़ी सागर स्थिति वाले मिथ्यात्व को अन्तः कोड़ा-कोड़ी कर देता है ?
- श्वास-श्वास में यदि भक्ति और विश्वास जम जाये तो से पार होने में देर नहीं ?
- स्वार्थ की बू बाते ही वर्षों का जमा हुआ भी खिसकने लगता है ?
- प्राचीन मंदिरों में दरवाजे बहुत छोटे बनाये जाते थे, उसका कारण है कि त्रिलोकीनाथ के दरबार में झुककर जाना जरूरी है, क्योंकि.....को गलाये बिना भगवद् - भक्ति का आनन्द आ ही नहीं सकता ?
- बुद्धि नहीं,.....ही वास्तव में भक्ति भावना तथा समर्पण का केन्द्र है ?
- श्रद्धा की अभिव्यक्ति.....के माध्यम से होती है ?
- जब गहराती है तब वही समर्पण बन जाती है ?
- किसी पवित्र उद्देश्य की पूर्ति के लिये अपने आपको श्रद्धेय के प्रति सौंप देना ही.....है ?
- सीता, अंजना और मैना सुन्दरी जैसी महान् सतियों का जीवन नारी जगत के लिये..... है। उनके जीवन में कितनी ही विषम परिस्थितियाँ आई किन्तु उन्होंने धीरज और साहस को नहीं छोड़ा। जंगलों में भटकते हुये भी धर्म तथा कर्मफल पर अटूट आस्था रखी ?
- अनेकान्त वस्तु का धर्म है और.....उसकी कथन पद्धति ?
- ‘ही’ एकान्त का प्रतीक है और ‘भी’ अनेकान्त का। में किसी की अपेक्षा नहीं है जबकि ‘भी’ पर के अस्तित्व को स्वीकार करता है ?
- ‘ही’ देखता है हीन दृष्टि से सबको और ‘भी’ देखता है दृष्टि से सबको ?
- ‘ही’ पश्चिमी सभ्यता है, ‘भी’ है संस्कृति। भाग्य विधाता रावण था ‘ही’ का उपासक और राम के भीतर ‘भी’ बैठा था, यही कारण है कि राम उपास्य हुऐ हैं और रहेंगे आगे भी ?

25. हमें सबकी बात बिना पूर्वाग्रह के सुनना चाहिए यही तो का मूल मन्त्र है ?
26. अनेकान्त की सहिष्णुता सभी धर्मों की का अन्त करती है तथा समझने का मार्ग खोलती है ?
27. अहिंसा धर्म की सुरक्षा के लिये का आश्रय अनिवार्य है ?
28. जैनदर्शन का हृदय है अनेकान्त और अनेकान्त का हृदय है सामने वाला तो कहता है उसे सहर्ष स्वीकार करो । विश्व में ऐसा कोई भी मत नहीं है जो भगवान महावीर की देशना से सर्वथा असम्बद्ध हो ?
29. नयों में मत उलझो, नय तो मार्ग हैं, मार्ग में की अनुभूति नहीं ?
30. मन की चंचलता से होने वाली प्रवृत्ति को दूर करने के लिये ही आगम में नयों की व्यवस्था है ?
31. निश्चय, व्यवहार के बिना नहीं होता और जो व्यवहार होता है वह निश्चय के लिये होता है ?
32. शब्दों में ऐसा जादू है कि टूटता हुआ जुड़ जाता है और जुड़ता हुआ टूट जाता है ?
33. निर्भीकता, गंभीरता व मधुरता से बोला गया शब्द ही होता है ?
34. शब्दों के माध्यम से मन जितना जितना अर्थ की ओर जाता है उसकी उतनी ही बढ़ती जाती है ?
35. कथन की शैली भले ही लच्छेदार शब्दों से युक्त हो किन्तु वह कथंचित से रहित है तो वह ज्ञान नहीं माना जा सकता है ?
36. केवल लम्बी-चौड़ी भीड़ के समझ प्रवचन देने से ही प्रभावना होने वाली नहीं है बल्कि सही प्रभावना तो अपने पर नियंत्रण करने से होती है ?
37. किसी को भी उपदेश सुनाना हो तो ध्यान रहे उसे सर्वप्रथम संवेग और निर्वेद का ही उपदेश देना चाहिये । ताकि इन दोनों के माध्यम से वह सरलता से समझकर अपना कर सके ?
38. जिस वक्ता की आजीविका श्रोताओं पर आधारित है वह वस्तु तत्त्व का प्रतिपादन सही-सही नहीं कर सकता ?
39. जिस वक्ता के मन में धन कंचन की आस और पाद-पूजन की प्यास विद्यमान है वह का उद्घाटक कभी नहीं हो सकता ?
40. वक्ता की प्रामाणिकता से वचनों में प्रमाणता आती है, इसलिए उपदेश देने वाले पद महान और ही होना चाहिए ?

संक्षेप में उत्तर दे :-

41. जीवकाण्ड ग्रंथ में कितने गाथायें हैं ?
42. कर्मकाण्ड ग्रंथ में कितने गाथायें हैं ?
43. त्रिलोकसार ग्रंथ में कितने गाथायें हैं ?
44. लब्धिसार ग्रंथ में कितने गाथायें हैं ?
45. श्रवणासार ग्रंथ में कितने गाथायें हैं ?
46. जीवकाण्ड ग्रंथ में कितने प्ररूपणाओं का वर्णन है ?
47. श्रवणबेलगोल में भगवान बाहुबली प्रतिमा की ऊँचाई कितनी है ?
48. आचार्य नेमीचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्ती किसके पारगामी है ?
49. ऐलक श्री सिद्धांत सागर जी महाराज का पिच्छी परिवर्तन कब हुआ ?
50. चिकित्सा के क्षेत्र में अमेरिका के कौन से वैज्ञानिक को नोबेल पुरस्कार मिला ?

(संस्कार सागर दिसम्बर 2018 से 10 प्रश्न, 40 प्रश्न दिव्यवाणी सागर बूंद समाय, भक्ति महिमा श्रद्धा समर्पण अनेकान्त स्याद्वाद्, प्रमाणनय वक्ताश्रोता से लिये गये हैं यह ग्रंथ आप मंगाना चाहते हैं तो सम्पर्क करे - फोन 0731- 4003506

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा: जनवरी 2019

प्रश्न पत्र भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

नाम स्थान

उम्र सदस्यता क्र.

पूर्ण पता

पिन कोड फोन नं. (एस.टी.डी.)

1	2	3	4	5
6	7	8	9	10
11	12	13	14	15
16	17	18	19	20
21	22	23	24	25
26	27	28	29	30
31	32	33	34	35
36	37	38	39	40
41	42	43	44	45
46	47	48	49	50

आपके नगर के संवाददाता का नाम हस्ताक्षर
नियम :- जब तक दूसरा प्रश्न-पत्र भरकर नहीं भेजते तब तक के लिए ।

वर्ग पहेली 237

1		2		4	5	6	7
		8		9		10	
11	12			13			
	14			15	16		17
	18			19	20	21	
22		23			24		
	25			26			
27			28	29			30
31			32				33

ऊपर से नीचे

1. श्रीकृष्ण की जन्मभूमि, जम्बूस्वामी की निवारणभूमि -3
2. वाक्य पद्धति, भाषा प्रयोग -5
3. पुरुष, मनुष्य -2
5. परिणाम, भावताप -2
6. पानी में तैरना वाला पक्षी -3
7. त्रयं श्री-2, -9. चमड़ा, त्वचा, चर्म -2
12. स्त्री पत्नी -3
16. वह देश जिसकी राजधानी टोकियो है -3
17. सम्पूर्ण, समस्त -3
19. प्रकाश, ज्योति -2
21. सूत कातने का उपकरण -3
22. रावण का पुत्र जो वावनगजा से मोक्ष गया हो -4
25. आकाश, अम्बर, आसमान -3
26. सुंशी प्रेमचन्द्र द्वारा रचित एक उपन्यास -3
29. लगाव, श्रृंगार -2
30. अंधकार -2

बायें से दायें

1. बड़ा जंगल, धनघोर जंगल -4
4. सुभाषचंद्र बोस की माँ का नाम -4
8. डिस्कशन, बहस, -3
10. देश, मुल्क -3
11. लंकेश, सीता को चुराने वाला -3
13. वोट, राय -2
14. निश्चित कार्य, कार्य नियति -3
15. आनंद -2
18. धागा, डोर -2
20. पातक, पाप, व्यसन -3
23. तेज प्रकाश, किरणों का समूह -2
24. प्रति कृति, प्रतिलिपि, प्रति -3
27. साँप सर्प -2
28. श्रेष्ठदान, उपहार, वर -4
31. स्तन -2
32. प्रपौत्री -3
33. मृत्यु का देवता -2

वर्ग पहेली 236 का हल

1	भ	ग	व	ती	आ	रा	ध	ना	
7	व्य	व	हा	र		8	ज	न	9
		10	र		11	पो	धा	12	पा
13	म			14	स	हा	नी		या
15	र	म	16	तू	ला		17	आ	18
				19	ल	ह	20	र	ग
21	क	ठ			22	ज	बा	23	ब
			25	स	ज	नी		26	द
27	का	म	नी		28	श	ब	री	त

.....सदस्यता क्र.

पता :

वर्ग पहेली प्रतियोगिताओं के विजेताओं को हरसाहमल सत्येन्द्रकुमार जैन (गोकुल बाजार, रेवाड़ी, हरियाणा) की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। प्रथम पुरस्कार : 101 रु. द्वितीय पुरस्कार 51 रु., तृतीया पुरस्कार 41 रु.) प्रतियोगिता भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

समस्या पूर्ति
प्रतियोगिता

ये चर्चा के कुछ क्षण ऐसे



नियम

1. आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
2. समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।
3. पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार 949 रु., द्वितीय 49 रु., तृतीय 24 रु.
4. पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की 95 तारीख है।

प्रागैतिहासिक अतिशय क्षेत्र नवागढ़ (नंदपुर), ललितपुर

विशाल चिकित्सा शिविर



मंगल आशीर्वाद

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

अवसर- पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का संयम स्वर्ण महोत्सव स्व. पं. गुलाबचन्द्र पुष्प प्रतिष्ठाचार्य की चतुर्थ समाधि दिवस (पुण्य तिथि)

5 जनवरी शनिवार - भगवान अरनाथ विधान एवं वात्सल्य भोज

6 जनवरी रविवार - रोग निदान एवं औषधि वितरण

शिविर में उपलब्ध चिकित्सक

- * हृदय रोग विशेषज्ञ * हड्डी रोग विशेषज्ञ * नेत्र रोग विशेषज्ञ
- * स्त्री रोग विशेषज्ञ * चिकित्सा विशेषज्ञ * आयुर्वेद विशेषज्ञ

विशेष- नेत्र परीक्षण के बाद मोतियाबिंद रोगियों के ऑपरेशन ललितपुर के महावीर नेत्र चिकित्सालय में निःशुल्क किये जायेंगे।

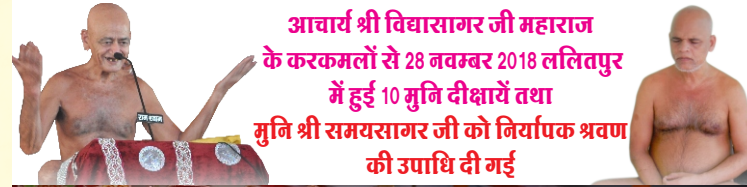
संयोजक : डॉ. नरेन्द्र जैन, हेम्यो

* सौजन्य *

पं. गुलाबचन्द्र पुष्प प्रतिष्ठाचार्य
स्मृति समिति टीकमगढ़ (म.प्र.)

जैन चश्माघर
सागर (म.प्र.)

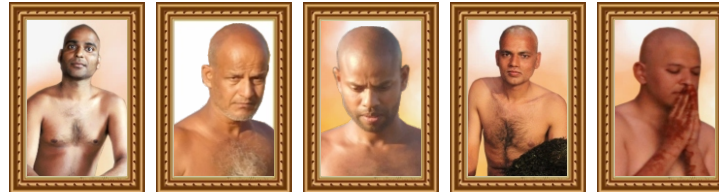
जैन मिलन
ललितपुर (उ.प्र.)



आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज
के करकमलों से 28 नवम्बर 2018 ललितपुर
में हुई 10 मुनि दीक्षाये तथा
मुनि श्री समयसागर जी को निर्यापक श्रवण
की उपाधि दी गई



मुनिश्री निर्ग्रन्थसागरजी मुनिश्री निभ्रान्तसागरजी मुनिश्री निरालससागरजी मुनिश्री निराश्रवसागरजी मुनिश्री निराकारसागरजी



मुनिश्री निश्चिंतसागरजी मुनिश्री निर्मानसागरजी मुनिश्री निशंकसागरजी मुनिश्री निरंजनसागरजी मुनिश्री निर्लेपसागरजी



सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक Click पर www.sanskarsagar.org

प्रिंटिंग दिनांक : 30/12/18, पोस्टिंग दिनांक : 03/12/18